छत्तीसगढ़ भारती

कक्षा – 7

सत्र 2022–23

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।

विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

DIKSHA

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉंच करे –> App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें –> उपयोगकर्ता Profile का चयन करें।

पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।

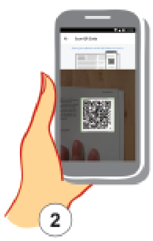

मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।

सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

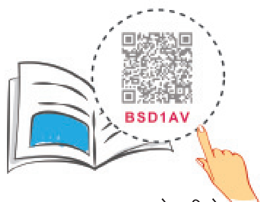

1 QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

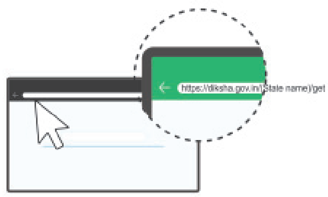

2 ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

3 सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

4 प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

निःशुल्क वितरण हेतु

प्रकाशन वर्ष 2022

एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

सहयोग– डॉ. हृदयकांत दीवान, विद्या भवन, उदयपुर
अजीम प्रेम जी फाउन्डेशन

e¦[; leUo;d श्री उत्पल कुमार चक्रबर्ती

fo"k; leUo;d डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

l¦iknd डॉ. सी.एल. मिश्र, डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

y¦[kd&eMy

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
डॉ. सी.एल. मिश्र, श्री बी.आर साहू, डॉ. एस.एस. त्रिपाठी, श्री राजेंद्र पांडेय, श्री गजानंद प्रसाद देवांगन, श्री दिनेश गौतम, श्रीमती उषा पवार, डॉ. (श्रीमती) रचना अजमेरा, श्री अजय गुप्ता, श्री विनय शरण सिंह डॉ. रचना दत्त, श्री कार्तिकेय शर्मा डॉ. विद्यावती चन्द्राकर	डॉ. जीवन यदु, डॉ. पीसी लाल यादव, श्री विनय शरण सिंह, डॉ. मांघी लाल यादव, श्री मंगत रवींद्र, श्री डुमन लाल ध्रुव, श्री पाठक परदेशी, श्री गणेश यदु, श्री कुबेर साहू, श्रीमती नम्रता सिंह, श्री निशिकांत त्रिपाठी श्रीमती मैना अनंत

vkoj.k i"B हेमंत अभयंकर

y¦vkmV fMtkbu रेखराज चौरागड़े

fp=kdu रेखराज चौरागड़े, राजेन्द्र सिंह ठाकुर, विद्याभवन, उदयपुर,
समीर श्रीवास्तव, गिरीधारी साहू

(इस पुस्तक में जिन रचनाकारों की रचनाएँ संकलित की गई हैं, उन सबके या उनके उत्तराधिकारियों के प्रति राज्य शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर अपना हार्दिक आभार प्रकट करता है।)

प्रकाशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

मुद्रक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रणालय

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

प्राक्कथन

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर को सत्र 2002–03 में छत्तीसगढ़ शासन की ओर से प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम तैयार करने तथा उन पर आधारित पाठ्यपुस्तकों की रचना करने का दायित्व सौंपा गया था। यह निर्णय भी लिया गया था कि नवनिर्मित पाठ्यपुस्तकों का दो वर्षों तक राज्य के विभिन्न अंचलों के चयनित विद्यालयों में क्षेत्र–परीक्षण किया जाएगा और फिर विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, पालकों और विषय विशेषज्ञों के सुझावों के आधार पर उनमें संशोधन उपरांत उन्हें राज्य के समस्त विद्यालयों हेतु उपलब्ध कराया जाएगा। तदनुसार सत्र 2007–08 से कक्षा 3 और 7 की पाठ्यपुस्तकों को राज्य के समस्त विद्यालयों में अध्ययन हेतु उपलब्ध कराया जा रहा है।

इस पुस्तक को अंतिम रूप देते समय संस्था के विशेषज्ञों ने क्षेत्र के विद्यालयों में भ्रमण कर विद्यार्थियों, शिक्षकों और भाषा के अन्य विशेषज्ञों से चर्चा की और विद्यार्थियों के ज्ञान के स्तर, शिक्षकों तथा समुदाय से प्राप्त सुझावों को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक संशोधन, परिवर्तन किया है।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 बच्चों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने पर जोर देता है। एन.सी.ई.आर.टी. ,नई दिल्ली द्वारा कक्षा 1–8 तक के बच्चों हेतु कक्षावार, विषयवार अधिगम प्रतिफलों का निर्माण कर सुझावात्मक शिक्षण प्रक्रियाओं का उल्लेख किया है। जिससे बच्चों के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकेगा। पुस्तकों में समयानुसार संशोधन तथा परिवर्धन एक निरंतर प्रक्रिया है। अतः सत्र 2018–19 हेतु पुस्तकों को समसामायिक तथा प्रासंगिक बनाया गया है। जिससे बच्चों को वांछित उपलब्धि प्राप्त करने के अधिक अवसर उपलब्ध होंगे। आशा है कि पुस्तकें शिक्षक साथियों तथा बच्चों को लक्ष्य तक पहुँचने में मददगार होंगी।

भाषा शिक्षण का मूल उद्देश्य है–सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, व्यावहारिक व्याकरण का ज्ञान, भाषा प्रयोग तथा सृजनात्मकता का विकास करना। इस पुस्तक में इन सभी उद्देश्यों की प्राप्ति का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक के द्वारा हमने विद्यार्थियों को साहित्य की विभिन्न विधाओं–निबंध, कहानी, कविता, पत्र, आत्मकथा, एकांकी आदि से परिचित कराया है। साहित्य की इन विधाओं का परिचय उनकी अभिरुचि को परिष्कृत करके उनको श्रेष्ठ साहित्य के अध्ययन की ओर प्रेरित करेगा, यह हमारा विश्वास है।

इस पुस्तक में जिन विचारों और मानवीय मूल्यों पर अधिक बल दिया गया है उनमें पारस्परिक सद्भाव, सामाजिक सहयोग, साहस, पर्यावरण चेतना को विशेष स्थान दिया गया है। पुस्तक को स्तरानुक्रम और रोचक बनाने में राज्य तथा राज्य के बाहर के अनेक शिक्षकों, विद्वानों, शिक्षाविदों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पाठों के चुनाव करने में हमें डॉ. हृदयकान्त दीवान विद्याभवन, उदयपुर, प्रो. रमाकान्त अग्निहोत्री दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली एवं पाठ आधारित अभ्यास के लिए अजीम प्रेम जी फाउन्डेशन की विशेष रूप से मार्गदर्शन मिला है। परिषद् उनके बहुमूल्य सहयोग के लिए आभारी है। लेखक मण्डल के सदस्यों ने जिस कर्मठता और लगन से इस पुस्तक को अंतिम रूप प्रदान किया है, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। पुस्तक में जिन कवियों/लेखकों की रचनाएँ संगृहीत की गई हैं, हम उनके या उनके उत्तराधिकारियों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षाविदों द्वारा भेजे गए सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

शिक्षकों से कुछ बातें

शिक्षक मित्रो, भारती 7 आपके हाथ में है। यों तो इसका प्रायोगिक संस्करण वर्ष–2005–06 में ही प्रकाशित हो गया था, किन्तु वह राज्य के कुछ सीमित विद्यालयों में ही प्रचलन में था। क्षेत्र–परीक्षण के दौरान विद्यार्थियों को आई कठिनाइयों को राज्य और राज्य के बाहर के शिक्षाविदों एवं राज्यस्तरीय पाठ्यपुस्तक समिति के सुझावों के उपरान्त उस संस्करण में आवश्यक संशोधन करके प्रस्तुत संस्करण का स्वरूप प्रदान किया गया है। फलस्वरूप वर्तमान संस्करण में आपको काफी परिवर्तन दिखाई पड़ेगा।

आप बाल मनोविज्ञान के ज्ञाता हैं। आप जानते हैं कि बच्चा सीखने की क्षमता लेकर स्कूल आता है। 11–12 वर्ष की आयु में तो यह क्षमता चरम सीमा पर रहती है। वे अधिक–से–अधिक जानना चाहते हैं। आवश्यकता यह नहीं कि उन्हें विषय से सम्बन्धित जानकारी दी जाए, आवश्यकता इस बात की है कि उनकी समझने की शक्ति का भरपूर विकास हो। बच्चे पढ़कर स्वयं समझ सकें और सुनी व पढ़ी बातों की सार्थक विवेचना कर सकें। बोलने के साथ–साथ लिखने की भी उनकी क्षमता का विकास हो। बच्चे औपचारिक एवं अनौपचारिक संदर्भ में बातचीत करना सीख जाएँ, संदर्भानुसार लिखित व मौखिक भाषा का प्रयोग कर सकें।

आपको अध्यापन करने का लंबा अनुभव है। प्रत्येक शिक्षक अपने –अपने ढंग से शिक्षण–पद्धति अपनाता है। शिक्षण की उसकी अपनी शैली होती है। फिर भी हम अपेक्षा करते हैं कि आप हमारे निम्नलिखित सुझावों पर विचार करेंगे। यदि आप इन सुझावों की उपयोगिता को समझकर इन्हें अपनाएँगे।

1. पाठ की तैयारी– किसी पाठ को पढ़ाना प्रारंभ करने से पूर्व यह अधिक उचित है कि पाठ की पृष्ठभूमि का निर्माण करें। इससे विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान का भी पता चल जाता है और उन्हें पाठ को समझने में सहायता भी मिल जाती है। पाठ को प्रारंभ करने के पूर्व विद्यार्थियों से पाठ से संबंधित ऐसे प्रश्न पूछिए जिनके उत्तरों से उनके पूर्व ज्ञान का भी पता चल जाए और उन्हें पाठ को समझने में भी सहायता मिले। उदाहरण के लिए 'रात का मेहमान' शीर्षक पाठ को पढ़ाने के पूर्व स्वाधीनता–संग्राम के संबंध में, क्रांतिकारी आन्दोलन के संबंध में, क्रांतिकारियों के संबंध में पूछें, चर्चा करें। 'सुभाषचंद्र बोस का पत्र' शीर्षक पाठ पढ़ाने के पूर्व नेताजी अैर लोकमान्य तिलक के संबंध में पूछें, चर्चा करें, बताएँ।

कविता के पाठ पढ़ाने के संबंध में यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि इसे पढ़ाने का ढंग कहानी, निबंध, चरित्र आदि गद्य–पाठों से बिल्कुल भिन्न है। कविता पढ़ाने का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को सौंदर्य–बोध और रसानुभूति कराना है। विद्यार्थी कविता पढ़कर आनंदित हों, साथ ही देश, प्रकृति, पशु–पक्षियों, उपस्थित मानकों आदि के प्रति उनके मन में सद्भावना और प्रेम पैदा हो।

2. नवीन शब्द परिचय– प्रायः सभी पाठों मे कुछ नवीन शब्दों का प्रयोग होता ही है। भाषा शिक्षण का यह एक उद्देश्य भी है कि प्रत्येक कक्षा मे विद्यार्थियों को कुछ नवीन शब्द अवश्य बताए जाएँ। बच्चों ने कोई नया शब्द सीख लिया है, यह हम तब कहेंगे जब वे उसका सही प्रयोग कर सकें। शब्द का अर्थ बताने के बाद अलग–अगल विद्याथियों से आप उसका प्रयोग कराएँ।

इस पुस्तक में शब्दार्थ पाठ के अंत में न देकर पुस्तक के अंत में शब्द–कोश के रूप में दिए गए हैं। इससे विद्यार्थियों को असली शब्द–कोश देखने की पद्धति ज्ञात होगी। पुस्तक के शब्द कोश की एक विशेषता यह है कि इसमें प्रत्येक वर्ण के बाद कुछ अलग शब्द दिए गए है, ये शब्द ऐसे हैं जिन्हें वे पूर्व की कक्षाओं में पढ़ चुके हैं, और उन्हें उन शब्दों का अर्थ मालूम है। इन शब्दों को क्रमानुसार लिखना

है, साथ ही उनके अर्थ भी लिखने हैं। इसके लिए रिक्त स्थान छोड़े गए है। जहाँ आवश्यकता हो, आप विद्यार्थियों का मागदर्शन करें।

3. वाचन–वाचन की शुद्धता पर भी आपको ध्यान देना आवश्यक होगा। सब को यदि 'शब', 'छात्र' को 'क्षात्र' और 'कर्म' को 'क्रम' पढ़ा जाए तो समझने वाला क्या समझेगा? अतः यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों का उच्चारण शुद्ध हो। हमारा सुझाव है कि विद्यार्थियों से वाचन कराने के पूर्व, आप अनुच्छेद का आदर्श वाचन करें, फिर विद्यार्थियों से अनुकरण वाचन कराएँ। इससे विद्यार्थियों को शब्दों के सही उच्चारण करने, बलाघात, विराम–चिह्नों के अनुसार पढ़ने में सहायता मिलेगी। कौन कितनी शीघ्रता से वाचन करता है, यह जाँच करना अच्छे वाचन का लक्षण नहीं माना जा सकता। वाचन कराते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखें कि वाचन करने का अवसर समान रूप से सभी विद्यार्थियों को मिले। जो विद्यार्थी वाचन में पिछड़े हैं, उन्हें अन्य विद्यार्थियों के समकक्ष ले जाने का प्रयास करें। विद्यार्थियों को पठन के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराएँ तथा पठन की पद्धतियों में आवश्यकतानुसार परिवर्तन भी करें।

4. विषयवस्तु– पाठ पढ़ाने के पश्चात् आपको यह देखना है कि विद्यार्थियों ने उस पाठ को कितना आत्मसात किया है। इसके लिए पुस्तक में विद्यार्थी द्वारा परस्पर पाठ पर आधारित मौखिक प्रश्न पूछने की विधि सुझाई गई है। इसके लिए विद्यार्थी एक–दूसरे समूह से प्रश्न पूछें, बाद में आप भी मौखिक प्रश्न पूछें। इससे जहाँ एक ओर विद्यार्थियों में मौखिक प्रश्न पूछने की दक्षता विकसित होगी, वहीं विषय– वस्तु को समझने में भी उन्हें सहायता मिलेगी।

5. भाषा– भाषा संबंधी दक्षताओं के विकास के लिए पाठ्यपुस्तक में पर्याप्त अभ्यास दिए गए हैं। आप ऐसे कुछ अन्य अभ्यास देकर उनकी दक्षताओं को विकसित कर सकते हैं।

6. योग्यता विस्तार के क्रियाकलाप– भाषा ज्ञान, एकाकी न रहे, इसके लिए आवश्यक है कि भाषायी योग्यता के साथ अन्य विषयों से उसका संबंध स्थापित किया जाए। इसके लिए योग्यता विस्तार शीर्षक में कुछ क्रियाकलाप सुझाए गए हैं। समय–समय पर कक्षा में वादविवाद प्रतियोगिता, अंत्याक्षरी प्रतियोगिता, चित्र निर्माण की प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, ऐतिहासिक या मनोरंजक स्थलों का भ्रमण कराके उनके संबंध मे लेख–लिखना आदि क्रियाकलापों से विद्यार्थियों के भाषायी कौशल में अभिवृद्धि हो सकती है।

7. इस पुस्तक में हमने शब्द–कोश के रूप में शब्दार्थ दिए हैं बीच–बीच में कुछ रिक्त स्थान छोड़े गए हैं जिनमें चौखाने में से शब्द छाँटकर उचित स्थान पर भरने हैं। विद्यार्थी इस गतिविधि को गंभीरता–पूर्वक करें– यह देखना आपका उत्तरदायित्व है। ऐसे शब्दों के अर्थ यदि उन्हें न आएँ तो आप बता सकते हैं।

आप सबको अध्यापन करने का लंबा अनुभव है। आपके इस लंबे अनुभव से विद्यार्थी निस्संदेह लाभान्वित होते हैं। हमारे बताए हुए उपर्युक्त सुझावों पर अमल करने से आपकी शिक्षण–कला में इससे कुछ लाभ होगा और यदि ऐसा हुआ तो हम अपने प्रयास को सार्थक समझेंगे।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

विषय–सूची

क्र.	पाठ	विधा	रचयिता	पृष्ठ
1.	कुछ और भी दूँ	कविता	श्री रामावतार त्यागी	1–3
2.	प्रेरणा के पुष्प	प्रेरक प्रसंग	लेखक –मंडल	4–7
3.	विद्रोही शक्तिसिंह	कहानी	श्री विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक'	8–13
4.	मौसी	कहानी	श्री भीष्म साहनी	14–19
5.	सरद रितु आ गे	कविता	पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र'	20–22
6.	सदाचार का तावीज़	व्यंग्य	श्री हरिशंकर परसाई	23–28
7.	रात का मेहमान	चरित्र	संकलित	29–34
8.	भिखारिन	कहानी	गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर	35–42
9.	त्याग मूर्ति ठाकुर प्यारेलाल	जीवनी	लेखक–मंडल	43–47
10.	सितारों से आगे	चरित्र	लेखक–मंडल	48–52
11.	कोई नहीं पराया	कविता	श्री गोपालदास 'नीरज'	53–56
12.	प्रेरणा स्रोत मेरी माँ	प्रेरक प्रसंग	लेखक–मंडल	57–61
13.	सुभाषचन्द्र बोस का पत्र	पत्र	नेताजी सुभाष चन्द्र बोस	62–66
14.	भारत बन जाही नंदनवन	कविता	श्री कोदूराम 'दलित'	67–69
15.	शतरंज में मात	एकांकी	श्रीयुत् श्रीप्रसाद	70–78
16.	काव्य–माधुरी	कविता	सूर,तुलसी,मीरा,रसखान, धरमदास	79–82
17.	वर्षा बहार	कविता	श्री मुकुटधर पाण्डेय	83–85
18.	मितानी	लोककथा	लेखक–मंडल	86–89
19.	शहीद बकरी	कहानी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	90–93
20.	लक्ष्य–बेध	निबंध	श्री रामनाथ 'सुमन'	94–98
21.	सुवागीत	निबंध	लेखक–मंडल	99–103
22.	सुब्रह्मण्य भारती	चरित्र	लेखक–मंडल	104–110
23.	राजीव गाँधी	संकलित	डॉ. विद्यावती चन्द्राकर	111–112
24.	सड़क चिह्न एवं सड़क संकेत			113
	शब्दकोश			114–122

नोट– क्रमांक – 5, 9, 14, 18, 21 छत्तीसगढ़ी पाठ है।

सीखने के प्रतिफल

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया

सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें –

- अपनी भाषा में बातचीत–चर्चा करने के अवसर हों।
- प्रयोग की जाने वाली भाषा की बारीकियों पर चर्चा के अवसर हों।
- समूह में कार्य करने और एक–दूसरे के कार्यो पर चर्चा करने, राय लेने–देने, प्रश्न करने की स्वतंत्रता हो।
- हिंदी के साथ–साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने–लिखने (ब्रेल/सांकेतिक रूप में भी) और उन पर बातचीत की आजादी हो।
- अपने परिवेश, समय और समाज से संबंधित रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों।
- अपनी भाषा गढ़ते हुए लिखने संबंधी गतिविधियाँ हों; जैसे–शब्द खेल, अनौपचारिक पत्र, तुकबंदियाँ, पहेलियाँ, संस्मरण आदि।
- सक्रिय और जागरूक बनाने वाली रचनाएँ, अखबार, पत्रिकाएँ, फिल्म और अन्य ऑडियो–वीडियो सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने और लिखकर अभिव्यक्त करने की गतिविधियाँ हों।
- कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों ; जैसे–अभिनय, रोल–प्ले, कविता, पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों और उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर हों।
- विद्यालय/विभाग/कक्षा की पत्रिका/भित्ति पत्रिका निकालने के लिए प्रोत्साहन हो।

सीखने की संप्राप्ति (Learning Outcomes)

बच्चे–

LH701. विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़कर समूह में चर्चा करते हैं।

LH702. किसी सामग्री को पढ़ते हुए लेखक द्वारा रचना के परिप्रेक्ष्य में कहे गए विचार को समझकर और अपने अनुभवों के साथ उसकी संगति, सहमति या असहमति के संदर्भ में अपने विचार अभिव्यक्त करते हैं।

LH703. किसी चित्र या दृश्य को देखने के अनुभव को अपने ढंग से मौखिक,/सांकेतिक भाषा में व्यक्त करते हैं।

LH704. पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते परिचर्चा करते हैं।

LH705. अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतो के बारे में चर्चा करते हैं और उनकी सराहना करते हैं।

LH706. विविध कलाओं जैसे–हस्तकला, वास्तुकला, खेती–बाड़ी, नृत्यकला और इनमें प्रयोग होने वाली भाषा के बारे में जिज्ञासा व्यक्त करते है, उन्हें समझने का प्रयास करते हैं।

LH707. विभिन्न संवेदनशील मुद्दों/विषयों; जैसे–जाति, धर्म, रंग, जेंडर, रीति–रिवाजों के बारे में मौखिक रूप में अपनी तार्किक समझ अभिव्यक्त करते हैं।

LH708. सरसरी तौर पर किसी पाठ्यवस्तु को पढ़कर उसकी उपयोगिता के बारे में बताते हैं।

LH709. किसी पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसमें किसी विशेष बिंदु को खोजते हैं।

LH710. पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं।

LH711. विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों के अर्थ समझते हुए उनकी सराहना करते हैं।

LH712. कहानी, कविता आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं;

	जैसे—वर्णनात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक, प्रकृति चित्रण आदि। LH713. किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने के दौरान समझने के लिए जरूरत पड़ने पर अपने किसी सहपाठी या शिक्षक की मदद लेकर उपयुक्त संदर्भ सामग्री; जैसे— शब्दकोश, मानचित्र, इंटरनेट या अन्य पुस्तकों की मदद लेते हैं। LH714. विविध कलाओं; जैसे— हस्तकला, वास्तुकला, खेती—बाड़ी, नृत्यकला आदि से जुड़ी सामग्री में प्रयुक्त भाषा के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हुए उसकी सराहना करते हैं। LH715. भाषा की बारीकियों/व्यवस्था तथा नए शब्दों का प्रयोग करते हैं; जैसे— किसी कविता में प्रयुक्त शब्द विशेष, पदबंध का प्रयोग—आप बढ़ते हैं तो बढ़ते ही चले जाते हैं या जल—रेल जैसे प्रयोग। LH716. विभिन्न अवसरों/संदर्भो में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं; जैसे — अपने गाँव की चौपाल की बातचीत या अपने मोहल्ले के लिए तरह तरह के कार्य करने वालों की बातचीत। LH717. हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र—पत्रिका, कहानी, जानकारीपरक सामग्री, इंटरनेट प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद—नापसंद के पक्ष में लिखित या ब्रेल भाषा में अपने तर्क रखते हैं। LH718. अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते है। LH719. विभिन्न विषयों और उद्देश्यों के लिए लिखते समय उपयुक्त शब्दों, वाक्य संरचनाओं, मुहावरों, लोकोक्तियों, विराम—चिह्नों एवं अन्य व्याकरणिक इकाइयों (जैसे— काल, क्रिया विशेषण, शब्द—युग्म आदि का प्रयोग करते हैं। LH720. विभिन्न संवेदनशील मुद्दों/विषयों; जैसे— जाति, धर्म, रंग, जेंडर, रीति—रिवाजों के बारे में लिखित रूप से तार्किक समझ अभिव्यक्त करते हैं। LH721. भित्ति पत्रिका/पत्रिका आदि के लिए तरह—तरह की सामग्री जुटाते हैं, लिखते हैं और उसका संपादन करते है।

विषय–सूची

अध्याय	पाठ का नाम	LOs
1.	कुछ और भी	LH701,LH702,LH709,LH711,LH713,LH716
2.	प्रेरणा के पुष्प	LH701,LH704,LH710,LH711,LH718,LH719
3.	विद्रोही शक्तिसिंह	LH701,LH702,LH709,LH711,LH712,LH720
4.	मौसी	LH701,LH702,LH704,LH710,LH712,LH721
5.	सरद रितु आगे	LH703,LH704,LH705,LH711,LH712,LH713
6.	सदाचार का तावीज़	LH701,LH708,LH710,LH720
7.	रात का मेहमान	LH701,LH702,LH703,LH707,LH709,LH710,LH712, LH714
8.	भिखारिन	LH701,LH702,LH704,LH707,LH710,LH712,LH716
9.	त्याग मूर्ति ठाकुर प्यारेलाल	LH701,LH704,LH714,LH718,LH720
10.	सितारों से आगे	LH702,LH714,LH718,LH722
11.	कोई नहीं पराया	LH701,LH702,LH703,LH707,LH713
12.	प्रेरणा स्रोत मेरी माँ	LH704,LH710,LH711,LH718,LH719,LH720
13.	सुभाषचन्द्र बोस का पत्र	LH702,LH711,LH714,LH716,LH718,LH719
14.	भारत बन जाही नंदनवन	LH705,LH711,LH713,LH716
15.	शतरंज में मात	LH701,LH703,LH704,LH709,LH710
16.	काव्य–माधुरी	LH702,LH713,LH716
17.	वर्षा बहार	LH702,LH703,LH704,LH713
18.	मितानी	LH701,LH705,LH706,LH707,LH78,LH710,LH713, LH719, LH721
19.	शहीद बकरी	LH701,LH707,LH710,LH712,LH713,LH720
20.	लक्ष्य–बेध	LH701,LH704,LH710,LH711,LH712,LH713
21.	सुवागीत	LH701,LH704,LH705,LH706,LH721
22.	सुब्रह्मण्य भारती	LH702,LH704,LH718,LH719
23.	राजीव गाँधी	LH702,LH704,LH717,LH718,LH719,LH721

उदाहराणार्थ रूब्रिक्स

Chapter	Sub Topic	Level 1	Level 2	Level 3	Level 4
After the lesson, students will be able to : पाठ के बाद, विद्यार्थी कर सकेंगे:–		**remember, recall, list, locate, label, recite** याद करना, स्मरण करना, सूचीबद्ध करना, खोजना लेबल करना, वर्णन करना	**understand, explain, illustrate, summaries, match** समझना, व्याख्या करना, संक्षेप में लिखना, उदाहरण देना, मेल करना	**apply, organize, use, solve, prove, draw** प्रयोग करना, व्यवस्थित करना, उपयोग करना, हल करना, साबित करना, चित्रण करना	**evaluate, hypothesize, analyse, compare, create, categories** मूल्यांकन करना, परिकल्पना करना, विश्लेषण करना, तुलना करना, सृजन करना, वर्गीकरण करना
पाठ–1 कुछ और भी दूँ	पठन, सस्वर वाचन, शब्दार्थ पर्यायवाची, अलंकार व्याख्या, प्रश्नोत्तर	• कविता कंठस्थ करेंगे। • शब्दार्थ • पर्यायवाची	• अलंकार • व्याख्या • देशप्रेम • चित्रण(कल्पना)	• देश प्रेम की भावना को लागू करना। • साधारण वाक्यों को कविता के पंक्तियों में व्यवस्थित कर पायेंगे।	• देशभक्ति की कविता का सृजन कर पायेंगे। • कुछ शब्दों को देने पर कविता सृजन करना।

पाठ 1

कुछ और भी दूँ

–श्री रामावतार त्यागी

4YHCTV

राष्ट्रीय भावों से ओत–प्रोत यह कविता बच्चों के कोमल मन में स्वदेश प्रेम की भावना को सहज ही जागृत करती है। कवि देश के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने को प्रस्तुत हैं, पर इतने से ही उनका मन संतुष्ट नहीं होता। कवि–मन में हर पल राष्ट्र के लिए कुछ और भी अर्पित करने की उत्कट चाहत है। स्वयं को अकिंचन मानते हुए भी कवि अपने हर भाव, चाहत और अपनी हर चेष्टा को राष्ट्र माता के चरणों में समर्पित करने को कृत संकल्पित हैं और देशवासियो को भी प्रेरित करते हैं।

मन समर्पित, तन समर्पित,
और यह जीवन समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

माँ, तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं अकिंचन,
किन्तु इतना कर रहा, फिर भी निवेदन
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब,
कर दया स्वीकार लेना वह समर्पण,
गान अर्पित, प्राण अर्पित,
रक्त का कण–कण समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

भाँज दो तलवार को लाओ न देरी,
बाँध दो कसकर, कमर पर ढाल मेरी,
भाल पर मल दो चरण की धूल थोड़ी,
शीश पर आशीष की छाया घनेरी,

स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,
आयु का क्षण–क्षण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

तोड़ता हूँ मोह का बंधन, क्षमा दो,
गाँव मेरे, द्वार–घर–आँगन क्षमा दो,
आज सीधे हाथ में तलवार दे दो,
और बायें हाथ में ध्वज को थमा दो।

ये सुमन लो, यह चमन लो,
नीड़ का तृण–तृण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

अभ्यास

पाठ से

1. कवि देश के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर क्यों करना चाहते हैं ?
2. माँ के किस ऋण की बात कवि कहते हैं ?
3. कुछ और देने की चाहत कवि को क्यों है ?
4. कवि स्वयं को अकिंचन क्यों कह रहे हैं ?
5. क्या स्वीकार करने का आग्रह कवि राष्ट्र माँ से कर रहे हैं ?
6. चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ– पंक्तियों के माध्यम से कवि किन भावों को व्यक्त करना चाहते हैं?

पाठ से आगे

1. स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित आयु का क्षण–क्षण समर्पित –
   इस कविता को पढ़ने के बाद आपको क्या महसूस होता है? यह कविता पाठ की अन्य कविताओं जैसी है या उससे अलग है। अपने शब्दों में लिखिए।
2. इस कविता में कवि राष्ट्र के प्रति अपना सब कुछ अर्पित करने की बात करता है। क्या आपको लगता है कि हमारे आस–पास के लोग इसके लिए तैयार हैं ? लिखिए
3. अपनी माँ और राष्ट्र माता में आपको क्या फर्क लगता है ? अगर हम सब अपनी माँ के सम्मान के प्रति उत्तरदायी हैं, तो स्वाभाविक रूप से राष्ट्र माता के प्रति भी हम समर्पित होंगे। विचार कर लिखिए।
4. राष्ट्र के प्रति हमारे समर्पण में आपको क्या बाधक लगती हैं ? साथियों के साथ विचार कर अपनी समझ को लिखिए।

4YR8VI

भाषा से

1. इस कविता में बहुत से तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है जैसे – ऋण, अकिंचन, भाल, अर्पण, चरण, ध्वज, सुमन, नीड़, तृण आदि इन शब्दों का छतीसगढ़ी भाषा में क्या प्रयोग प्रचलित है उन्हें खोज कर वाक्य में प्रयोग कीजिए।

4Z14X6

2. निम्नलिखित शब्दों के सही रूप को छांट कर लिखिए–

   न्यौछावर/न्योछावर,आशीश/आशीष, अकिंचन/अकीन्चन, सवीकार/स्वीकार, स्वाभाविक/स्वभाविक, आसय/आशय, अनुपरास/अनुप्रास, कृतज्ञ/क्रतग्य।

3. प्रस्तुत कविता में तुक के रूप में त, न और र वर्ण का बार–बार दुहराव देखने को मिलता है। जहाँ वर्णों की बार–बार आवृत्ति होती है, उसे हम अनुप्रास अलंकार कहते हैं।

   जैसे– गान अर्पित, प्राण अर्पित।

   रक्त का कण– कण समर्पित।

   पंक्ति में 'त' वर्ण का दुहराव देखा जा सकता है। पाठ में ऐसे अन्य पंक्तियों को ढूंढें जहाँ अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ हो।

योग्यता विस्तार

1. "राष्ट्र के प्रति नागरिकों के क्या कर्तव्य हैं" इस विषय पर कक्षा में विचार कर मुख्य बिन्दुओं को लिखकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।

4Z9ZYT

2. आशा का दीप–(दिनकर), सारे जहाँ से अच्छा–(इकबाल), आदि देशभक्ति पूर्ण कविताओं को खोज कर पढ़िए।

पाठ 2

प्रेरणा के पुष्प

– लेखक-मण्डल

मनुष्य होने का सहज बोध यह है कि हम ऐसे कार्य करें जिससे अधिक से अधिक लोगों को सुख और आनंद की अनुभूति हो। प्रस्तुत पाठ के दृष्टांत इन्हीं मानवीय भावानुभूतियों को सहज रुप में व्यक्त करते हैं। बुजुर्ग अगली पीढ़ी के लिए फलदार वृक्षों के बीज बोते हैं, वहीं एक बुजुर्ग स्त्री अंजान राहों में सुंदर पुष्पों, छायादार वृक्षों के बीज इस उम्मीद में बिखेरती चलती हैं कि वह रहे न रहे आने वाली पीढियों को इन पुष्पों और वृक्षों के उगने से सुगंध और शीतलता मिलेगी। विवेकानंद और बेंजामिन फ्रेंकलिन के जीवनानुभव के प्रसंग मानव जीवन की इसी सार्थकता को संपूर्णता के साथ प्रेरित और आशान्वित करते हैं।

(1)

एक बूढ़ा आदमी, जिसके बाल सफेद हो गए थे, जमीन खोद रहा था। एक नौजवान ने उस बुजुर्ग को परिश्रम करते देखकर पूछा, "बाबा, यह क्या कर रहे हो?"

"आम का पौधा रोप रहा हूँ–" बूढ़े ने कहा।

"इस उम्र में? इसके फल कब खाओगे, बाबा?"

"मैं फल नहीं खा सकता, तो क्या हुआ बेटे, तुम तो खा सकोगे न? मेरे–तुम्हारे नाती–पोते तो खाएँगे? देखो, वह अमराई मेरे दादा ने लगाई थी, तो उसके फल मैंने खाए। मैं यह आम का पौधा लगा रहा हूँ। इसके फल मेरे नाती–पोते खाएँगे।"

(2)

एक वृद्ध महिला रेलगाड़ी से सफर कर रही थी। खिड़की के पास बैठकर बीच–बीच में, अपनी मुट्ठी से कुछ बाहर फेंकती जा रही थी। एक सहयात्री ने पूछा, "यह आप क्या फेंक रही हैं ?" उस

महिला ने जवाब दिया, "ये सुंदर फूलों और फलों के बीज हैं। मैं इन्हें इस उम्मीद से फेंक रही हूँ कि इनमें से कुछ भी अगर जड़ पकड़ लें तो लोगों को इनसे कुछ फायदा होगा। पता नहीं, मैं इस रास्ते से फिर गुजरूँ या न गुजरूँ, इसलिए क्यों न मैं इस अवसर का उपयोग कर लूँ?"

(3)

अमेरिका के वैज्ञानिक, बेंजामिन फ्रेंकलिन, के बारे में एक अनुकरणीय बात सुनी जाती है। उनके पास एक गरीब विद्यार्थी मदद माँगने के लिए आया। उसे उन्होंने बीस डालर दिए। वे तो यह छोटी–सी रकम देकर भूल गए, लेकिन वह विद्यार्थी इस उपकार को न भूला। जब उसके दिन फिरे, तब वह बीस डालर लौटाने के लिए फ्रेंकलिन के पास आया। फ्रेंकलिन ने कहा, "मुझे याद तो नहीं कि मैंने यह रकम आपको कब दी थी। खैर, आप इसे अपने ही पास रखिए और जब आपके पास कोई ऐसा ही जरूरतमंद आए तो उसे यह दे दीजिए।" उस व्यक्ति ने ऐसा ही किया।

कहते हैं, आज भी वह रकम अमेरिका में जरूरतमंदों के हाथों में घूम रही है।

(4)

स्वामी विवेकानंद बेलूर मठ के निर्माण–कार्य और शिक्षादान के कार्य में बहुत व्यस्त थे। निरन्तर भाग–दौड़ और कठिन श्रम करने के कारण वे अस्वस्थ हो गए थे। चिकित्सकों ने उन्हें वायु–परिवर्तन तथा विश्राम करने पर जोर दिया। विवश होकर वे दार्जिलिंग चले गए। वहाँ उनके स्वास्थ्य में धीरे–धीरे सुधार हो रहा था। तभी उन्हें समाचार मिला कि कोलकाता में प्लेग व्यापक रूप से फैल गया है। प्रतिदिन सैकड़ों लोगों की मृत्यु हो रही है। यह दुखद समाचार सुनकर क्या महाप्राण विवेकानंद स्थिर रह सकते थे ? वे तुरन्त कोलकाता लौट आए और उसी दिन उन्होंने प्लेग रोग में आवश्यक सावधानी बरतने का जनसाधारण को उपदेश दिया। अपने साथ तमाम संन्यासियों और ब्रह्मचारियों को लेकर वे रोगियों की सेवा में जुट गए। कोलकाता में भय तथा आतंक का राज्य फैला था। स्त्री–पुरुष अपने बच्चों को लेकर प्राण बचाने के उद्देश्य से भागे जा रहे थे। ब्रिटिश सरकार ने प्लेग रोग के बचाव के संबंध में कठोर नियम जारी कर दिया था। उससे लोगों में भारी असंतोष था। इस परिस्थिति का सामना करने की भारी चुनौती स्वामी जी के सामने थी। इस कार्य में कितने धन की आवश्यकता होगी और वह कहाँ से आएगा, इस बात की चिन्ता करते हुए किसी गुरुभाई ने स्वामी जी से प्रश्न किया, "स्वामी जी, रुपये कहाँ से आएँगे?" स्वामी जी ने तत्काल

उत्तर दिया, "यदि आवश्यकता हुई तो मठ के लिए खरीदी गई जमीन बेच डालेंगे। हजारों

स्त्री–पुरुष हमारी आँखों के सामने असहनीय दुःख सहन करेंगे और हम मठ में रहेंगे ? हम सन्यासी हैं, आवश्यकता होगी तो फिर वृक्षों के नीचे रहेंगे, भिक्षा द्वारा प्राप्त अन्न–वस्त्र हमारे लिए पर्याप्त होगा।"

स्वामी जी ने एक बड़ी–सी जमीन किराये पर ली और वहाँ पर कुटियाँ निर्माण की गईं। जाति व वर्ण–विचार छोड़, असहाय प्लेग के मरीजों को वहाँ पर लाकर उत्साही कार्यकर्त्तागण सेवा–कार्य में रत हुए। स्वामी जी स्वयं भी उपस्थित रहकर सेवा–कार्य करने लगे। शहर की गंदगी साफ करने में, औषधियों का वितरण करने में, दरिद्र नारायणों की अति उत्साह से सेवा करने में, सभी कार्यकर्त्ता सच्चे मन से लग गए। 'यत्र जीव तत्र शिव' मंत्र के ऋषि विवेकानंद मृत्यु की कुछ भी परवाह न करते हुए स्वदेशवासियों को शिक्षा देने लगे कि किस प्रकार नर को नारायण मान सेवा करना योग्य है। जिन डोम–चण्डाल, मोची आदि से सदियों से तथाकथित ऊँची जाति के अभिमानी जन घृणा करते थे, स्वामी जी ने उन्हीं को 'मेरे भाई' कहकर उनका आलिंगन किया।

टिप्पणी

डोम – भारतवर्ष की एक अनुसूचित जाति। कभी ये लोग ही श्मशान में चिता जलाने का काम करते थे।

अभ्यास

पाठ से

1. बुजुर्ग को परिश्रम करते देख कर उनसे नौजवान के क्या सवाल थे ?
2. रेल से सफर करती बुजुर्ग महिला मुट्ठी से बाहर क्या बिखेर रही थी और क्यों ?
3. अमरीकी वैज्ञानिक फ्रेंकलिन बेंजामिन के बारे में अनुकरणीय बात क्या सुनी जाती है ?
4. महाप्राण विवेकानन्द क्यों अस्थिर चित्त हो गए ?
5. विवेकानन्द ने सन्यासी जीवन के बारे में क्या बताया ?
6. अपने काम से विवेकानन्द स्वदेशवासियों को क्या शिक्षा देने लगे ?
7. प्लेग पीड़ितों की सहायता के लिए विवेकानन्द ने क्या–क्या किया ?

पाठ से आगे

1. आपके आस–पास ऐसे लोग होंगे जो दूसरों की सेवा के लिए बार–बार प्रयास करते हैं ऐसे लोगों के बारे में पता कर लिखिए।
2. पाठ का शीर्षक 'प्रेरणा के पुष्प' रखा गया है ? इस पाठ को पढ़ने से आपको क्या अनुभूति हुई दस पंक्तियों में लिखने का प्रयास कीजिए।

4ZS534

3. बुजुर्ग व्यक्ति अपनी आने वाली पीढ़ी के प्रति कितने संवेदनशील होते हैं, यह पाठ से पता चलता है। आपके आस–पास के बुजुर्ग क्या चाहते हैं ? इस पर उनसे बात कीजिए और बातचीत के अंश संक्षेप में लिखिए।
4. किसी बुजुर्ग व्यक्ति के प्रति हम नई पीढ़ी के लोगों का क्या कर्तव्य होना चाहिए ? मित्रों से इस विषय पर बातचीत कर अपने विचार रखिए।
5. पाठ में 'जाति सूचक' शब्द का उल्लेख है। क्या आपको लगता है कि कहीं से भी, ऐसे प्रयोग मानवीय समानता या किसी सभ्य समाज का बोध कराते है। आपस में विचार कर लिखिए।

भाषा से

512N4R

1. पाठ में 'सहयात्री' शब्द का अर्थ है साथ–साथ यात्रा करनेवाला, इस शब्द की रचना 'यात्री' में 'सह' शब्द को जोड़कर की गई है इसी तरह से आप 'सह' शब्द को जोड़कर कुछ अन्य शब्दों की रचना कीजिए।
2. पाठ में सफेद बाल, वृद्ध महिला, सुंदर फूल, गरीब विद्यार्थी, अनुकरणीय व्यक्ति, असहनीय दुःख, असहाय मरीज आदि शब्द, विशेषण और विशेष्य के उदाहरण हैं इसमें से विशेष्य और विशेषण को पहचान कर लिखिए और पाठ में प्रयुक्त हुए ऐसे ही अन्य शब्द प्रयोग को खोजकर लिखिए।
3. पाठ में इस तरह के प्रयोग आप देख सकते हैं **जिनके** बाल, **उस** बुजुर्ग, **इस** उम्र, **इस** उम्मीद, **इस** रास्ते, **यह** छोटी रकम, रेखांकित शब्दों को हम सार्वनामिक विशेषण कहते हैं, अर्थात् यहां पर सर्वनाम शब्द संज्ञा या सर्वनाम के संकेत या निर्देश के रूप में आये हैं, अतः सार्वनामिक विशेषण के उदाहरण हैं। पाठ से इस प्रकार के और भी सार्वनामिक विशेषणों के उदाहरण ढूंढ़ कर लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. बुजुर्गों को किस प्रकार की उपेक्षा और अपमान, आज हमारे समाज में सहना पड़ता है और क्यों ? इस विषय पर विद्यालय स्तर पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन कीजिए।
2. विवेकानन्द के जीवन और उनके कार्यों के बारे में पुस्तकालय से उनकी जीवनी अथवा जीवन के कुछ प्रसंगों को खोज कर पढ़िए और साथियों के साथ चर्चा कीजिए।

51BJ6E

5CPSLY

पाठ 3

विद्रोही शक्तिसिंह

–श्री विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक'

दो ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से कहानीकार ने भाई–भाई के संबंधों के प्रेम, प्रतिशोध, अन्तर्द्वन्द्व, ग्लानि भाव और भावनाओं के आवेग को कुशलता के साथ चित्रित किया है। एक छोटे से मुद्दे पर महाराणा प्रताप और शक्ति सिंह में मतभेद होता है। अपमान से आहत और प्रतिशोध भाव से भरा हुआ शक्ति सिंह क्रोध के आवेग में चित्तौड़ छोड़कर आगरा अकबर के शरण में चला जाता है। उसके मन में महाराणा प्रताप से बदला लेने की बलवती आकांक्षा है। मुगल और राजपूतों के मध्य युद्ध में शक्ति, अकबर की ओर से लड़ रहा होता है। राजपूतों की पराजय के मध्य जब महाराणा सेनानायकों के दबाव में युद्ध के मैदान से सकुशल निकल जाने को बाध्य किये जाते हैं तो शक्ति सिंह इस रणनीति को ताड़ लेता है और बदला लेने का उपयुक्त अवसर समझ अपने घोड़े को महाराणा के पीछे लगा देता है। रास्ते में वीर राजपूत योद्धाओं के मातृभूमि पर बलिदान और उत्सर्ग देखकर शक्ति सिंह का हिंसा भाव ग्लानि से भर उठता है। महाराणा के समक्ष नतमस्तक हो बच्चों की तरह फूट–फूट कर रोता हुआ वीर शक्ति, भाई के चरणों में अपना शीश चढ़ाकर प्रायश्चित्त करने का आदेश माँगता है। इस कहानी का एक और सबल पक्ष है शक्ति सिंह की पत्नी की भावनाओं की जीत।

"मान जाओ, तुम्हारे उपयुक्त यह कार्य न होगा।"

"चुप रहो, तुम क्या जानो?"

"इसमें वीरता नहीं, अन्याय है।"

"बहुत दिनों की धधकती हुई ज्वाला आज शान्त होगी–" शक्तिसिंह ने एक लम्बी साँस फेंकी और अपनी पत्नी की ओर देखा।

"छी–छी, कलंक लगेगा, अपराध होगा।"

"अपमान का बदला लूँगा। प्रताप के गर्व को मिट्टी में मिला दूँगा। आज मैं विजयी होऊँगा–" बड़ी दृढ़ता से कहकर शक्तिसिंह ने शिविर के द्वार पर से देखा। मुगल–सेना के चतुर सिपाही अपने–अपने घोड़ों की परीक्षा ले रहे थे। धूल उड़ रही थी। बड़े साहस से सब एक–दूसरे में उत्साह भर रहे थे।

"निश्चय ही महाराणा की हार होगी। बाईस हजार राजपूतों को दिन–भर में मेरे द्वारा बुलाई गई मुगल सेना काटकर सूखे डंठल की भाँति गिरा देगी" – साहस से शक्तिसिंह ने कहा।

"भाई पर क्रोध करके देशद्रोही बनोगे ...." कहते–कहते उस राजपूत बाला की आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं।

शक्तिसिंह अपराधी की तरह विचार करने लगा। जलन का उन्माद नस–नस में दौड़ रहा था। प्रताप के प्राण लेकर ही छोड़ूँगा, ऐसी प्रतिज्ञा उसने की थी। नादान दिल किसी तरह न मानेगा। उसे कौन समझा सकता था ?

रणभेरी बजी। कोलाहल मचा। मुगल सैनिक मैदान में एकत्रित होने लगे। पत्ता–पत्ता खड़खड़ा उठा।

बिजली की भाँति तलवारें चमक रही थीं। उस दिन सबमें उत्साह था। युद्ध के लिए भुजाएँ फड़कने लगीं।

शक्तिसिंह ने घोड़े की लगाम पकड़कर कहा– "आज अंतिम निर्णय है, मरूँगा या मारकर ही लौटूँगा।"

शिविर के द्वार पर खड़ी मोहिनी अपने भविष्य की कल्पना कर रही थी। उसने बड़ी गंभीरता से कहा – "ईश्वर आपको सद्बुद्धि दे, यही प्रार्थना है।"

एक महत्त्वपूर्ण अभियान के विध्वंस की तैयारी थी। प्रकृति काँप उठी। घोड़े और हाथियों के चीत्कार से आकाश थरथरा उठा। बरसाती हवा के थपेड़ों से जंगलों के वृक्ष रणनाद करते हुए झूम रहे थे। पशु–पक्षी भय से त्रस्त होकर आश्रय ढूँढने लगे। बड़ा प्रतिकूल और विकट समय था।

उस भयानक मैदान में राजपूतसेना मोर्चाबंदी कर रही थी। हल्दीघाटी की ऊँची चोटियों पर भील लोग धनुष चढ़ाए उन्मत्त खड़े थे।

"महाराणा की जय !" शैलमाला से टकराती हुई ध्वनि मुगल–सेनाओं में घुस पड़ी। युद्ध आरंभ हुआ। भैरवी रणचंडी ने प्रलय का राग छेड़ा। मनुष्य हिंसक जंतुओं की भाँति, अपने–अपने लक्ष्य पर टूट पड़े। सैनिकों के निडर घोड़े हवा में उड़ने लगे।

तलवारें चमकने लगीं। पर्वतों के शिखरों पर से विषैले बाण मुगलसेना पर बरसने लगे। सूखी हल्दीघाटी में रक्त की धारा बहने लगी।

महाराणा आगे बढ़े। शत्रुसेना का व्यूह टूटकर तितर–बितर हो गया। दोनों ओर के सैनिक कट–कटकर गिरने लगे। देखते–देखते लाशों के ढेर लग गए।

भूरे बादलों को लेकर आँधी आई। सलीम के सैनिकों को बचने का अवसर मिला। मुगलों की सेना में नया उत्साह भर गया। तोप के गोले उथल–पुथल करने लगे। धाँय–धाँय करती बंदूकों से निकली हुई गोलियाँ दौड़ रही थीं। ओह ! जीवन कितना सस्ता हो गया था।

महाराणा शत्रुसेना में सिंह की भाँति उन्मत्त होकर घूम रहे थे। जान की बाजी लगी थी।

वे सब तरफ से घिरे थे; हमला–पर–हमला हो रहा था। राणा संकट में पड़े थे। बचना कठिन था। सात बार घायल होने पर भी पैर उखड़े नहीं, मेवाड़ का सौभाग्य इतना दुर्बल नहीं था।

मानसिंह की कुमंत्रणा सत्य सिद्ध होनेवाली थी। ऐसे आपत्तिकाल में वह वीर सरदार सेना सहित वहाँ कैसे आया ? आश्चर्य से महाराणा ने उसकी ओर देखा और मन्ना जी ने उनके मस्तक से मेवाड़ के राजचिह्न को उतारकर स्वयं धारण कर लिया। राणा ने आश्चर्य और क्रोध से पूछा–"अरे! यह क्या?"

"आज मरने के समय एक बार राजचिह्न धारण करने की बड़ी इच्छा हुई है–" हँसकर मन्ना जी ने कहा। राणा ने उसकी उन्मादपूर्ण हँसी में अटल धैर्य देखा।

मुगलों की सेना में से शक्तिसिंह इस चातुरी को समझ गया। उसने देखा, घायल प्रताप रणक्षेत्र से जीते–जागते निकले चले जा रहे हैं और वीर मन्ना जी को प्रताप समझकर मुगल उधर ही टूट पड़े हैं। उसी समय दो मुगल सरदारों के साथ महाराणा के पीछे–पीछे शक्तिसिंह ने अपना घोड़ा छोड़ दिया।

खेल समाप्त हो रहा था। स्वतंत्रता की बलि–वेदी पर सन्नाटा छा गया था। जन्मभूमि के चरणों पर मर मिटनेवाले वीरों ने अपने को उत्सर्ग कर दिया था। बाईस हजार राजपूत वीरों में से केवल आठ हजार बच गए थे।

विद्रोही शक्तिसिंह चुपचाप सोचता हुआ अपने घोड़े पर चढ़ा चला जा रहा था। मार्ग में शव कटे पड़े थे – कहीं भुजा शरीर से अलग पड़ी थी; कहीं धड़ कटा हुआ था; कहीं खून से लथपथ मस्तक भूमि पर गिरा हुआ था। कैसा परिवर्तन है ! दो घड़ियों में हँसते–बोलते और लड़ते हुए जीवित पुतले कहाँ चले गए? ओह! ऐसे निरीह जीवन पर इतना गर्व !

शक्तिसिंह की आँखें ग्लानि से छलछला गईं। "ये सब भी राजपूत थे। मेरी ही जाति के खून थे। हाय रे मैं ! मेरा प्रतिशोध पूरा हुआ–क्या सचमुच पूरा हुआ ? नहीं, यह प्रतिशोध नहीं, अधम शक्ति ! यह तेरे चिरकाल के लिए पैशाचिक आयोजन था। तू भला पागल, तू प्रताप से बदला लेना चाहता था। उस प्रताप से जो अपनी स्वर्गादपि गरीयसी जननी जन्मभूमि की मर्यादा बचानेवाला था; वह जन्मभूमि, जिसके अन्न–जल से तेरी नसें भी फूली–फली हैं। अब भी माँ की मर्यादा का ध्यान कर।"

सहसा धाँय–धाँय गोलियों का शब्द हुआ। चौंककर शक्तिसिंह ने देखा। दोनों मुगल प्रताप का पीछा कर रहे थे। महाराणा का घोड़ा लस्त–पस्त होकर झूमता हुआ गिर रहा था। अब भी समय है। शक्तिसिंह के हृदय में भाई की ममता उमड़ पड़ी।

फिर एक आवाज़ हुई – "रुको।"

दूसरे क्षण शक्तिसिंह की बन्दूक छूटी। पलक मारते दोनों मुगल सरदार जहाँ–के–तहाँ ढेर हो गए। महाराणा ने क्रोध से आँखें चढ़ाकर देखा। वे आँखें पूछ रही थीं, "क्या मेरे प्राण पाकर निहाल हो जाओगे ? इतने राजपूतों के खून से भी तुम्हारी हिंसा तृप्त नहीं हुई ?"

किन्तु यह क्या ? शक्तिसिंह तो महाराणा के सामने नतमस्तक खड़ा था। वह बच्चों की तरह फूट–फूटकर रो रहा था। शक्तिसिंह ने कहा–"नाथ! सेवक अज्ञान में भूल गया था। आज्ञा हो तो इन चरणों पर अपना शीश चढ़ाकर प्रायश्चित कर लूँ।"

राणा ने अपनी दोनों बाँहें फैला दीं। दोनों के गले आपस में मिल गए, दोनों की आँखें स्नेह की वर्षा करने लगीं। दोनों के हृदय गद्‌गद् हो गए।

इस शुभ मुहूर्त पर पहाड़ी वृक्षों ने पुष्पवर्षा की, नदी की कल–कल धारा ने वंदना की।

प्रताप ने उन डबडबाई हुई आँखों से ही देखा–उनका चिर सहचर प्यारा 'चेतक' दम तोड़ रहा है। सामने ही शक्तिसिंह का घोड़ा तैयार है।

शक्तिसिंह ने कहा–"भैया ! अब आप विलंब न करें, घोड़ा तैयार है।"

राणा शक्तिसिंह के घोड़े पर सवार होकर, उस दुर्गम मार्ग को पार करते हुए निकल गए। श्रावण का महीना था।

दिनभर की मारकाट के पश्चात् रात्रि बड़ी सुनसान हो गई थी। शिविरों में से महिलाओं के रुदन की करुण ध्वनि हृदय को हिला देती थी।

हजारों सुहागिनों के सुहाग उजड़ गए थे। उन्हें कोई ढाढ़स बँधानेवाला न था। था तो केवल हाहाकार, चीत्कार, कष्टों का अम्बार। शक्तिसिंह अभी तक अपने शिविर में नहीं लौटा था। उसकी पत्नी भी प्रतीक्षा में विकल थी। उसके हृदय में जीवन की आशा–निराशा क्षण–क्षण उठती–गिरती थी।

अँधेरी रात में काले बादल आकाश में छा गए थे। एकाएक उस शिविर में शक्तिसिंह ने प्रवेश किया। उसके कपड़े खून से तर थे। पत्नी ने कौतूहल से देखा।

"प्रिये !"

"नाथ !"

"तुम्हारी मनोकामना पूर्ण हुई, मैं प्रताप के सामने परास्त हो गया।"

अभ्यास

पाठ से

1. शक्ति सिंह कौन था उसने क्या प्रतिज्ञा की थी ?
2. राजपूत बाला की आँखों से चिंगारियाँ क्यों निकलने लगी ?
3. महाराणा प्रताप से शक्ति सिंह की अनबन क्यों हुई ?
4. शक्ति सिंह का अंतिम निर्णय क्या था ?
5. मानसिंह की कुमंत्रणा क्या थी ?
6. मन्ना जी ने मेवाड़ का राज चिह्न अपने मस्तक पर क्यों धारण किया ?
7. शक्ति सिंह की आँखें ग्लानि से क्यों छलछला गईं ?
8. युद्ध अथवा उस मारकाट के क्या परिणाम हुए ?

पाठ से आगे

1. पाठ में महाराणा प्रताप और शक्ति सिंह दो चरित्र हैं। दोनों को पढ़ते हुए कौन सा चरित्र आपको अधिक आकर्षित करता है ? विचार कर लिखिए।
2. अगर शक्ति सिंह ने महाराणा प्रताप का पीछा न किया होता तो उसका क्या परिणाम होता? साथियों के साथ विचारकर लिखिए।

5CYNNL

3. शक्ति सिंह की पत्नी मोहिनी के भाव को समझते हुए उसकी चारित्रिक विशेषताओं को परस्पर बातचीत कर लिखिए।
4. दो भाइयों के संबंधों को हम कहानी में देखते हैं। हमारे आस–पास के परिवेश में भाई–भाई के संबंधों को देखकर आप क्या महसूस करते हैं ? आपस में बात कर लिखिए।

भाषा से

1. पाठ में आए हुए निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए–

5D8JQ9

क. शक्ति सिंह ने एक लम्बी साँस फेंकी **और** अपनी स्त्री की ओर देखा।

ख. शक्ति सिंह के हृदय में भाई की ममता उमड़ पड़ी, **फिर** एक आवाज आई–रुको।

उपरोक्त दोनों वाक्यों में क्रमशः 'और' एवं 'फिर' अव्यय शब्दों से दो वाक्यों को जोड़ा गया है। इन्हें हम समुच्चय बोधक अव्यय कहते हैं। दो शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को जोड़ने का कार्य करने वाले अव्यय, समुच्चयबोधक अव्यय कहे जाते हैं। आप समुच्चय बोधक अव्यय के पाँच उदाहरण बनाएँ।

2. पाठ में इन शब्दों के प्रयोग को आप देख सकते हैं –भूरे बादल, उन्मादपूर्ण हँसी, अटल धैर्य, नया उत्साह, विकट समय, सस्ता जीवन, प्रलय राग। ऐसे प्रयोग विशेषण–विशेष्य के उदाहरण हैं। पाठ से आप इसी प्रकार के अन्य उदाहरण को खोज कर लिखिए और विशेष्य तथा विशेषण को चिह्नित कीजिए।

3. पाठ में बहुत से स्थानों पर योजक चिह्न (–) का प्रयोग किया गया है। पाठ से इन्हें खोजकर लिखिए और योजक चिह्न का प्रयोग कहाँ होता है, इसे किताब में से ढूँढ़ कर पढ़िए और शिक्षक की मदद से समझने का प्रयास कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. हल्दीघाटी कहाँ पर है और क्यों प्रसिद्ध है ? शिक्षक से बातचीत कर इस विषय पर एक निबंध लिखिए।

2. इस कहानी को एक छोटे से नाटक के रूप में परिणित कर उसका मंचन कीजिए।

5DHFRH

5DRBTJ

पाठ 4

मौसी

– श्री भीष्म साहनी

प्रस्तुत कहानी एक स्त्री के मानवीय लगाव और स्वभाव के उदात्त स्वरूप का वर्णन है, जो सबके सुख–दुःख में अपनी पहल और प्रतिबद्धता के साथ शामिल होती है। वह बड़ों के लिए ही नहीं बच्चों के साथ भी उनके खेल, खिलौने और कथा संसार के आनंदमयी दुनिया में शामिल रहती है। लेकिन सबके काम आनेवाली 'मौसी' जब बीमार पड़ती है तो उसके साथ उपेक्षा का व्यवहार होता है। उसके प्रति यह व्यवहार बहुत ही कारुणिक है। बच्चों की आत्मीयता और रागात्मक भाव मौसी के इस एहसास को जागृत कर देते हैं जिसमें मौसी बेहद विश्वास के साथ कहती है कि 'अब मैं मर भी जाऊं तो तुम लोगों को छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी'।

उसे सब मौसी कहकर पुकारते थे; बच्चे भी और बड़ी उम्र के लोग भी। किसी के घर बच्चा बीमार होता, तो सबसे पहले मौसी को ही बुलाया जाता। किसी के घर शादी होती, तो वहाँ भी सबसे पहले मौसी ही पहुँचती। दिनभर मुहल्ले में कभी एक के घर, तो कभी दूसरे के घर मौसी बैठी नजर आती।

कभी किसी घर के आँगन में बैठी लड़की के बाल काढ़ रही होती; कभी किसी के घर की छत पर शलजम की कतलियाँ सूखने के लिए डाल रही होती।

जब चंदू की बहिन की शादी हुई, तो मौसी दिनभर दुल्हन की हथेलियों पर मेंहदी के बेल–बूटे बनाती रही।

एक दिन आँगन में बैठी मौसी, नीले रंग के पल्ले पर झिलमिलाते सितारे टाँक रही थी। हम बच्चों से बोली– "आओ, तुम्हें सितारों जड़ा आसमान दिखाऊँ।" कहकर उसने हमारे सामने पल्ला बिछा दिया। सचमुच हमें लगा जैसे तारों से झिलमिलाता आकाश हमारे सामने फैल गया हो।

बड़ी बहिन सुनाती थी कि पहले मौसी तीज–त्योहार के मौके पर नाचा भी करती थी; तरह–तरह के स्वाँग भरती। पर अब वह कुछ–कुछ बुढ़ा गई थी।

मौसी कौन थी, कहाँ से आई थी, कोई नहीं जानता था। किसी को यह भी मालूम नहीं था कि वह रहती कहाँ है। एक बार माँ ने मुझसे कहा– "जा, मौसी को बुला ला।" मैंने पूछा– "कहाँ मिलेगी?" माँ बोली– "मुहल्ले में ही कहीं मिलेगी।" यह भी कोई नहीं जानता था कि मौसी कब उस मुहल्ले में आई थी। बच्चे जब बड़े हो जाते, छोटे स्कूल को छोड़कर मिडिल स्कूल में जाने लगते तो मौसी का दामन छोड़ देते। तब मुहल्ले के दूसरे नन्हे बच्चे उसका साथ पकड़ लेते थे।

रोज दोपहर ढलने पर मौसी नीम के पेड़ तले पहुँच जाती थी। वहाँ सभी बच्चे खेला करते थे। मौसी को बच्चों के साथ खेलना, उन्हें कहानियाँ, चुटकुले सुनाना बहुत पसंद था। जब शाम

हो जाती और बच्चे खेलकर थक जाते, तो मौसी को घेरकर बैठ जाते; उससे कहानियाँ सुनते। आज मुझे जितनी कहानियाँ याद हैं–तोता–तोती की कहानी, काठ के घोड़े की कहानी, सुन्दरबाई की कहानी– वे मैंने मौसी के मुँह से ही सुनी थीं।

मौसी मैला–सा दुपट्टा ओढ़े रहती थी। उसके हर कोने में कुछ–न–कुछ बँधा रहता था– किसी कोने में थोड़े–से चने, किसी में टिकिया, किसी में दाल–फुलियाँ। मौसी दुपट्टे के छोरों को खोलकर, हम सबकी हथेली पर थोड़ा–थोड़ा चना–चबेना रख देती। एक बार मैंने माँ को बताया तो माँ ने मना कर दिया, "उस गरीबिनी से लेकर क्यों खाते हो? वह थोड़ा–सा चना–चबेना अपने लिए रखती होगी।"

मौसी के साथ दिन–रात रहते हुए भी कोई नहीं जानता था मौसी कौन है ? उसका कोई सगा संबंधी है भी या नहीं? कोई बच्चा उससे पूछता– "मौसी, तुम कहाँ की रहनेवाली हो," तो कहती– "तुम्हारे मुहल्ले की।" "तुम कौन हो ?" तो कहती– "तुम्हारी मौसी।'' "तुम्हारे बेटे–बेटियाँ कहाँ हैं ?" तो अपनी उँगली से एक–एक बच्चे को छूकर कहती– "यह मेरा बेटा, यह मेरी बेटी।" नाम पूछो तो कहती– "मैं मौसी हूँ। यही मेरा नाम है।"

एक दिन जब स्कूल की छुट्टी हुई, हम लोग बस्ते उठाकर बाहर निकले तो मौसी फाटक पर नहीं मिली। उस दिन बच्चों को कोई लेने नहीं गया। दोपहर को बच्चे खेलने के लिए निकले तो मौसी पेड़ के नीचे भी नहीं थी। सभी ने एक–दूसरे से पूछा पर किसी को मालूम नहीं था कि मौसी कहाँ गई है।

कई दिन बीत गए पर मौसी का कुछ पता न चला। कोई कहता, मौसी बीमार है। कोई कहता, वह अपने गाँव चली गई है। मौसी के न रहने से मुहल्ला बड़ा खाली–खाली लगता था। पेड़ के नीचे भी सूना–सूना रहता था। कुछ दिन बाद एक मोची पेड़ के नीचे आकर बैठने लगा। पर बच्चों ने उसे खदेड़कर भगा दिया– "यह मौसी की जगह है। यहाँ कोई नहीं बैठ सकता।" मौसी पेड़ के नीचे बैठती थी, तो घरवालों को भी बच्चों की चिंता नहीं थी। अब वे बच्चों को बाहर नहीं खेलने देते थे।

एक दिन हम मौसी की खोज में घूम रहे थे, तभी हमें एक मकान के अंदर से ऊँची–ऊँची बोलने की आवाज सुनाई दी– "हमने ठेका तो नहीं ले रखा है मौसी; बीस दिन से तुम यहाँ पड़ी हो। अब तुम किसी दूसरे के घर चली जाओ।"

मौसी का नाम सुनकर हम सब ठिठककर खड़े हो गए। बंद दरवाजे की दरार में से अन्दर झाँककर देखा। आँगन में मौसी एक खाट पर लेटी थी। बाल उलझे हुए और चेहरा पीला व सूखा हुआ था। उसके पास ही खड़ी एक औरत उसे डाँटे जा रही थी।

"मैं चली जाऊँगी, जरा शरीर सँभल जाए।"

"तू अपने गाँव चली जा।"

"गाँव में मेरा कौन बैठा है ?" कहती–कहती मौसी रुँआसी हो गई।

हमें बहुत गुस्सा आया। मैंने घर लौटकर माँ से कहा तो वह बोली–"बिज्जू की माँ कहाँ तक उसे अपने पास रख सकती है ? मौसी उनके घर में काम तो करती नहीं।"

"मगर माँ, वह तो सबका काम करती है।"

"हाँ बेटा, मगर वह किसी के घर नौकरी तो नहीं करती।" बात मेरी समझ में नहीं आई। पर मैं चुप हो गया।

दूसरे दिन हमारा हॉकी मैच था। हम खेलकर लौट रहे थे। रास्ते में पुल पड़ता था।

हम बातें करते आ रहे थे। एकाएक हमने मौसी को पुल पर बैठे देखा। पास में एक छोटी–सी गठरी और लाठी रखी थी। मौसी को देखते ही हम सब उसे घेरकर खड़े हो गए।

"तू इतने दिन तक कहाँ थी, मौसी ?" एक ने पूछा।

"यहाँ क्या कर रही है, मौसी ?" दूसरे ने कहा।

"यहाँ क्यों बैठी है, मौसी ?"

"मैं यहाँ से जा रही हूँ बेटा," कहते हुए मौसी की आँखें भर आईं।

"तू तो बीमार थी, मौसी। तबीयत कैसी है ?" बलदेव ने पूछा।

"बेटा, अब ठीक हो गई हूँ। देखते नहीं, अपने पैरों से चलकर यहाँ तक आ गई हूँ।"

"तू क्यों जा रही है, मौसी ? तू मत जा।"

"मैं बूढ़ी हूँ न, बेटे, अब मैं फिर से जवान होकर आऊँगी," मौसी ने मुसकराते हुए कहा।

"हमारे लिए क्या लाएगी, मौसी ?"

"लाऊँगी, लाऊँगी, चना–चबेना लाऊँगी। गुड़–शक्कर लाऊँगी। लड़कियों के लिए मोती लाऊँगी।" मौसी ने कहा।

थोड़ी देर तक मौसी के पास बतियाकर लड़के आगे बढ़ गए। पर थोड़ी दूर जाने पर मुड़कर देखा तो मौसी पुल पर बैठी रो रही थी। उसकी आँखें ऐसी छलछला आईं थीं कि आँसू थमने में नहीं आते थे।

सहसा सभी लड़के लौट पड़े।

"हम तुम्हें कहीं नहीं जाने देंगे। मौसी, तू हमारे साथ वापस मुहल्ले में चल"—सबने एक स्वर में कहा।

"नहीं बेटा, अब मुझे जाना ही है"— मौसी हकलाते हुए बोली।

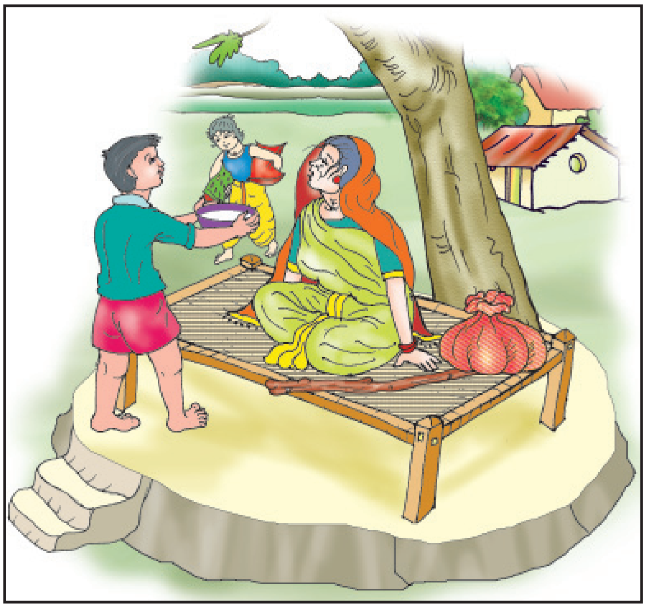

पर लड़के न माने। दो–तीन जने भागकर सड़क पार गए, जहाँ एक दुकान के सामने खाट बिछी थी। वे खाट उठा लाए। उसपर उन्होंने मौसी को जबरदस्ती बैठा दिया। साथ में गठरी और लाठी भी रख दी। फिर खाट उठाकर सभी बच्चे मुहल्ले की ओर चल दिए।

खाट को बच्चे सीधे नीम के पेड़ के नीचे ले आए। कन्हैया भागकर अपने घर से दरी और तकिया उठा लाया; योगराज अपने घर से एक कटोरा दूध। गोपाल अपने घर से लैम्प उठा लाया, जिसे उसके घरवाले रात को सीढ़ियों में रखा करते थे। बलदेव के पिता जी डॉक्टर थे। वह भागता हुआ गया। अपने पिता जी को दुकान से खींच लाया— "मौसी बीमार है? आप चलकर देखिए।" लड़के आपस में बारियाँ बाँधने लगे कि मौसी के पास रात के पहले पहर में कौन रहेगा और दूसरे पहर में कौन? उन्हें डर था कि मौसी को अगर अकेला छोड़ा तो वह भाग जाएगी।

"अब मैं मर भी जाऊँ तो तुम लोगों को छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी। मैं तुम्हारे पास ही रहूँगी। तुम जाओ अपने–अपने घर।" जब मौसी ने तसल्ली दी, तब जाकर सबको चैन आया। इस तरह मौसी मुहल्ले में लौट आई। बच्चों ने उसे जाने ही नहीं दिया। फिर तो वह स्वयं भी कहने लगी— "अब मैं सड़क की पटरी पर सो जाया करूँगी, पर अपने बच्चों को छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी।"

बच्चों के उत्साह को देखकर बच्चों के घरवालों को भी मौसी की चिंता होने लगी। शीघ्र ही मौसी के रहने के लिए जगह मिल गई। हमारे स्कूल में ही हेडमास्टर जी ने उसे काम पर रख लिया। वहीं एक कोठरी में रहने के लिए जगह दे दी।

इस बात को बहुत बरस बीत चुके हैं। मौसी अब भी वहीं है। वह अब सचमुच बुढ़ा गई है, लेकिन तंदुरुस्त है। पोपले मुँह से हँसती है तो बड़ी प्यारी लगती है। अब वह स्कूल की प्याऊ में बैठी, बच्चों को पानी पिलाती है। जब जाड़े के दिन आते हैं तो प्याऊ से हटकर स्कूल के आँगन की धूप में बैठ जाती है। आधी छुट्टी के वक्त बच्चे उसे घेरे रहते हैं। उसके दुपट्टे के छोरों में

पहले की तरह चना–चबेना, मूँगफली, दाल–फुलियाँ बँधे रहते हैं। मौसी बच्चों को कहानियाँ सुनाती–सुंदरबाई की कहानी, काठ के घोड़े की कहानी, तोता–तोती की कहानी। उसे सबकी खबर रहती है। कभी–कभी लाठी टेकती हुई मुहल्ले का चक्कर काटती है। सभी घरों में झाँक–झाँककर घरवालों की कुशल–क्षेम पूछती है। फिर साँझ ढले अपनी कोठरी में लौट आती है।

अभ्यास

पाठ से

1. बच्चों को मौसी ने सितारों जड़ा आसमान कैसे दिखाया ?
2. नन्हे बच्चे मौसी का दामन कब छोड़ देते थे ?
3. मौसी के न रहने पर मुहल्ला कैसा लग रहा था और क्यों ?
4. मौसी अचानक गायब क्यों हो गई ?
5. मौसी अपने बारे में सवाल पूछने पर क्या–क्या जवाब देती थी ?
6. मौसी पुल पर बैठकर क्यों रो रही थी ?
7. लड़कों ने मौसी के लिए क्या–क्या किया ?

पाठ से आगे

1. लेखक की माँ अपने बच्चे से कहती है कि "उस गरीबिनी से लेकर क्यों खाते हो ? वह थोड़ा सा चना–चबेना अपने लिए रखती होगी" इन पंक्तियों में लेखक की माँ का कौन सा भाव मौसी के लिए छिपा है? आपस में विचार कर लिखिए।
2. मैं बूढ़ी हूँ न बेटे, अब फिर से जवान होकर मैं आऊँगी! मौसी ने ऐसा क्यों कहा होगा ?
3. बिज्जू की माँ ने मौसी के साथ जिस तरह का व्यवहार किया, बुजुर्गों के साथ आपने इस तरह का व्यवहार होते देखा होगा। इस तरह की घटनाओं को देखकर आप क्या महसूस करते हैं ? चर्चा कर लिखिए।

5E17V7

4. बच्चों के लगाव से मौसी ने यह क्यों कहा "अब मैं मर भी जाऊँ तो तुम लोगों को छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी" मौसी का यह वाक्य बच्चों के प्रति उसके किन भावों को प्रकट करता है ? अपनी समझ को लिखिए।

भाषा से

1. इन वाक्यों को देखें–

    • मौसी प्रतिदिन बच्चों को कहानियाँ सुनाती थी।

    • उसे भरपेट भोजन मिल पाता था।

    • उपरोक्त वाक्यों में आए –'प्रतिदिन' और 'भरपेट' दोनों शब्द सामासिक पद हैं जो अव्ययीभाव समास के उदाहरण हैं। इस समास में पहला पद प्रधान होता है और इससे बना समस्त पद अव्यय होता है अर्थात् उसका रूप कभी नहीं बदलता। इसके साथ विभक्ति चिह्न भी नहीं लगता है। जैसे हाथों–हाथ, बेशक–शक के बिना, निडर –डर के बिना, निस्संदेह–संदेह के बिना।

    पाठ में आए अन्य अव्ययीभाव समास के पद ढूँढ़कर लिखें।

2. मैं यहाँ से जा रही हूँ बेटा कहते हुए मौसी की आँखें भर आईं। 'आँखें भर आना' एक मुहावरा है, जिसका अर्थ है आँखों में आँसू आना 'विछोह की पीड़ा झलकना'। इसी तरह आँखों से संबंधित बहुत सारे मुहावरे प्रचलित हैं। उन्हें खोजकर अर्थ सहित लिखिए।

3. • यहाँ क्यों बैठी हो मौसी ?

    • तबीयत कैसी है ?

    • तू क्यों जा रही है मौसी ?

    उपर्युक्त तीनों वाक्य प्रश्नवाचक (?) हैं। पाठ में बहुत सारे स्थानों पर प्रश्न वाचक वाक्यों का प्रयोग हुआ है। उन्हें खोज कर लिखिए और स्वयं से प्रश्न वाचक शब्दों (क्या, क्यों, कैसे, कब, कहाँ) का प्रयोग करते हुए इस प्रकार के वाक्यों का निर्माण कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. इस कहानी का सार कक्षा में सुनाइए।
2. 'मौसी' जैसा या उससे मिलता–जुलता कोई पात्र हर मुहल्ले में अवश्य होता है। उसके बारे में दस वाक्य कक्षा में बताइए।
3. 'भीष्म साहनी' की अन्य कहानियाँ पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।
4. विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' की कहानी 'ताई' भी पढ़िए और उसे कक्षा में सुनाइए।

5ESV15

पाठ 5

सरद रितु आ गे

-पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र'

धरती माता ल सुघ्घर बनाए बर रितु समय–समय म बदलत रहिथे, अऊ कभू पानी त कभू ठंड करत रहिथे, जेमा चउमास ह हमर जिनगी के आधार आय। हरियर–हरियर धरती ल देखके सब जीव के मन गदगद हो जाथे अउ सबके जीवन में खुशी भर जाथे। चउमास के पाछु सरद रितु ह अपन संग अनपुरना ल लेके आथे, चउमास के झंझट ह कम होय बर लागथे।

सरद रितु म हमर खेत–खार अउ गाँव ह सुंदर लागथे। चारोकोती तरिया नरवा म कमल फूल ह छतरा गे हवय। चिरई–चुरगुन मन खुशी म चारोखुँट चुहुल–पुहुल करे लागथे। कवि ह ये कविता में सरद रितु के सुघरई के वर्णन करे हवय।

चउमास के पानी परागे।
जाना–माना अब अकास हर,
चाँउर सही छरागे।

जगजग ले अब चंदा उथे,
बादर भइगे फरियर।
पिरथी, माता चारोंखुँट ले,
दिखथे हरियर–हरियर।
रिगबिग ले अब अनपुरना हर
खेतन–खेत म छागे।।

नँदिया अउ तरिया के पानी,
कमती होये लागिस।
रद्दा के चउमास के चिखला
झंझटहा हर भागिस।
बने पेट भर पानी पी के
पिरथी आज अघा गे।।

लछमी ला लहुटारे खातिर,
जल देवता अगुवाइस।
तब जगजग ले पुरइन पाना–
के दसना दसवाइस।
रिगबिग ले फेर कमल फूल
हर,तरिया भर छतरागे।।

चारोंखुँट म चुहुल–पुहुल,
अब करथें चिरइ–चुरगुन।
भौंरा घलो परे हे बइहा,
करथे गुनगुन–गुनगुन।
अमरित बरसा होही संगी,
सुघर घड़ी अब आगे।।

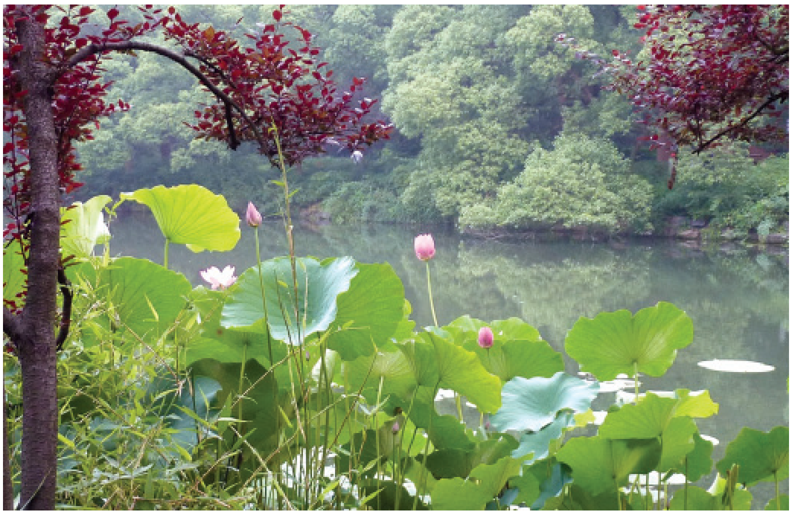

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

चउमास	=	वर्षा ऋतु के चार माह,बरसात	झंझटहा	=	परेशान करने वाला
			अघागे	=	तृप्त हो गया
परागे	=	दूर हो गया	लहुटारे खातिर	=	वापस लाने के लिए
चाँउर	=	चावल	पुरइन	=	कमल
सही	=	जैसे, समान	दसना	=	बिस्तर
छराना	=	चावल को मूसल से कूटकर साफ करना	छतरागे	=	फैल गया
			चुहुल–पुहुल	=	इधर –उधर उड़कर कलरव करना,चहल–पहल
जगजग ले उथे	=	प्रकाशवान उगता है			
भइगे	=	हो गया	चिरइ–चुरगुन	=	पक्षी
चारोंखुँट	=	चारों ओर	बइहा	=	पागल
रिगबिग ले	=	झिलमिलाता हुआ	सुघर	=	सुंदर
अनपुरना	=	अन्नपूर्णा,धरती	घड़ी	=	समय

अभ्यास

पाठ से

1. 'अकास हर चाँउर सही छरागे' के का भाव हे ?
2. नँदिया अउ तरिया के पानी काबर कमती होय लागिस ?
3. लछमी ल लहुटारे खातिर जल देवता ह का–का उदिम करिस ?
4. कवि ह अमृत बरसा काला कहे हवय, अउ ये बरसा कब होथे ?
5. सरद रितु मा हमर चारों खुँट का–का बदलाव होथे ?
6. चउमास हमर जिनगी के सुख समृद्धि के आधार काबर माने गेहे अउ चउमास म का–का होथे?
7. कवि सुघ्घर घड़ी कोन समय ल कहे हवय अउ वो समय का–का बदलाव होगे?

पाठ से आगे

5F2R2S

1. सरद रितु के आय ले चिरइ–चिरगुन अउ भौंरा मन अपन खुशी ल कइसे परगट करत हवय? अपन भाषा में लिखव।
2. 'बने पेट भर पानी पी के पिरथी आज अघा गे' ये वाक्य ल कवि काबर केहे हवय?
3. तुँहर सोच से कोन से रितु ह सबले सुघ्घर होथे, सुघ्घर काबर लगथे ? अपन कक्षा में विचार करके लिखव।
4. चउमास के महिना में तुँहर घर के आस–पास मा का–का बदलाव होथे। अउ तुमन ल ओकर से का–का परशानी अउ का आसानी लगथे। अपन कक्षा में विचार करके लिखव।

भाषा से

5FBH4F

1. ये शब्द मन के हिंदी खड़ी बोली के शब्द रूप लिखव–
   चाँउर, जगजग, पिरथी, चारों खुँट, रिगबिग, अनपुरना, तरिया, पुरइन, दसना, बइहा, चुहुल–पुहुल।
2. खाल्हे लिखाय शब्द मन के उल्टा अर्थ वाला शब्द लिखव–
   अकास, बरसा, फरियर, सुघर, बइहा, झंझटहा, कमती
3. ये शब्द मन ल अर्थ स्पष्ट करे बर अपन वाक्य में प्रयोग करव–
   गुनगुन–गुनगुन, हरियर–हरियर, घड़ी, अमरित, चिरइ–चुरगुन, तरिया, रिगबिग, चाँउर, अघागे।

योग्यता विस्तार

5FKI63

1. ये कविता के अधार ले सरद रितु के सुंदरता के एक ठन 10 वाक्य के निबन्ध लिखव।
2. सरद ऋतु के संबंध में हिंदी अउ छत्तीसगढ़ी भाषा में पाँच ठन कविता खोजव अउ अपन स्कूल के बालसभा म सुनावव।

पाठ 6

सदाचार का तावीज़

– श्री हरिशंकर परसाई

भ्रष्टाचार आज के समय और समाज का बहुचर्चित विषय है और यह भ्रष्टाचार परसाई जी के रचनाकाल में भी अपने फलते–फूलते रूप में रहा होगा। तभी तो अपने तीखे व्यंग्य में भ्रष्टाचार के विभिन्न रूप–तरीकों को व्यंग्यकार ने कथात्मक कलेवर में कुछ हकीकत और कुछ कल्पना के जरिये व्यवस्थागत खोखलेपन और दरबारी संस्कृति के साथ सघन रूप में उभारा है।

एक राज्य में हल्ला मचा कि भ्रष्टाचार बहुत फैल गया है।

राजा ने एक दिन दरबारियों से कहा, ''प्रजा बहुत हल्ला मचा रही है कि सब जगह भ्रष्टाचार फैला हुआ है। हमें तो आज तक कहीं नहीं दिखा। तुम लोगों को कहीं दिखा हो तो बताओ।''

दरबारियों ने कहा, ''जब हुजूर को नहीं दिखा तो हमें कैसे दिख सकता है ?''

राजा ने कहा, ''नहीं, ऐसा नहीं है। कभी–कभी जो मुझे नहीं दिखता, वह तुम्हें दिखता होगा। जैसे मुझे बुरे सपने कभी नहीं दिखते, पर तुम्हें तो दिखते होंगे!''

दरबारियों ने कहा, ''जी, दिखते हैं। पर वे सपनों की बात हैं?''

राजा ने कहा, ''फिर भी तुम लोग सारे राज्य में ढूँढ़कर देखो कि कहीं भ्रष्टाचार तो नहीं है। अगर कहीं मिल जाए तो हमारे देखने के लिए नमूना लेते आना। हम भी देखें कि कैसा होता है। ''

एक दरबारी ने कहा, ''हुजूर! वह हमें नहीं दिखेगा। सुना है, वह बहुत बारीक होता है। हमारी आँखें आपकी विराटता देखने की इतनी आदी हो गई हैं कि हमें बारीक चीज नहीं दिखती। हमें भ्रष्टाचार दिखा भी तो उसमें हमें आपकी ही छवि दिखेगी क्योंकि हमारी आँखों में तो आपकी ही सूरत बसी है। पर अपने राज्य में एक जाति रहती है, जिसे 'विशेषज्ञ' कहते हैं। इस जाति के पास कुछ ऐसा अंजन होता है कि उसे आँखों में आँजकर वे बारीक चीज भी देख लेते हैं। मेरा निवेदन है कि इन विशेषज्ञों को ही हुजूर भ्रष्टाचार ढूँढ़ने का काम सौंपें। ''

राजा ने 'विशेष' जाति के पाँच आदमी बुलाए और उनसे कहा, ''सुना है, हमारे राज्य में भ्रष्टाचार है। पर वह कहाँ है, यह पता नहीं चलता। तुम लोग उसका पता लगाओ। अगर मिल जाए तो पकड़कर हमारे पास ले आना। अगर बहुत हो तो नमूने के लिए थोड़ा–सा ले आना।''

विशेषज्ञों ने उसी दिन से छानबीन शुरू कर दी।

दो महीने के बाद वे फिर से दरबार में हाजिर हुए।

राजा ने पूछा, ''विशेषज्ञों! तुम्हारी जाँच पूरी हो गई?''

''जी सरकार।''

''क्या भ्रष्टाचार मिला?''

''जी, बहुत–सा मिला।''

राजा ने हाथ बढ़ाया, ''लाओ, मुझे बताओ, देखूँ, कैसा होता है?''

विशेषज्ञों ने कहा, ''हुजूर! वह हाथ की पकड़ में नहीं आता। वह स्थूल नहीं, सूक्ष्म है। पर वह सर्वत्र व्याप्त है। उसे देखा नहीं जा सकता, अनुभव किया जा सकता है।''

राजा सोच में पड़ गए। बोले, ''विशेषज्ञो, तुम कहते हो वह सूक्ष्म है और सर्वव्यापी है। ये गुण तो ईश्वर के हैं। तो क्या भ्रष्टाचार ईश्वर है?''

विशेषज्ञों ने कहा, ''हाँ महाराज! अब भ्रष्टाचार ईश्वर हो गया है।''

एक दरबारी ने पूछा, ''पर वह है कहाँ ? कैसे अनुभव होता है?''

विशेषज्ञों ने जवाब दिया,''वह सर्वत्र है। वह इस भवन में है। वह महाराज के सिंहासन में है।''

''सिंहासन में है?'' कहकर राजा साहब उछलकर दूर खड़े हो गए।

विशेषज्ञों ने कहा, ''हाँ सरकार! सिंहासन में है। पिछले माह इस सिंहासन पर रंग करने के जिस बिल का भुगतान किया गया है, वह बिल झूठा है। वह वास्तव से दुगुने दाम का है, आधा पैसा बीचवाले खा गए। आपके पूरे शासन में भ्रष्टाचार है और वह मुख्यतः घूस के रूप में है।''

विशेषज्ञों की बात सुनकर राजा चिंतित हुए और दरबारियों के कान खड़े हुए।

राजा ने कहा, ''यह तो बड़ी चिन्ता की बात है। हम भ्रष्टाचार बिलकुल मिटाना चाहते हैं। विशेषज्ञों! तुम बता सकते हो कि वह कैसे मिट सकता है?''

विशेषज्ञों ने कहा, ''हाँ महाराज! हमने उसकी भी योजना तैयार की है। भ्रष्टाचार मिटाने के लिए महाराज को व्यवस्था में बहुत परिवर्तन करने होंगे। एक तो भ्रष्टाचार के मौके मिटाने होंगे। जैसे ठेका है तो ठेकेदार है। और ठेकेदार है तो अधिकारियों को घूस है। ठेका मिट जाय तो उसकी घूस जाए। इसी तरह और बहुत–सी चीजें हैं। किन कारणों से आदमी घूस लेता है, यह भी विचारणीय है?''

राजा ने कहा, ''अच्छा, तुम अपनी पूरी योजना रख जाओ। हम और हमारा दरबार उस पर विचार करेगा।'' विशेषज्ञ चले गए।

राजा और दरबारियों ने भ्रष्टाचार मिटाने की योजना को पढ़ा। उस पर विचार किया। विचार करते–करते दिन बीतने लगे और राजा का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। एक दिन एक दरबारी ने कहा, ''महाराज! चिंता के कारण आपका स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा है। उन विशेषज्ञों ने आपको झंझट में डाल दिया।''

राजा ने कहा, ''हाँ, मुझे रात को नींद नहीं आती।''

दूसरा दरबारी बोला, ''ऐसी रिपोर्ट को आग के हवाले कर देना चाहिए, जिससे महाराज की नींद में खलल पड़े।''

राजा ने कहा, ''पर करें क्या ? तुम लोगों ने भी भ्रष्टाचार मिटाने की योजना का अध्ययन किया है। तुम्हारा क्या मत है? क्या उसे काम में लाना चाहिए?

दरबारियों ने कहा, ''महाराज! यह योजना क्या है, एक मुसीबत है। उसके अनुसार कितने उलट–फेर करने पड़ेंगे ! कितनी परेशानी होगी! सारी व्यवस्था उलट–पुलट हो जाएगी। जो चला आ रहा है, उसे बदलने से नई–नई कठिनाइयाँ पैदा हो सकती हैं। हमें तो कोई ऐसी तरकीब चाहिए, जिससे बिना कुछ उलट–फेर किए भ्रष्टाचार मिट जाए।''

राजा साहब बोले, ''मैं भी यही चाहता हूँ। पर यह हो कैसे? तुम लोग ही कोई उपाय खोजो।''

एक दिन दरबारियों ने राजा के सामने एक साधु को पेश किया और कहा, ''महाराज, एक कन्दरा में तपस्या करते हुए इन महान साधक को हम ले आए हैं। इन्होंने सदाचार का तावीज़ बनाया है। वह मन्त्रों से सिद्ध है और उसके बाँधने से आदमी एकदम सदाचारी हो जाता है।''

साधु ने अपने झोले में से एक तावीज़ निकालकर राजा को दिया। राजा ने उसे देखा। बोले, ''हे साधु! इस तावीज़ के विषय में मुझे विस्तार से बताओ। इससे आदमी सदाचारी कैसे हो जाता है?''

साधु ने समझाया,''महाराज! भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा में होता है, बाहर से नहीं होता। विधाता जब मनुष्य को बनाता है तब किसी की आत्मा में ईमान की कल फिट कर देता है और किसी की आत्मा में बेईमानी की। इस कल में से ईमान या बेईमानी के स्वर निकलते हैं, जिन्हें 'आत्मा की पुकार' कहते हैं। आत्मा की पुकार के अनुसार ही आदमी काम करता है। प्रश्न यह है कि जिनकी आत्मा से बेईमानी के स्वर निकलते हैं, उन्हें दबाकर ईमानदारी के स्वर कैसे निकाले जाएँ? मैं कई वर्षों से इसी के चिन्तन में लगा हूँ। अभी मैंने यह सदाचार का तावीज़ बनाया है। जिस

आदमी की भुजा पर यह बँधा होगा, वह सदाचारी हो जाएगा। मैंने कुत्ते पर भी प्रयोग किया है। यह तावीज़ गले में बाँध देने से कुत्ता भी रोटी नहीं चुराता। बात यह है कि तावीज़ में से भी सदाचार के स्वर निकलते हैं। जब किसी की आत्मा बेईमानी के स्वर निकालने लगती है, तब यह तावीज की शक्ति उस आत्मा का गला घोंट देती है और आदमी को तावीज़ के ईमान के स्वर सुनाई पड़ते हैं। वह इन स्वरों को आत्मा की पुकार समझकर सदाचार की ओर प्रेरित होता है। यही तावीज़ का गुण है, महाराज !''

दरबार में हलचल मच गई। दरबारी उठ–उठकर तावीज को देखने लगे।

राजा ने खुश होकर कहा, ''मुझे नहीं मालूम था कि मेरे राज्य में ऐसे चमत्कारी साधु भी हैं। महात्मन्! हम आपके बहुत आभारी हैं। आपने हमारा संकट हर लिया। हम सर्वव्यापी भ्रष्टाचार से बहुत परेशान थे। मगर हमें लाखों नहीं, करोड़ों तावीज़ चाहिए। हम राज्य की ओर से ताबिज़ों का एक कारखाना खोल देते हैं। आप उसके जनरल मैनेजर बन जाएँ और अपनी देख–रेख में बढ़िया तावीज़ बनवाएँ।''

एक मंत्री ने कहा, ''महाराज! राज्य क्यों झंझट में पड़े। मेरा तो निवेदन है कि साधु बाबा को ठेका दे दिया जाए। वे अपनी मंडली से तावीज़ बनवाकर राज्य को सप्लाई कर देंगे।''

राजा को यह सुझाव पसन्द आया। साधु को तावीज़ बनाने का ठेका दे दिया गया।उसी समय उन्हें पाँच करोड़ रुपये कारखाने के लिए पेशगी मिल गए।

राज्य के अखबारों में खबरें छपीं, ''सदाचार के तावीज़ की खोज! तावीज़ बनाने का कारखाना खुला!''

लाखों तावीज़ बन गए। सरकार के हुक्म से हर सरकारी कर्मचारी की भुजा पर एक–एक तावीज़ बाँध दिया गया।

भ्रष्टाचार की समस्या का ऐसा सरल हल निकल आने से राजा और दरबारी सब खुश थे। एक दिन राजा की उत्सुकता जागी। सोचा, ''देखें तो कि यह तावीज़ कैसे काम करता है।'' वह वेश बदलकर एक कार्यालय गए। उस दिन दो तारीख थी। एक दिन पहले ही तनख्वाह मिली थी।

वह एक कर्मचारी के पास गए और कोई काम बताकर उसे पाँच रुपये का नोट देने लगे। कर्मचारी ने उन्हें डाँटा,'' भाग जाओ यहाँ से, घूस लेना पाप है।''

राजा बहुत खुश हुए। तावीज ने कर्मचारी को ईमानदार बना दिया था। कुछ दिन बाद वे फिर वेश बदलकर उसी कर्मचारी के पास गए। उस दिन इकतीस तारीख थी– महीने का आखिरी दिन।

राजा ने फिर उसे पाँच का नोट दिखाया और उसने लेकर जेब में रख लिया। राजा ने उसका हाथ पकड़ लिया। बोले,'' मैं तुम्हारा राजा हूँ। क्या तुम आज सदाचार का तावीज नहीं बाँधकर आए?''

''बाँधा है, सरकार! यह देखिए।''

उसने आस्तीन चढ़ाकर तावीज़ दिखा दिया।

राजा असमंजस में पड़ गए। फिर ऐसा कैसे हो गया ?

उन्होंने तावीज़ पर कान लगाकर सुना। तावीज़ में से स्वर निकल रहे थे, ''अरे, आज इकतीस है। आज तो ले लो।''

अभ्यास

पाठ से

1. दरबारियों को भ्रष्टाचार क्यों दिखाई नहीं पड़ रहा था ?
2. विशेषज्ञों ने भ्रष्टाचार के बारे में राजा को क्या बताया ?
3. भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए विशेषज्ञों ने राजा को क्या सुझाव दिए।
4. भ्रष्टाचार मिटाने की योजना पढ़ने के बाद राजा की तबीयत क्यों खराब रहने लगी ?
5. साधु ने राजा को भ्रष्टाचार के बारे में क्या बताया ?
6. राजा ने ताबीज के प्रभाव को परखने के लिए क्या किया ?
7. राजा ने भ्रष्टाचार की तुलना ईश्वर से क्यों की ?

पाठ से आगे

5S8MNA

1. पाठ में उल्लेख किया गया है कि "भ्रष्टाचार सर्वत्र है, सर्वव्यापी है।" आप इस बात से कितना सहमत हैं? तर्क के साथ अपनी समझ को लिखिए।
2. क्या आपको लगता है कि ताबीज जैसे साधनों से भ्रष्टाचार खत्म किया जा सकता है? अगर हाँ तो कैसे और नहीं तो क्यों ?

3. हमारे देश अथवा राज्य में भ्रष्टाचार फैलने के क्या कारण आपको प्रतीत होते हैं ? साथियों से बातचीत कर अपनी समझ को लिखिए।
4. 'भ्रष्टाचार का नमूना' से आप क्या समझते हैं ? आपने अपने आस–पास किन रूपों में भ्रष्टाचार के नमूने या स्वरूप को देखा है। उक्त घटना या विषय पर अपने विचार लिखिए।

भाषा से

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए पाठ के उन अंशों को खोजिए जहाँ इनका प्रयोग हुआ है और फिर संदर्भ को समझते हुए अर्थ लिखिए –
   - छानबीन करना, हवाले करना, खलल पड़ना, उलट–फेर, असमंजस में पड़ना।
2. निम्नांकित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए–
   - मैं कल दरबार में जाऊँगा।
   - कल, साधु राजा से मिला।
   - विधाता किसी की आत्मा की ईमान में कल फिट कर देता है।

5SHIPX

उपर्युक्त वाक्य में रेखांकित शब्द 'कल' के तीन भिन्न अर्थ हैं। उसी प्रकार निम्नांकित समान उच्चारण वाले शब्दों के अर्थों को वाक्य में प्रयोग करते हुए स्पष्ट कीजिए –

पद, आम, अंक, सोना, कनक, खर

योग्यता विस्तार

1. भ्रष्टाचार को समाप्त करने के आप सभी के पास कौन–कौन से नायाब तरीके हैं। आपस में बात कर अपने सुझाव को विस्तार से लिखिए।
2. व्यंग्य रचना क्या होती है ? यह साहित्य की अन्य विधाओं से कैसे भिन्न और मजेदार होती है? इस विषय पर शिक्षक से बातचीत कर किसी अन्य व्यंग्य विधा की रचना को खोज कर पढ़िए।

5SRERK

पाठ 7

रात का मेहमान

–संकलित

5T1AT8

आजाद भारत के सपने को सच करने के लिए भारत के अनेकों युवाओं ने अपने प्राणों की बाजी लगायी। अपना सर्वस्व राष्ट्र की बलिवेदी पर होम कर दिया। ऐसे ही अमर क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद रहे, जिनकी हर साँस में देश और देशवासियों के प्रति प्रेम और उत्सर्ग की भावना कूट–कूट कर भरी थी। प्रस्तुत कहानी में आजाद के व्यक्तित्व के दो पहलू दिखते हैं, जहाँ एक ओर वे ब्रिटिश सरकार को चकमा देते हुए उससे लोहा लेते हैं तथा उसी शासन में उनके नाक के नीचे क्रांतिकारी गतिविधियों को अंजाम देते हैं वहीं दूसरी ओर 'कल्पना' जैसी प्रतिभाशाली छात्रा के संघर्ष और विपन्नता को समझते हुए नोटों से भरा ब्रीफकेस उसे थमा कर अँधेरे में गुम हो जाते हैं।

सन् 1920 ई. के शान्ति आन्दोलन के बाद भारतीय क्रांतिकारियों ने 9 अगस्त, 1925 की रात को पहला धमाका किया, लखनऊ के निकट काकोरी में। उन्होंने तत्कालीन 8 डाउन ट्रेन से जाता हुआ सरकारी खज़ाना लूट लिया। इस घटना से ब्रिटिश सरकार काँप उठी। क्रान्तिकारियों को पकड़ने के लिए गुप्तचरों को आदेश दिए गए। गिरफ्तारियाँ हुईं। तिल का ताड़ बनाया गया। बहुतों को फाँसी के फंदे नसीब हुए तो कइयों को आजन्म काला पानी। वर्षों का ठोस क्रान्तिकारी संगठन मिनटों में छिन्न–भिन्न हो गया। एक के बाद दूसरा क्रांतिकारी, ब्रिटिश गुप्तचर विभाग की नजरों का शिकार होता ही गया। किन्तु उनके सेनापति चंद्रशेखर आज़ाद, फरारी की हालत में भी ब्रिटिश सत्ता से डटकर लोहा ले रहे थे।

उन्हीं दिनों की बात है। फरवरी सन् 1930 का प्रथम सप्ताह। जाड़ा अपने अंतिम जोश में था। बारिश तेज़ थी। रात दस बजे लखनऊ चारबाग स्टेशन पर यात्रियों से अधिक तो पुलिसवाले ही थे, लेकिन चार–छह वर्दीधारी ही दिखाई दे रहे थे। बाकी सब सादे लिबास में थे। ठीक सवा दस बजे देहरादून एक्सप्रेस प्लेटफार्म नंबर एक पर आकर रुकी। मुखबिर ने सूचना दी थी कि 'आज़ाद' इसी गाड़ी से बनारस जाएँगे। उन्हें बीच में ही धर दबोचने के इरादे से पुलिसवालों ने गाड़ी का एक–एक डिब्बा छान मारा, लेकिन चंद्रशेखर 'आज़ाद' का पता न चला।

गाड़ी छूटने से थोड़ी देर पहले एक गुप्तचर दौड़ता हुआ पुलिस अफसर के पास आया और हाँफते हुए बोला कि 'आज़ाद' तो एक साहब बहादुर के वेश में बाहर निकल गए। इंसपेक्टर के चौंकने पर उसने गेट से लाया प्रथम श्रेणी का एक टिकट भी उनके आगे बढ़ा दिया जो देहरादून से बनारस तक का था – पुलिस को चकमा देने के इरादे से 'आज़ाद' बीच में उतर पड़े थे। टिकट के पीछे लिखा था – "मुझे जीवित पकड़ना असंभव है।" – आज़ाद।

अब तो अफसर को काटो तो खून नहीं। फौरन सबको इकट्ठा करके 'आज़ाद' का पीछा करने की ठानी।

हाथ में अटैची लिए 'आज़ाद' खरामा–खरामा चलकर लाटूश रोड पर आए। तभी उन्होंने पीछे मुड़कर देखा, पुलिस के बहुत से जवान दौड़ते हुए, उसी ओर आ रहे थे। बाँसमंडी चौराहे से वे तुरंत लाल कुएँ की ओर मुड़े। चलने की रफ़्तार और तेज़ कर दी। फिर ह्वीवेट रोड पर आते–आते एक सँकरी गली में मुड़े। तीन–चार मकान छोड़कर सहसा उनके हाथ की थपकियाँ दाहिनी ओर के दरवाजे पर पड़ने लगीं।

क्षणभर में एक बुढ़िया ने कुंडी खोलते हुए पूछा, "कौन ?"

"बहुत भीग गया हूँ। बारिश थमने तक शरण चाहता हूँ।"

टिमटिमाते हुए दीये की रोशनी 'आज़ाद' के चेहरे पर पड़ी। "अंदर आ जाओ, बेटा", कहकर बुढ़िया ने दरवाजा खोल दिया। मकान में दाखिल होते ही 'आज़ाद' ने झट कुंडी बंद कर दी। फिर आँगन पार करके दोनों अंदर आए। तख्त पर बैठने का इशारा करके बुढ़िया ने दीया वहीं दीवट पर रख दिया और कमरे से धोती निकाली। धोती जनानी थी। देखते ही उन्हें हँसी आ गई।

"बिटिया की है। घर में कोई मर्द तो है नहीं" बुढ़िया ने कहा।

'आज़ाद' चुप रहे। केवल तौलिया ही इस्तेमाल में लाए।

"क्या नाम है तुम्हारा?" बुढ़िया ने बड़े स्नेह से पूछा।

"जीवन में कभी झूठ तो बोला नहीं, और सच बोलने की इस समय इच्छा नहीं है", आज़ाद बोले।

"क्यों ? सच बोलने में क्या डर है ? जो भी हो, सच कहो।"

"चंद्रशेखर आज़ाद।'' 'आज़ाद' ने कहा।

''जो फरार है,। वही 'आज़ाद', जिसकी जिंदा या मुर्दा गिरफ्तारी के लिए सरकार ने पंद्रह हजार रुपयों का इनाम घोषित किया है" बुढ़िया चौंकी।

"जी, वही।"

"तुम्हारा अपराध ?"

"देशभक्ति। मैं किसी भारतीय को रोटी, कपड़ा और मकान के लिए दर–दर भटकते नहीं देख सकता। अँग्रेजी शासन अब सहन नहीं होता। भारत माँ के पैरों में पड़ी बेड़ियों को तोड़ने का संकल्प लिया है मैंने। बस, यही अपराध है मेरा।" 'आज़ाद' आवेश में कहते गए।

"धन्य है तुम्हारा संकल्प ! धन्य है वह माँ, जिसकी कोख ने ऐसा लाल जन्मा। तुम्हारे दर्शन पाकर मैं धन्य हुई।"

'आज़ाद' ने बुढ़िया को उस टिमटिमाते हुए दीये की रोशनी में गौर से देखा। उसकी आयु पचास से ऊपर होगी। उसके तेजस्वी मुख और निश्छल नेत्रों से लगा कि वह किसी कुलीन परिवार की पढ़ी–लिखी निर्धन महिला है।

तभी अचानक बुढ़िया को खाँसी का दौरा उठा। ऊपर कमरे में से निकलकर कोई तेजी से जीने की ओर लपका। 'आज़ाद' वहीं कोने में छिप गए। वह बुढ़िया की इकलौती बेटी कल्पना थी। ऊपर कमरे में बैठी पढ़ रही थी। माँ को उठा दौरा सुनकर तुरंत भागी–भागी नीचे आई और उनकी पीठ सहलाने लगी। फिर कटोरी में दो घूँट पानी पीने को दिया। स्वस्थ होकर बुढ़िया भौंचक्की–सी इधर–उधर देखने लगी। लड़की सहम गई। पूछा–"क्या है माँ ? किसे देख रही हो?"

"वह कहाँ गया, जो अभी मुझसे बातें कर रहा था ?"

कल्पना ने 'आज़ाद' की ओर देखा और माँ से पूछा, "ये कौन हैं, माँ ?"

"रात का मेहमान। बड़ा योग्य और समझदार व्यक्ति है।"

"योग्य और समझदार हूँ, तभी तो सारे दिन से भूखा हूँ" 'आज़ाद' ने सहज भाव से कहा।

"अरे बेटी, मैं तो भूल ही गई। इन्हें कुछ खिलाओ–पिलाओ," बुढ़िया ने कहा।

एक साफ–सुथरी काँसे की थाली में पराँठे और दही–बूरा लेकर कल्पना आई और उसे वहीं तिपाई पर रख दिया। हाथ धोकर 'आज़ाद' खाने बैठे, तो एक–एक पराठे के दो–दो कौर बनाकर खाने लगे। कल्पना को हँसी आ गई।

"भूख में ऐसा ही होता है। तुम कभी भूखी रही हो ?" 'आज़ाद' ने पूछा।

"हमारे लिए भूखे रहना कोई नई बात नहीं है। वैसे आधे पेट तो अक्सर ही रहते हैं।"

"फिर भी रात बारह–बारह बजे तक पढ़ना।"

"परीक्षा निकट है।"

"किस कक्षा में पढ़ती हो ?"

"एम. ए. द्वितीय वर्ष में।"

"विषय क्या है तुम्हारा ?"

"संस्कृत।"

"शाबाश ! संस्कृत पढ़ती हो तभी तो आधे पेट रहती हो।"

खाना खाने के बाद 'आज़ाद' ने दो लोटे ठंडा जल पिया। कल्पना ऊपर पढ़ने चली गई। बुढ़िया ने बताया कि कल्पना बीस रुपए मासिक की ट्यूशन करती है। उसी में किसी तरह गुजर–बसर हो जाती है। उसकी शादी भी करनी है। लड़का तो है नज़र में, लेकिन पैसे की समस्या मुँह बाये खड़ी है।

वातावरण में कुछ उदासी–सी छा गई। तभी जी.पी.ओ. की घड़ी ने टन्–टन् करके रात के दो बजाए। 'आज़ाद' ने जाना चाहा। बुढ़िया ने कभी–कभी मिलते रहने के लिए कहा।

आज़ाद ने फिर आने का वचन दिया और कल्पना को बुलाने के लिए कहा। वह अभी तक पढ़ रही थी। माँ की आवाज़ सुनकर वह तुरंत नीचे आई और बोली, "बाणभट्ट की कादंबरी पढ़ रही थी। बड़ी कठिन रचना है।"

"संसार में कोई काम कठिन नहीं। मन लगाकर पढ़ो और प्रथम श्रेणी लाओ। यही मेरा आशीर्वाद है।" 'आज़ाद' ने कहा।

"आप सबके आशीर्वाद से प्रथम तो सदा आई हूँ। इस बार भी आ सकती हूँ।"

"अच्छा, तो ये लो अपने प्रथम आने का इनाम"– कहकर 'आजाद' ने ब्रीफकेस कल्पना के हाथ में थमा दिया और वे बुढ़िया को प्रणामकर तुरंत वहाँ से चल दिए।

कल्पना ने ब्रीफकेस खोला। उसमें भरे थे सैकड़ों रुपये के नोट, शायद कल्पना के विवाह के लिए।

रुपये लेकर वृद्धा दरवाजे की ओर झपटी। 'आज़ाद' जा चुके थे। बारिश ने और भी भयंकर रूप धारण कर लिया था।

अँधेरे में ताकती वृद्धा न जाने क्या सोच रही थी ?

टिप्पणी– क्रांतिवीर चन्द्रशेखर 'आज़ाद' का जन्म मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले के भाभरा नामक गाँव में हुआ था। उनके पिताजी एक बहुत साधारण–सा काम करते थे। चन्द्रशेखर की प्रारम्भिक शिक्षा भाभरा में ही हुई। आगे की शिक्षा के लिए वे वाराणसी (बनारस) गए। वहाँ वे स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने लगे। एक बार किसी सत्याग्रह में वे पकड़ लिए गए। मजिस्ट्रेट ने उनसे पूछा, " तुम्हारा क्या नाम है ? "

चन्द्रशेखर बोले, "आज़ाद।"

"तुम्हारे पिताजी का क्या नाम है? "

"स्वतंत्र।"

"तुम्हारा निवास कहाँ है?"

"जेलखाना।'

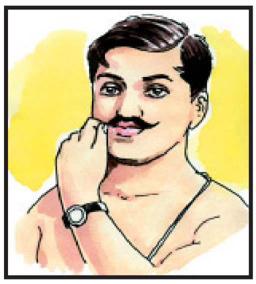

न्यायाधीश इन प्रश्नों के उत्तर सुनकर बिगड़ गया। उसने उन्हें पन्द्रह बेंत मारने की सजा दी।

उन्हें पंद्रह बेंत लगाए गए। हर बेंत पर उन्होंने आवाज बुलंद की 'भारत माता की जय'। वे तभी से क्रांतिकारियों के संगठन में शामिल हो गए। अंत में इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में पुलिस से उनकी मुठभेड़ हुई। उनकी पिस्तौल में एक गोली बची थी। वह उन्होंने अपनी कनपटी में मारकर अपना जीवन समाप्त कर लिया। अल्फ्रेड पार्क में उनकी समाधि बनी है। वह पार्क अब 'आज़ाद पार्क' हो गया है।

अभ्यास

पाठ से

1. चन्द्रशेखर आजाद के बारे में आप क्या जानते हैं ?
2. क्रांतिकारियों ने 09 अगस्त 1925 की रात क्या किया ?
3. पुलिस को चकमा देने के लिए आजाद ने क्या किया ?
4. बुजुर्ग स्त्री के पूछे जाने पर आजाद ने अपना क्या अपराध बताया और आपकी नजर में क्या वह अपराध था ?
5. मजिस्ट्रेट द्वारा पूछने पर चन्द्रशेखर आजाद ने अपना क्या परिचय दिया ?
6. आजाद का अपराध जानने के बाद वृद्ध स्त्री के मन में आजाद के प्रति क्या भाव उत्पन्न हुए ?

पाठ से आगे

5TA6UV

1. अगर वह वृद्ध स्त्री चंद्रशेखर आजाद के बारे में पुलिस को सूचना दे देती तो क्या होता? लिखिए।
2. यदि चंद्रशेखर आजाद की जगह आप होते तो रुपयों से भरे ब्रीफकेस का क्या करते ?
3. 'शाबाश ! संस्कृत पढ़ती हो तभी तो आधे पेट रहती हो' आजाद द्वारा ऐसा कहे जाने के पीछे क्या कारण आपको लगते हैं ?
4. आजाद एक–एक पराठे के दो–दो कौर बनाकर खा रहे थे। आपको जब जोरों की भूख लगती है, तो आप क्या–क्या करते हैं ?

भाषा से

5TJ2HI

1. • "बिटिया की है। घर में कोई मर्द तो है नहीं" वृद्ध स्त्री ने कहा।
   • पुलिस को चकमा देने के इरादे से 'आजाद' बीच में ही उतर पड़े थे।

उपर्युक्त दोनों वाक्यों में इकहरे और दुहरे उद्धरण चिह्न (' ' एवं " ") का प्रयोग हुआ है। बुजुर्ग स्त्री द्वारा कही गई बात को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करते हुए दुहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग हुआ है वहीं आजाद उपनाम के लिए इकहरा उद्धरण चिह्न प्रयुक्त हुआ है।

अर्थात् किसी के द्वारा कहे गए कथन या किसी महापुरुष की बात (आप्त वाक्य) को यथावत प्रस्तुत करने पर दुहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है वहीं किसी संज्ञा, नाम अथवा उपनाम के लिए इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है। पाठ में उपर्युक्त दोनों प्रकार के प्रयुक्त उद्धरण चिह्नों को पहचान कर रेखांकित कीजिए।

2. पाठ में प्रयुक्त हुए उर्दू भाषा के निम्नलिखित शब्दों के लिए हिंदी के समान अर्थ वाले शब्दों को ढूँढ़कर या पूछ कर लिखिए–

   सज़ा, आवाज़, शामिल, दरवाज़े, नज़र, फ़रार, लिबास, ख़ून, जोश, रफ़्तार।

3. अनौपचारिक पत्राचार उनके साथ किया जाता है, जिनसे हमारा व्यक्तिगत, पारिवारिक अथवा भावनात्मक संबंध होता है। इसे व्यक्तिगत पत्राचार भी कहा जाता है। इसलिए इन पत्रों में व्यक्तिगत सुख, दुःख, आशा अपेक्षा, निराशा का भावात्मक अंकन होता है। ये पत्र अपने परिवार के लोगों, मित्रों, और निकट संबंधियों को लिखे जाते हैं। इनके तीन प्रमुख भाग होते हैं –

   शीर्ष भाग – इसमें अपना पता, दिनाँक, संबोधन वाक्य आते हैं।

   मध्य भाग – इस भाग में संदेश अथवा कथ्य रहता है।

   अन्त्य भाग – इसमें स्वनिर्देश के अंतर्गत अपना नाम, हस्ताक्षर और पता रहता है तथा आवश्यकतानुसार पत्र पाने वाले का नाम पता बाईं ओर लिखते हैं।

   आप अपने छोटे भाई अथवा बहन को एक पत्र लिखिए जिसमें क्रांतिकारियों की भूमिका का संक्षेप में वर्णन हो।

योग्यता विस्तार

1. स्वतंत्रता आन्दोलन में बलिदान देने वाले शहीदों के जीवन प्रसंगों पर कक्षा–कक्ष में चर्चा कीजिए।
2. आजकल देश में जहाँ एक ओर नक्सलवाद है वहीं दूसरी ओर आतंकवाद व अलगाववाद की घटनाएँ भी देखने–सुनने को मिलती हैं। इन नक्सलियों, आतंकवादियों व अलगाववादियों और राष्ट्र के लिए आहुति देने वाले क्रांतिकारी के संगठन में क्या फर्क है। चर्चा कर प्रमुख विचारों को लिखिए।
3. आजाद ने नोटों से भरा जो ब्रीफकेस कल्पना को दिया, वह संगठन के कार्यों के उपयोग के लिए एकत्रित किया गया धन था। उस धन को आजाद ने व्यक्ति विशेष के हित के लिए दिया था। उनका यह कार्य क्या उचित था? अपने विचार तर्क सहित लिखिए।

5TSXY6

पाठ 8

भिखारिन

– गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर

5U2TZT

प्रस्तुत कहानी एक पुत्रवत्सला दिव्यांग भिखारिन के विश्वास के छले जाने और संघर्ष की संवेदनशील रचना है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ने मानव चरित्र के कई परतों को इस कहानी में संवेदनशीलता के साथ रखा है। एक भिखारिन अपने जीवन की समस्त पूंजी द्वारा अपने पालित पुत्र को रोगमुक्त करने के लिए खर्च करना चाहती है, लेकिन समाज का धनवान और धर्म कर्म में प्रसिद्ध सेठ उसके भीख से संचित धन को लौटाने में छल करता है। 'संतान की पहचान' कहानी को एक निर्णायक मोड़ देती है और पाठकों को मानव चरित्र को समझने और पहचानने का बोध भी देती है। एक सेठ भिखारिन के पाँवों पर क्यों गिर पड़ता है ? वह क्यों यह कहने को विवश है कि 'ममता की लाज रख लो, आखिर तुम भी तो उसकी माँ हो।' कहानी की मार्मिकता को पाठक इन पंक्तियों में शिद्दत से महसूस कर सकते हैं कि–'उसके नेत्रों से अश्रु बह रहे थे, किन्तु वह भिखारिन होते हुए भी सेठ से महान थी इस समय सेठ याचक था और वह दाता थी।'

अंधी प्रतिदिन मंदिर के दरवाजे पर जाकर खड़ी होती, दर्शन करनेवाले बाहर निकलते तो अपना हाथ फैला देती और नम्रता से बोलती–"बाबू जी, अंधी पर दया हो जाय।"

वह जानती थी कि मंदिर में आनेवाले सहृदय और दयालु हुआ करते हैं। उसका यह अनुमान असत्य न था। आने–जाने वाले दो–चार पैसे उसके हाथ पर रख ही देते थे। अंधी उनको दुआएँ देती और उनकी सहृदयता को सराहती। स्त्रियाँ भी उसके पल्ले में थोड़ा–बहुत अनाज डाल जाया करती थीं।

सुबह से शाम तक वह इसी प्रकार हाथ फैलाए खड़ी रहती। उसके पश्चात् मन–ही–मन भगवान को प्रणाम करती और अपनी लाठी के सहारे झोंपड़ी की राह पकड़ती। उसकी झोंपड़ी नगर से बाहर थी। रास्ते में भी वह याचना करती

जाती, किन्तु राहगीरों में अधिक संख्या श्वेत वस्त्र वालों की होती, जो पैसे देने की अपेक्षा झिड़कियाँ दिया करते हैं। तब भी अंधी निराश न होती और उसकी याचना बराबर जारी रहती। झोंपड़ी तक पहुँचते–पहुँचते उसे दो–चार पैसे और मिल ही जाते। झोंपड़ी के समीप पहुँचते ही एक दस वर्ष का लड़का उछलता–कूदता आता और उससे लिपट जाता। अंधी टटोलकर उसके मस्तिष्क को चूम लेती।

बच्चा कौन है? किसका है? कहाँ से आया? इस बात से कोई परिचित नहीं था। पाँच वर्ष हुए पास–पड़ोस वालों ने उसे अकेला देखा था। इन्हीं दिनों एक दिन संध्या समय, लोगों ने उसकी गोद में एक बच्चा देखा, वह रो रहा था। अंधी उसका मुख चूम–चूमकर उसे चुप करने का प्रयत्न कर रही थी। यह कोई असाधारण घटना न थी, अतः किसी ने भी न पूछा कि बच्चा किसका है। उसी दिन से वह बच्चा अंधी के पास था और प्रसन्न था। उसको वह अपने से अच्छा खिलाती और पहनाती।

अंधी ने अपनी झोंपड़ी में एक हाँड़ी गाड़ रखी थी। दिनभर जो कुछ माँगकर लाती, उसमें डाल देती और उसे किसी वस्तु से ढँक देती, ताकि दूसरे व्यक्तियों की दृष्टि उस पर न पड़े। खाने के लिए अन्न काफी मिल जाता था। उससे काम चलाती। पहले बच्चे को पेट भरकर खिलाती, फिर स्वयं खाती। रात को बच्चे को अपने वक्ष से लगाकर वहीं पड़ी रहती। प्रातःकाल होते ही उसको खिला–पिलाकर फिर मंदिर के द्वार पर जा खड़ी होती।

काशी में सेठ बनारसी दास बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति थे। बच्चा–बच्चा उनकी कोठी से परिचित था। वे बहुत बड़े देवभक्त और धर्मात्मा थे। धर्म पर उनकी बड़ी श्रद्धा थी। दिन के बारह बजे तक वे स्नान–ध्यान में संलग्न रहते थे। उनकी कोठी पर हर समय भीड़ लगी रहती थी। कर्ज के इच्छुक तो आते ही थे, परन्तु ऐसे व्यक्तियों का भी ताँता बँधा रहता जो अपनी पूँजी सेठ जी के पास धरोहर रूप में रखने आते थे। सैकड़ों भिखारी अपनी जमा पूँजी इन्हीं सेठ जी के पास जमा कर जाते थे। अन्धी को भी यह बात ज्ञात थी, किंतु पता नहीं कि अब तक वह अपनी कमाई यहाँ जमा कराने में क्यों हिचकिचाती रही।

उसके पास काफी रुपये हो गए थे, हाँड़ी लगभग पूरी भर गई थी। उसको शंका थी कि कोई उसको चुरा न ले। एक दिन संध्या समय अंधी ने वह हाँड़ी उखाड़ी और अपने फटे हुए आँचल में छुपाकर सेठ जी की कोठी पर जा पहुँची।

सेठ जी बहीखाते के पृष्ठ उलट रहे थे। उन्होंने पूछा, "क्या है, बुढ़िया ?"

अंधी ने हाँड़ी उनके आगे सरका दी और डरते–डरते कहा–"सेठ जी, इसे अपने पास जमा कर लीजिए, मैं अंधी, अपाहिज कहाँ रखती फिरूँगी ?"

सेठ जी ने हाँड़ी की ओर देखकर कहा–"इसमें क्या है?" अंधी ने उत्तर दिया– "भीख माँगकर अपने बच्चे के लिए दो–चार पैसे इकट्ठे किए हैं; अपने पास रखते डरती हूँ। कृपया इन्हें आप अपनी कोठी में रख लें।" सेठ जी ने मुनीम की ओर संकेत करते हुए कहा–"बही में जमा कर

लो।" फिर बुढ़िया से पूछा—"तेरा नाम क्या है ?" अंधी ने अपना नाम बताया, मुनीम जी ने नकदी गिनकर, उसके नाम से जमा कर ली। अंधी सेठ जी को आशीर्वाद देती हुई अपनी झोंपड़ी में चली गई।

दो वर्ष बहुत सुखपूर्वक बीते। इसके पश्चात् एक दिन लड़के को ज्वर ने आ दबाया। अंधी ने दवा—दारू की, वैद्य—हकीमों से उपचार कराया, परंतु सम्पूर्ण प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध हुए। लड़के की दशा दिन—प्रतिदिन बुरी होती गई। अंधी का हृदय टूट गया; साहस ने जवाब दे दिया; वह निराश हो गई। परंतु फिर ध्यान आया कि संभवतः डॉक्टर के इलाज से फायदा हो जाए। इस विचार के आते ही वह गिरती—पड़ती सेठ जी की कोठी पर जा पहुँची। सेठ जी उपस्थित थे।

अंधी ने कहा—"सेठ जी, मेरी जमा पूँजी में से दस—पाँच रुपये मुझे मिल जाएँ तो बड़ी कृपा हो। मेरा बच्चा मर रहा है, डॉक्टर को दिखाऊँगी।"

सेठ जी ने कठोर स्वर में कहा—"कैसी जमा पूँजी ? कैसे रुपये ? मेरे पास किसी के रुपये जमा नहीं हैं।" अंधी ने रोते हुए उत्तर दिया—"दो वर्ष हुए, मैं आपके पास धरोहर रूप में रखकर गई थी। दे दीजिए, बड़ी दया होगी।"

सेठ जी ने मुनीम की ओर रहस्यमयी दृष्टि से देखते हुए कहा—"मुनीम जी, जरा देखना तो, इसके नाम की कोई पूँजी जमा है क्या ? तेरा नाम क्या है री?"

अंधी की जान में जान आई, आशा बँधी। पहला उत्तर सुनकर उसने सोचा कि यह सेठ बेईमान है किंतु अब सोचने लगी कि संभवतः इसे ध्यान न रहा होगा। ऐसा धर्मात्मा व्यक्ति भी भला कहीं झूठ बोल सकता है ! उसने अपना नाम बता दिया। मुनीम ने सेठ जी का संकेत समझ लिया था, बही के पृष्ठ उलट—पुलटकर देखा। फिर कहा—"नहीं तो, इस नाम पर एक पाई भी जमा नहीं है।"

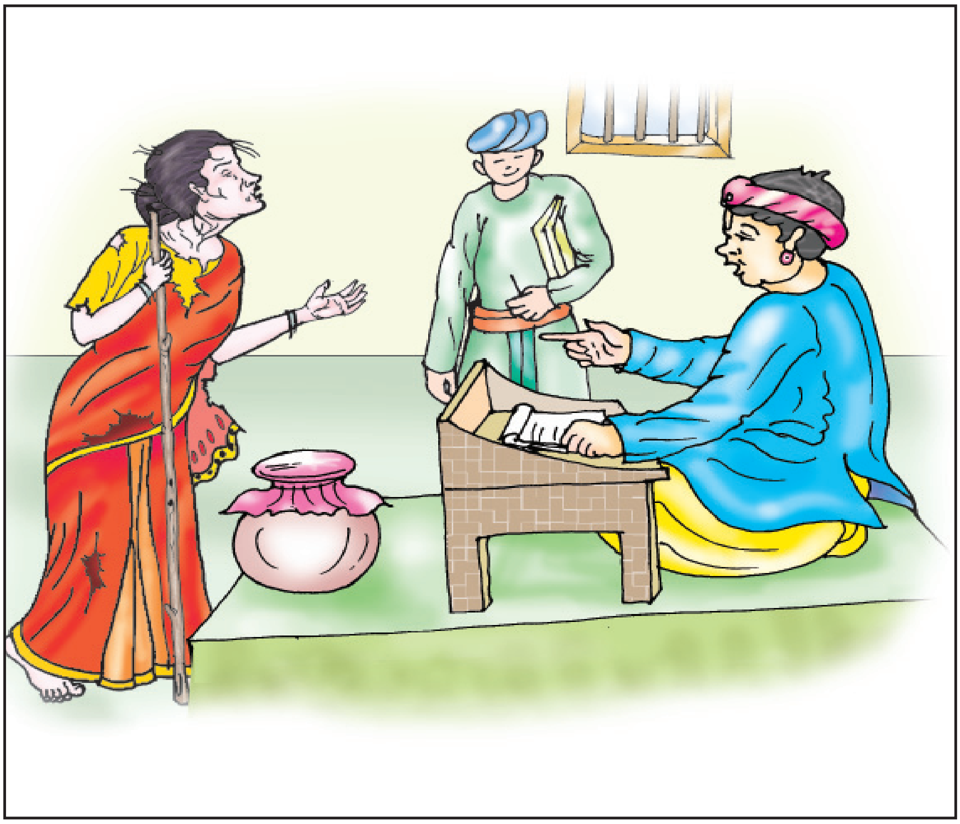

अंधी वहीं जमी बैठी रही। उसने रो—रोकर कहा—"सेठ जी ! परमात्मा के नाम पर, धर्म के नाम पर, कुछ दे दीजिए। मेरा बच्चा जी जाएगा। मैं जीवन भर आपके गुण गाऊँगी।"

परन्तु पत्थर में जोंक न लगी। सेठ जी ने क्रुद्ध होकर उत्तर दिया–"जाती है या नौकर को बुलाऊँ।" अंधी लाठी टेककर खड़ी हो गई और सेठ जी की ओर मुख करके बोली– "अच्छा! भगवान तुम्हें बहुत दे।" और अपनी झोंपड़ी की ओर चल दी।

यह आशीष न थी बल्कि एक दुखिया का श्राप था। बच्चे की दशा बिगड़ती गई, दवा–दारू हुई ही नहीं, फायदा क्यों कर होता? एक दिन उसकी दशा बड़ी चिंताजनक हो गई, प्राणों के लाले पड़ गए, उसके जीवन से अंधी भी निराश हो गई। सेठ जी पर रह–रहकर उसे क्रोध आता था। इतना धनी व्यक्ति है, दो–चार रुपये दे ही देता तो क्या चला जाता और फिर मैं उससे कुछ दान नहीं माँग रही थी, अपने ही रुपये माँगने गई थी। सेठ जी से उसे घृणा हो गई।

बैठे–बैठे उसको कुछ ध्यान आया। उसने बच्चे को अपनी गोद में उठा लिया और ठोकरें खाती, पड़ती सेठ जी के पास पहुँची और उनके द्वार पर धरना देकर बैठ गई। बच्चे का शरीर ज्वर से भभक रहा था और अंधी का कलेजा भी।

एक नौकर किसी काम से बाहर आया। अंधी को बैठी देखकर उसने सेठ जी को सूचना दी। सेठ जी ने आज्ञा दी कि उसे भगा दो।

नौकर ने अंधी को चले जाने को कहा, किंतु वह उस स्थान से न हिली। मारने का भय दिखाया, पर वह टस–से–मस न हुई। नौकर ने फिर अंदर जाकर कहा कि वह नहीं टलती।

सेठ जी स्वयं बाहर पधारे। देखते ही पहचान गए। बच्चे को देखकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ कि उसकी शक्ल–सूरत, उनके मोहन से बहुत मिलती–जुलती है। सात वर्ष हुए जब मोहन किसी मेले में खो गया था। उसकी बहुत खोज की पर उसका कोई पता न मिला। उन्हें स्मरण हो आया कि मोहन की जाँघ पर लाल रंग का चिह्न था। इस विचार के आते ही उन्होंने अंधी की गोद के बच्चे की जाँघ देखी। चिह्न अवश्य था, परंतु पहले से कुछ बड़ा। उनको विश्वास हो गया कि बच्चा उन्हीं का मोहन है। उन्होंने तुरंत उसको छीनकर अपने

कलेजे से चिपटा लिया। शरीर ज्वर से तप रहा था। नौकर को डॉक्टर लेने को भेजा और स्वयं मकान के अंदर चल दिए।

अंधी खड़ी हो गई और चिल्लाने लगी–"मेरे बच्चे को न ले जाओ; मेरे रुपये तो हजम कर गए,अब क्या मेरा बच्चा भी मुझसे छीनोगे ?"

सेठ जी बहुत चिंतित हुए और बोले–"बच्चा मेरा है; यही एक बच्चा है; सात वर्ष पूर्व कहीं खो गया था। अब मिला है, अब इसको नहीं जाने दूँगा और लाख यत्न करके भी इसके प्राण बचाऊँगा।"

अंधी ने जोर का ठहाका लगाया–"तुम्हारा बच्चा है, इसलिए लाख यत्न करके भी उसे बचाओगे। मेरा बच्चा होता तो उसे मर जाने देते, क्यों ? यह भी कोई न्याय है ? इतने दिनों तक खून–पसीना एक करके उसको पाला है। मैं उसको अपने हाथ से नहीं जाने दूँगी।"

सेठ जी की अजीब दशा थी। कुछ करते–धरते नहीं बनता था। कुछ देर वहीं मौन खड़े रहे, फिर मकान के अंदर चले गए। अंधी कुछ समय तक खड़ी रोती रही, फिर वह भी अपनी झोंपड़ी की ओर चल दी।

दूसरे दिन प्रातःकाल प्रभु की कृपा हुई या दवा ने अपना जादू का सा प्रभाव दिखाया कि मोहन का ज्वर उतर गया। होश आने पर उसने आँखें खोलीं, तो सर्व प्रथम शब्द उसकी जबान से निकला–''माँ''। चारों ओर अपरिचित शक्लें देखकर उसने अपने नेत्र फिर बंद कर लिए। उस समय से उसका ज्वर फिर अधिक होना आरम्भ हो गया। माँ–माँ की रट लगी हुई थी, डॉक्टरों ने जवाब दे दिया, सेठ जी के हाथ–पाँव फूल गए, चारों ओर अँधेरा दिखाई पड़ने लगा।

"क्या करूँ, एक ही बच्चा है? इतने दिनों बाद मिला भी तो मृत्यु उसको अपने चंगुल में दबा रही है; इसे कैसे बचाऊँ ?"

सहसा उनको अंधी का ध्यान आया। पत्नी को बाहर भेजा कि देखो कहीं वह अब तक द्वार पर न बैठी हो। परंतु वह यहाँ कहाँ ? सेठ जी ने घोड़ागाड़ी तैयार कराई और बस्ती से बाहर उसकी झोंपड़ी पर पहुँचे। झोंपड़ी बिना द्वार के थी, अंदर गए। देखा कि अंधी एक फटे–पुराने टाट पर पड़ी है और उसके नेत्रों से अश्रुधारा बह रही है। सेठ जी ने धीरे–से उसको हिलाया। उसका शरीर भी अग्नि की भाँति तप रहा था।

सेठ जी ने कहा–"बुढ़िया ! तेरा बच्चा मर रहा है; डॉक्टर निराश हो गए हैं, रह–रहकर वह तुझे पुकारता है। अब तू ही उसके प्राण बचा सकती है। चल और मेरे...........नहीं, नहीं अपने बच्चे की जान बचा ले।" अंधी ने उत्तर दिया–"मरता है तो मरने दो, मैं भी मर रही हूँ। हम दोनों स्वर्ग–लोक में फिर माँ–बेटे की तरह मिल जाएँगे। इस लोक में सुख नहीं है। वहाँ मेरा बच्चा सुख

में रहेगा। मैं वहाँ उसकी सुचारु रूप से सेवा–सुश्रुषा करूँगी।" सेठ जी रो दिए। आज तक उन्होंने किसी के सामने सिर न झुकाया था, किन्तु इस समय अंधी के पाँवों पर गिर पड़े और रो–रोकर बोले–"ममता की लाज रख लो, आखिर तुम भी उसकी माँ हो। चलो, तुम्हारे चलने से वह बच जायगा।"

ममता शब्द ने अंधी को विकल कर दिया। उसने तुरंत कहा–"अच्छा चलो।"

सेठ जी सहारा देकर उसे बाहर लाए और घोड़ागाड़ी पर बिठा दिया। गाड़ी घर की ओर दौड़ने लगी। उस समय सेठ और अंधी भिखारिन दोनों की एक ही दशा थी। दोनों की यही इच्छा थी कि शीघ्र–से–शीघ्र अपने बच्चे के पास पहुँच जाएँ।

कोठी आ गई; सेठ जी ने सहारा देकर अंधी को उतारा और अंदर ले जाकर मोहन की चारपाई के समीप उसको खड़ा कर दिया। उसने टटोलकर मोहन के माथे पर हाथ फेरा। मोहन पहचान गया कि यह उसकी माँ का हाथ है। उसने तुरंत नेत्र खोल दिए और उसे अपने समीप खड़े हुए देखकर कहा–"माँ, तुम आ गईं।"

अंधी ने स्नेह से भरे हुए स्वर में उत्तर दिया–"हाँ बेटा, तुम्हें छोड़कर कहाँ जा सकती हूँ।" अंधी भिखारिन मोहन के सिरहाने बैठ गई और उसने उसका सिर अपनी गोद में रख लिया। मोहन को बहुत सुख अनुभव हुआ और वह उसी की गोद में सो गया।

दूसरे दिन से मोहन की दशा अच्छी होने लगी और दस–पंद्रह दिनों में वह बिल्कुल स्वस्थ हो गया। जो काम हकीमों के जोशांदे, वैद्यों की पुड़ियाँ और डॉक्टर की दवाइयाँ न कर सकीं थीं, वह अंधी की स्नेहमयी सेवा ने पूरा कर दिया।

मोहन के पूरी तरह स्वस्थ हो जाने पर अंधी ने विदा माँगी। सेठ जी ने बहुत कुछ कहा–सुना कि वह उन्हीं के पास रह जाए, परंतु वह सहमत न हुई। विवश होकर विदा करना पड़ा। जब वह चलने लगी तो सेठ जी ने रुपयों की एक थैली उसके हाथों में दे दी। अंधी ने पूछा, "इसमें क्या है?"

सेठ जी ने कहा–"इसमें तुम्हारी धरोहर है, तुम्हारे रुपये। मेरा वह अपराध............"

अंधी ने बात काटकर कहा–"यह रुपये तो मैंने तुम्हारे मोहन के लिए ही इकट्ठे किए थे, उसी को दे देना।"

अंधी ने वह थैली वहीं छोड़ दी और लाठी टेकती हुई चल दी। बाहर निकलकर फिर उसने उस घर की ओर नेत्र उठाए। उसके नेत्रों से अश्रु बह रहे थे, किंतु वह भिखारिन होते हुए भी सेठ से महान थी। इस समय सेठ याचक था और वह दाता थी।

अभ्यास

पाठ से

1. भिखारिन प्रतिदिन मंदिर के दरवाजे पर जाकर क्यों खड़ी हो जाती थी?
2. झोंपड़ी के समीप पहुँचते ही वह दिव्यांग भिखारिन किसे अपने हृदय से लगा लेती थी और क्यों ?
3. भिखारिन सेठ जी के पास अपनी हांडी जमा करने को लेकर परेशान क्यों थी ?
4. सेठ जी की धर्मात्मा छवि भिखारिन के मन से कब टूट गई ?
5. सेठ जी ने मोहन को कैसे पहचाना ?
6. "तुम्हारा बच्चा है इसलिए लाख यत्न करके भी उसे बचाओगे। मेरा बच्चा होता तो उसे मर जाने देते, क्यों"? ऐसा भिखारिन ने क्यों कहा ?
7. सेठ जी की ममता मोहन के प्रति क्यों उमड़ आई ?

पाठ से आगे

5UBQ2G

1. हम धार्मिक स्थलों पर जाते हैं वहाँ मंदिरों के बाहर भीख माँगने वालों की एक कतार देखने को मिलती है। आप मित्रों से बात कीजिए कि लोग भीख क्यों माँगते हैं ?
2. पाठ में लिखा है कि सेठ और भिखारिन दोनों की एक ही दशा थी। आप विचार कर लिखिए कि दोनों की यह दशा क्यों थी?
3. कहानी में सेठ के व्यक्तित्व का कौन सा पहलु आपको प्रभावित करता है? लिखिए।
4. एक विपन्न सी स्त्री द्वारा भीख माँग कर जमा किए गए धन को सेठ द्वारा धरोहर के रुप में रखना और वापस देने से इंकार करना किस प्रकार के मानवीय मूल्य का सूचक है ? साथियों से बात कर लिखिए।
5. कहानी के दोनों प्रमुख चरित्रों में से आपकी दृष्टि में महत्वपूर्ण कौन है ? एक बेटे के रूप में श्याम किसे अधिक चाहता है और क्यों ?

भाषा से

5UKL44

1. पाठ में इस तरह से लिखे गए शब्दों को देखिए–

   आने–जाने, दो–चार, थोड़ा–बहुत, मन–ही–मन, उछलता–कूदता, पास–पड़ोस, चूम–चूमकर। शब्दों के मध्य प्रयुक्त चिह्न (–) को योजक

चिह्न कहते हैं। योजक चिह्न का प्रयोग सामासिक पदों या द्वित्व और युग्म शब्दों के मध्य किया जाता है। इसी तरह तुलनात्मक **'सा','सी','से'** के पहले योजक चिह्न का प्रयोग होता है। पाठ में आए अन्य योजक चिह्न वाले शब्दों को खोज कर लिखिए।

2. पाठ में यह सन्दर्भ आया है कि "बच्चा–बच्चा" उनकी कोठी से परिचित था। इस प्रयोग का अर्थ है हर एक बच्चा या प्रत्येक बच्चा। इसी प्रकार आदमी, पेड़, पत्ता, मन शब्द का इस रूप में स्वतंत्र रूप से वाक्य में प्रयोग कीजिए कि इनका निहित अर्थ स्पष्ट हो जाए।
3. सत्य–असत्य, श्वेत–श्याम, झोंपड़ी– महल जैसे शब्दों का प्रयोग पाठ में हुआ है जो परस्पर विलोम अर्थ को अभिव्यक्त करते हैं। निम्नलिखित शब्दों के विलोम अर्थ को सूचित करने वाले शब्दों को ढूंढ़ कर लिखिए –सुख, प्रसिद्ध, परिचित, पश्चात्, कठोर, बिगाड़ना, निराशा, बेईमान, आशीष, बहुत, अँधेरा, अपरिचित।
4. निम्नलिखित शब्दों का छत्तीसगढ़ी भाषा में प्रचलित रूप लिखिए–

   आशीर्वाद, सेठ, बच्चा, संतान, बेटा, दरवाजा, दयालु, मंदिर, झोंपड़ी, प्रसिद्ध, हांड़ी।

योग्यता विस्तार

1. सोचिए कि सेठ जी के स्थान पर आप होते/होतीं तो क्या करते/करतीं?
2. इस कहानी को एकांकी में रूपान्तरित करके कक्षा में उसका अभिनय कीजिए।
3. 'दुष्ट से दुष्ट मनुष्य का भी हृदय–परिवर्तन संभव है।' कक्षा में इस विषय के पक्ष–विपक्ष पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
4. 'कभी–कभी एक ही कथन या घटना सारी जीवनधारा का रुख मोड़ देती है। कुछ अन्य घटनाओं या प्रसंगों द्वारा इस बात की पुष्टि कीजिए।
5. यह काशी की घटना है। काशी को और किस–किस नाम से जाना जाता है ?

5UUH5R

पाठ 9

त्यागमूर्ति ठाकुर प्यारेलाल सिंह

-लेखक मंडल

हमर समाज–देश ल जब कोनो बदलाव के आवश्यकता होथे त कोनो महापुरुष के जनम होथे। अइसने हमर छत्तीसगढ़ के मजदूर अऊ किसान के दुख पीरा ल हरे बर अपन जिनगी ल खुवार करैया, पं. सुंदर लाल शर्मा, वीर नारायण सिंह, डॉ. खूबचंद बघेल, पं. रविशंकर शुक्ल जइसन महापुरुष मन होईन। त्यागमूर्ति ठाकुर प्यारेलाल सिंह रहिन जेन इहाँ के किसान अउ मजदूर के खुशी के कारण अपन जिन्दगी ल दाँव पर लगा दिन।

5V4D7E

कई जुग ले ओ मन ल सुरता करे जाथे जेन ह समाज अउ देश खातिर अपन सब कुछ निछावर कर देथें। ओ मन अपन जिनगी के पल–छिन ल समाज के निरमान म लगा देथें। ओ मन समाज ले कुछु नइ लेवँय, सिरिफ दे बर जानथें। अइसन त्यागी पुरुष दुरलभ होथें। ठाकुर प्यारेलाल सिंह वइसने दुरलभ पुरुष म एक झन रिहिन।

छत्तीसगढ़ के संगे–संग जम्मो देश के कल्यान खातिर ओ मन जेन बलिदान करिन ओकरे सेती ओ मन ल जिते–जियत म त्यागमूर्ति कहे जाय लागिस।

छत्तीसगढ राज के निरमान खातिर जुझइया पहिली नेता मन म ठाकुर प्यारेलाल सिंह के नाँव बड़ सम्मान के साथ लिये जाथे। ठाकुर साहेब ल छत्तीसगढ़ के युग पुरुष म घलो गिने जाथे। ओ मन किसान,मजदूर,बनिहार मन ल सकेल के उकर अधिकार के रक्षा बर अँगरेजी सरकार के संग लड़ाई लड़िन अउ कई बेर जेल गइन।

ठाकुर प्यारेलाल सिंह के जनम 21 दिसंबर 1891 म राजनाँदगाँव के दइहान गाँव के ठाकुर दीनदयाल सिंह के घर म होय रिहिस। ईंकर माता जी के नाँव श्रीमती नरमदा देवी रिहिस।

ठाकुर साहेब जब 16 साल के रिहिन त उँकर बिहाव रायपुर के ठाकुर भगवान सिंह के बेटी गोमती देवी के संग कर दे गिस। रायपुर के सरकारी हाईस्कूल (अब शासकीय बहुउद्देशीय उच्चतर माध्यमिक शाला) ले मैट्रिक के परीक्षा पास करिन तेकर पाछू नागपुर के हिस्लाप कालेज ले इंटरमीडियट करिन। इही बीच म पिता जी के अचानक देहावसन हो जाय के कारण उँकर पढ़ई म बाधा आ गे। इही कारण ओ मन घर लहुटगें फेर आगू पढ़े के उँकर इच्छा बने रिहिस।

ठाकुर प्यारेलाल सिंह खूबेच गुनवान रिहिन,ओमन बी.ए. के परीक्षा पास करके इलाहाबाद विश्वविद्यालय ले 1916 में वकालत के परीक्षा घलो पास करिन । पढ़ई के संगे–संग खेलकूद म उँकर मन निसदिन लगे रहय। जेन खिलाड़ी भावना उँकर खेल–जीवन म पनपिस ओ ह सार्वजनिक जीवन म घलो बने रहिस। जइसे खेल के मैदान म जी–जान ले लगे रहँय,वोइसनेच राजनीति म घलो जम के डटे रहँय अउ आजादी के पाछू जनता के हित के रक्षा बर दिन रात लगे रहँय।

अँगरेजी शासन काल म देश के स्वदेशी आंदोलन के लहर चले रहिस। ठाकुर साहेब राजनाँदगाँव म स्वदेशी आंदोलन म शामिल हो गइन। अउ राजनाँदगाँव के संगे–संग तीर–तखार के गाँव म घलो राष्ट्रीय चेतना के बिस्तार के काम शुरू कर दिन।

'वंदे मातरम्' राष्ट्रीय एकता अउ चेतना के गीत बनगे रिहिस। ठाकुर साहेब पढ़इया लइकामन के टोली बना के 'वंदे मातरम्' के नारा लगावँय।

कानून के पढ़ाई पूरा करे के पाछू 1916 म ओ मन वकालत शुरू कर दिन। वकालत ल ओ मन समाज सेवा के रद्दा बनाइन। गरीब अउ कमजोर मनखे मन ल नियाव देवाय बर खूबेच काम करँय। राजनाँदगाँव के बी.एन.सी.मिल के मजदूर मन ल हक देवाय बर ठाकुर प्यारेलाल ह 1920 म सबो मजदूर ल एकजुट करके हड़ताल करा दिन। मिल मजदूर मन के माँग पूरा होय के पाछू आंदोलन खतम होइस। ये ह देश म सही ढंग ले चलाय गे संगठित मजदूर मन के पहिली सब ले लंबा हड़ताल रहिस, जेन ह 36 दिन ले चलिस।

1920 म कांग्रेस ह अँगरेजी शासन के विरोध म असहयोग आंदोलन शुरू कर दिस। ये म ठाकुर प्यारेलाल सिंह घलो कूद गें। गांधी जी के कहना म ओ मन 4 साल ले सरलग वकालत नइ करिन। ये समय म ठाकुर साहेब ह राजनाँदगाँव के तीर–तकार म जन–जागरन के खूब काम करिन, अउ राजनाँदगाँव म राष्ट्रीय विद्यालय खोलिन।खादी के महत्तम के प्रचार करे बर ठाकुर साहेब खुद चरखा चलावँय अउ दूसर मन ल घलो सिखावँय।

रायपुर ह आजादी के लड़ई के बड़े जन जघा बनगे रिहिस। इहाँ ठाकुर साहेब के पं.माधवराव सप्रे,पं.रामदयाल तिवारी अउ बाबू मावली प्रसाद श्रीवास्तव जइसे कई झन देशभक्त साहित्यकार मन ले मेल–मिलाप होइस।

गांधी जी के अगुवइ म जब 1930 म अँगरेज मन के विरोध म सत्याग्रह शुरू होइस त ठाकुर साहेब तन–मन–धन ले ओ म जुड़गें। छत्तीसगढ़ म ये मन आंदोलन के प्रमुख नेता रहिन। धमतरी के बनवासी मन ल उँकर हक देवाय खातिर अउ अंगरेजी सरकार ल लगान नइ दे के मुहिम घलो शुरू करिन,ये ह अँगरेजी सरकार ल सीधा ललकारना रिहिस। एकर सेती ठाकुर साहेब ल एक साल के सजा होइस।

26 जनवरी,1932 के दिन रायपुर के गांधी चौक म ठाकुर प्यारेलाल सिंह ह बहुत कड़क भाषा म भाषण दिन, तेकर सेती ओ मन ल पकड़ ले गिस अउ दू साल के सजा सुनाय गिस। उँकर सरी

सम्पत्ति ल सरकार ह कुर्की कर लिस। ओ मन ल अउ जादा सजा दे खातिर उँकर वकालत के सनद घलो जपत कर ले गिस।

सन् 1933 ले 1937 तक ठाकुर प्यारेलाल सिंह महाकोशल प्रांत कांग्रेस कमेटी के सचिव रहिन। इही समय म ओ मन कई ठन योजना बनाइन। अछूत मन के उद्धार बर काम करिन। हिन्दू–मुसलमान भाईचारा खातिर घलो काम करिन। रायपुर म ओ मन मोमिन बुनकर मन ल एकजुट करके उनला बने मजदूरी देवाय के काम करिन। गीता अउ कुरान दूनों के ठाकुर साहेब विद्वान रहिन। अपन ये गियान के उपयोग ओ मन समाज म तालमेल बढ़ाय बर करते रहँय।

प्रदेश कांग्रेस के महामंत्री रहत समय ठाकुर साहेब पहिली बेर 1936 म मध्यप्रदेश विधानसभा के सदस्य चुने गिन। छत्तीसगढ़ अउ संयुक्त मध्यप्रदेश के सब ले जादा जन नेता मन म ईंकर नाँव गिने जाय। ओ मन तीन बेर रायपुर नगरपालिका के अध्यक्ष अउ दू बेर विधायक चुने गिन।

ओ समय के सी.पी.बरार म जब कांग्रेस के अंतरिम सरकार बनिस त डॉ.खरे के मंत्रीमंडल म ठाकुर साहेब शिक्षा मंत्री बनिन। छत्तीसगढ़ एजुकेशन सोसायटी के स्थापना ईंकर अगुवई म करे गिस जेन ह छत्तीसगढ़ कालेज शुरू करिस। ओ ह छत्तीसगढ़ के पहिली महाविद्यालय रहिस। आज ये ह प्रदेश के प्रमुख महाविद्यालय हवय।

छत्तीसगढ़ म सहकारिता आंदोलन के विकास करे म ठाकुर प्यारेलाल सिंह ह भारी सहयोग देइन। 6 जुलाई 1945 म ओ मन छत्तीसगढ़ बुनकर सहकारी संघ के नींव रखिन। गरीब,मजदूर,किसान अउ आदिवासी मन के ओ मन मुक्तिदूत बनगे रहिन। ठाकुर साहेब के त्यागी,तपस्वी अउ जननेता के एक ठन गजब रूप रहिस। भूमिहीन,खेतिहर मजदूर ल भूस्वामी बनाय के परन के संग आचार्य विनोबा भावे के भू–दान क्रांति के ठाकुर साहेब सिपाही बनगें। ओ मन जेन गाँव म जावँय ऊहाँ मालगुजार अउ बड़े किसान मन अपन जमीन के हिस्सा दान कर देवँय। इही भू–दान के 2200 मील के लंबा यात्रा म जबलपुर के तीर म ठाकुर प्यारेलाल सिंह शहीद होगें।

ठाकुर साहेब अजादी बर जीवन भर लड़ाई लड़िन अउ अजादी मिले के पाछू राजकाज सम्हाले ल छोड.के समाज के निरमान म लग गें।

उँकर जीवन अउ उँकर कामकाज कई पीढ़ी ल रद्दा देखावत रइहीं।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

सुरता	=	याद	सकेल के	=	इकट्ठा करके
लहुट गें	=	वापस आ गए	तीर–तकार	=	आस–पास
नियाँव	=	न्याय	सरलग	=	लगातार
कड़क	=	कड़ी,कठोर	अगुवाई	=	नेतृत्व
मालगुजार	=	बड़ा किसान,गौंटिया	तीर	=	पास
उँकर	=	उनका	रइहीं	=	रहेंगे
सनद	=	प्रमाण पत्र			

अभ्यास

पाठ से

1. ठाकुर प्यारे लाल सिंह ह वकालत ल समाज सेवा के रद्दा कइसे बनाइस ?
2. छत्तीसगढ़ राज के निरमान खातिर जुझइया नेता ठाकुर प्यारे लाल ल काबर कहे गेहे ?
3. ठाकुर प्यारेलाल ह पढ़ाई में बाधा आय के बाद भी आगु के पढाई कइसे करिस ?
4. ठाकुर प्यारेलाल स्वदेशी भावना ल कहाँ–कहाँ तक बढ़ाइस अउ ओकर जनता में का–का परभाव परिस?
5. भू–दान आंदोलन के का मतलब होथे, अउ प्यारेलाल के भू–दान आन्दोलन म का योगदान रहिस ? लिखव।
6. शिक्षा के क्षेत्र म ठाकुर साहेब के का योगदान रहिस?

पाठ से आगे

1. खिलाड़ी भावना के का अर्थ होथे अउ वोकर अपन जीवन में कइसे प्रयोग करे जा सकथे? कक्षा में समूह में चर्चा कर के लिखव।
2. ठाकुर प्यारेलाल जइसन छत्तीसगढ़ के कोन–कोन नेता रहिन? वोकर आजादी में का–का योगदान रहिस? शिक्षक अउ साथी से जानकारी प्राप्त करव।

5VD992

3. ठाकुर साहेब जन सेवा के अब्बड़ काम करिन। जन सेवा के का मतलब होथे? तु मन ल जन सेवा के मौका मिलही त का–का करहु? सँगवारी मन सन बात कर लिखव।
4. छत्तीसगढ़ म असहयोग आन्दोलन म भाग लेवइया अउ आंदोलनकारी मन के नाम ल खोज के लिखव।

भाषा से

1. पाठ म 'जुझइया' शब्द पर धियान देवव, ये 'शब्द' जूझना क्रिया म इया प्रत्यय के जोड़ ले बनिस 'जुझइया'।

   तु मन पाँच क्रिया शब्द म 'इया' प्रत्यय लगाके नवां शब्द बनवाव अउ अपन वाक्य में प्रयोग करव।

2. पाठ म तीर–तखार सब्द आय हावे। तीर सब्द ह सार्थक सब्द आय। एकर अर्थ हे 'नजदीक' या पास/फेर तखार सब्द के कोनों अर्थ नइ निकले। दुनो सब्द के संघरा प्रयोग करे ले सब्द–युग्म बन जाथे। अउ एकर अर्थ निकलथे आस–पास। अइसने ढंग के युग्म सब्द हे चाय–वाय।'

   सब्द–युग्म के पाँच सब्द सोच के लिखव अउ ओला अपन वाक्य म प्रयोग करव।

67RHPL

3. खाल्हे लिखाय सब्द मन के उल्टा अर्थ वाला सब्द लिखव–

   सुरता, कड़क, निरमान, दुरलभ, स्वदेशी, नियाव, पहिली, तीर–तखार।

योग्यता विस्तार

1. छत्तीसगढ़ के अउ स्वतंत्रता सेनानी मन (पं. माधव राव सप्रे, पं. राम दयाल तिवारी) के जीवनी खोज के पढ़व।
2. स्वतंत्रता सेनानी मन के जीवन ले हमन ला का प्रेरणा मिलथे ? संगवारी मन सन बात कर लिखव।

681DR9

पाठ 10

सितारों से आगे

– लेखकमंडल

68A9SH

एक सामान्य सी दुबली–पतली करनाल (हरियाणा) की बिटिया, अपनी प्रतिबद्धता और साहस से इतना कुछ करती रही जो भारत की ही नहीं विश्व की बेटियों में अपनी पहचान कायम कर सकी। माता–पिता की चौथी संतान कल्पना चावला बचपन से नक्षत्र लोक को घंटों निहारा करती थी। वह एक अन्तरिक्ष–यात्री के रूप में स्पेस सटल 'कोलम्बिया' में बैठकर अंतरिक्ष के गूढ़ रहस्य खोलने की यात्रा पर थी। जान जोखिम में डालने वाली इस यात्रा में यह सच है वह अपना जान गँवा बैठी पर एक जीवंत इतिहास अवश्य रच डाली। बचपन के इस वक्तव्य को उसने अपना बलिदान देकर साबित किया कि 'जो काम लड़के कर सकते हैं वह मैं भी कर सकती हूँ।'

1 फरवरी 2003, विश्व के लोग अपने–अपने टेलीविजन सैट पर आँखें गड़ाए हुए थे। अमेरिका में फ्लोरिडा के केप केनेवरल अंतरिक्ष केंद्र के बाहर दर्शकों की भीड़ थी। सबकी आँखें आकाश की ओर लगी थीं। अवसर था कोलंबिया शटल के पृथ्वी पर लौटने का। भारत के लोग भी आतुरता से टी. वी. पर बैठे इस दृश्य को देख रहे थे। उनकी आतुरता का कारण यह भी था कि इस अंतरिक्ष अभियान में भारत की बेटी, इकतालीस वर्षीया कल्पना चावला भी शामिल थी। उसके परिवार के लोग तो फ्लोरिडा में ही अपनी बेटी के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे थे। यहाँ भारत में उसके नगर करनाल में उसी के विद्यालय–टैगोर बाल निकेतन– के लगभग तीन सौ छात्र–छात्राएँ अपने विद्यालय की पूर्व छात्रा, कल्पना चावला के अंतरिक्ष से सकुशल वापस लौटने को उत्सव के रूप में मनाने के लिए एकत्र हुए थे।

प्रकृति के रहस्यों को खोजने में जान का जोखिम रहता ही है। एवरेस्ट विजय करने में दर्जनों पर्वतारोहियों ने अपनी जानें गँवाई हैं। उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव की खोज में भी अनेक सपूतों ने अपने बलिदान किए हैं। यही स्थिति अंतरिक्ष अभियान की भी है। जब तक अभियान पूरी तरह सफल न हो जाए, तब तक अंतरिक्ष यात्रियों, अंतरिक्ष केंद्र के संचालकों, दर्शकों के हृदय में

धुकधुकी लगी रहती है। उस दिन भी केप केनेवरल में प्रातः 9 बजे दर्शकों की साँस ऊपर की ऊपर रह गई। पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश के साथ ही कोलंबिया शटल का संपर्क अंतरिक्ष केंद्र से टूट गया। सहसा कुछ मिनटों के बाद टेक्सास के ऊपर एक जोरदार धमाका सुनाई दिया। ह्यूस्टन कमान केंद्र में घबराहट फैल गई। कोलंबिया स्पेस शटल में सवार सभी सातों अंतरिक्ष यात्रियों के शरीर के चिथड़े–चिथड़े होकर अमेरिका की भूमि पर यहाँ–वहाँ बिखर गए। भारत ने उस दिन अपने जाज्वल्यमान नक्षत्र, कल्पना चावला, को खो दिया। समूचे देश में, विशेष रूप से करनाल में, शोक की लहर दौड़ गई। टैगोर बाल निकेतन में आयोजित होनेवाला उत्सव, शोक–सभा में परिवर्तित हो गया। इस हादसे से एक अरब से अधिक देशवासियों के चेहरे मुरझा गए। करनाल की यह विलक्षण बेटी सफलतापूर्वक एक यात्रा पूरी कर चुकी थी, लेकिन दूसरी यात्रा में वही दुबली–पतली लड़की अपनी मधुर मुस्कान और दृढ़ संकल्प के साथ अपने सपनों को साकार न कर पाई। कल्पना के जीवन की यह कहानी करनाल से प्रारम्भ हुई और अंतरिक्ष में समाप्त हुई। आओ, इस कहानी का प्रारंभ देखें।

बनारसी दास चावला भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान से भारत आकर करनाल में बसे थे। सन् 1961 में यहीं कल्पना का जन्म हुआ था। बनारसीदास चावला की यह चौथी संतान थी। माता–पिता अपनी दुलारी बेटी को मोंटू कहते थे। शिक्षा के क्षेत्र में मोंटू का परिवार काफी आगे था। मोंटू की स्कूली शिक्षा करनाल के टैगोर बाल निकेतन में ही हुई। गर्मी के दिनों में रात को खुले आसमान में तारागणों की ओर निहारती हुई कल्पना नक्षत्र–लोक में पहुँच जाती थी। शायद यहीं से उसे अंतरिक्ष–यात्रा की सूझी थी।

जागरुक पिता ने अपनी प्यारी बेटी मोंटू की रुचि को भाँप लिया था और जब वह आठवीं कक्षा में थी, तभी उसे पहली उड़ान कराई थी। एंट्रेंस की परीक्षा उत्तीर्ण करके कल्पना ने इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू की। इंजीनियरिंग में उसने अंतरिक्ष विषय लिया। चंडीगढ़ के पूर्वी पंजाब इंजीनियरिंग महाविद्यालय में उस समय तक एयरोनाटिक विभाग में कम छात्र–छात्राएँ ही दाखिला लेते थे। छात्राओं का प्रतिशत तो और भी कम रहता था। कॉलेज में पढ़ते समय कल्पना दत्तचित्त होकर अपना कोर्स तो तैयार करती ही थी, साथ ही कॉलेज के सभी क्रियाकलापों में भी भाग लेती थी। वह अक्सर कहती थी – ''जो काम लड़के कर सकते हैं, वह मैं भी कर सकती हूँ।''

कल्पना को जब एयरोनाटिक्स की डिग्री मिल गई, तब उसने अपनी आगे की पढ़ाई अमेरिका में करने का मन बनाया। उसे वहाँ प्रवेश भी मिल गया। वहीं उसका परिचय जीन पियरे से हुआ। दिसम्बर 1983 में वे दोनों विवाहसूत्र में बँध गए।

विवाह के उपरांत भी कल्पना ने अंतरिक्ष में उड़ने का अपना ध्येय अटल रखा। एक दिन उसे टेलिफोन पर नासा से समाचार मिला–'हमें खुशी होगी यदि आप यहाँ आकर एक अंतरिक्ष यात्री के रूप में अंतरिक्ष कार्यशाला में भाग लें।' कल्पना के लिए तो यह मनमाँगी मुराद पूरी होना था। नासा द्वारा अंतरिक्ष–यात्रा के लिए चुने जाने का गौरव बिरले ही लोगों के भाग्य में होता है।

6 मार्च 1995 से कल्पना का एकवर्षीय प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। तरह–तरह की प्रशिक्षण प्रणालियों के द्वारा इन अंतरिक्ष यात्रियों को तैयार करने में कई महीने लग जाते हैं। कल्पना को इस अवधि में जो उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य सौंपे जाते थे, वह उन्हें पूरी निष्ठा से करती थी।

19 सितम्बर 1997 को एस टी एस 87 के अभियान दल के सदस्यों का परीक्षण हुआ। इनमें कुछ पुराने अनुभवी सदस्य थे तो कुछ नए भी थे। कल्पना का यह पहला अभियान था। उड़ान से पहले अंतरिक्ष यात्री अपने–अपने परिजनों से मिले। इसके बाद सब एक–एक करके अंतरिक्ष–यान में सवार हुए। अंतरिक्ष–यान 17500 मील प्रति घंटे की गति से उड़ा। कल्पना के लिए इतनी ऊँचाई से विश्व की झलक देख पाना एक दैवी कृपा के समान था। यह यान सत्रह दिनों तक अंतरिक्ष में घूमता रहा और अंतरिक्ष यात्री अपने प्रयोग करते रहे। अंततः शुक्रवार प्रातः 6 बजे अंतरिक्ष–यान कैनेडी अंतरिक्ष केंद्र पर उतरा। दर्शक दीर्घा में बैठे अंतरिक्ष–यात्रियों के परिवार के लोगों ने यान के सकुशल वापस लौट आने पर ईश्वर को धन्यवाद दिया।

इस उड़ान में उपग्रह और कंप्यूटर प्रणाली में कुछ गड़बड़ी आ गई थी। इस गड़बड़ी का दोष कल्पना पर लगाया गया। जाँच दल के सामने कल्पना ने निर्भीक होकर अपनी बात कही। कल्पना के तर्क से सहमत होकर जाँच दल ने उसे पूर्ण रूप से दोषमुक्त कर दिया। अतः उसे इसके बाद दूसरे अभियान के लिए भी चुना गया। दूसरे अभियान की तिथि 16 जनवरी 2003 निश्चित की गई। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य भौतिक क्रिया का अध्ययन करना था जिससे बदलते मौसम एवं जलवायु का ज्ञान सुलभ हो सके।

अपने निर्धारित समय पर यह अभियान चला। इस अभियान में कल्पना अपने साथ संगीत की कई सीडी ले गई थी। इस अभियान में अनेक धर्मों के अंतरिक्ष यात्री भाग ले रहे थे और वहाँ सर्वधर्म समभाव का माहौल बन गया था। कल्पना समय–समय पर सीडी के गाने सुनकर तरोताजा हो जाती थी। स्पेस शटल अपने निर्धारित कार्यक्रम, निर्धारित समय में पूरा करके वापस पृथ्वी की ओर आ रहा था। तभी 1 फरवरी 2003 का वह काला दिन आया जब स्पेस शटल तथा उसमें सवार सात अंतरिक्ष–यात्रियों के शरीर के क्षत–विक्षत अंग अमेरिका की धरती पर इधर–उधर बिखर गए। सम्पूर्ण विश्व में इस दुर्घटना से शोक की लहर फैल गई।

कल्पना का जन्म और जीवन सामान्य जैसा ही था किन्तु उसकी उपलब्धियाँ असामान्य थीं। वह सदा नई जानकारी, नए अनुभव, नए चमत्कार करना चाहती थी। सारे विश्व के बच्चों के लिए उसका यही संदेश था– 'अपने विश्वास के धरातल से आगे बढ़कर चलो, तभी असंभव को संभव बनाया जा सकता है।' कल्पना के इसी संदेश को जीवंत रखने के लिए उसके परिवार ने 'मोंट्यू फाउंडेशन' की स्थापना की है, जिसका उद्देश्य है प्रतिभावान नवयुवकों और नवयुवतियों को, जिन्हें धनाभाव के कारण उच्च शिक्षा से वंचित होना पड़ता है, विश्वविद्यालय की शिक्षा प्राप्त करने में सहायता करना।

अभ्यास

पाठ से

1. विश्व के लोग टेलीविजन पर आँखें क्यों गड़ाए हुए थे ?
2. टैगोर बाल निकेतन करनाल के बच्चे किसका और क्यों इंतजार कर रहे थे?
3. विश्व में शोक की लहर क्यों दौड़ गई ?
4. कल्पना खुले आसमान को क्यों निहारती थी ?
5. कल्पना का अटल ध्येय क्या था ?
6. "जो काम लड़के कर सकते हैं वह मैं भी कर सकती हूँ", कल्पना चावला यह क्यों कहती थी?
7. मोंट्यू फाउंडेशन का उद्देश्य क्या है ?

पाठ से आगे

68J5UJ

1. कल्पना चावला को भारत की बेटी क्यों कहा गया है? इस विषय पर आप अपने शिक्षकों के साथ चर्चा कर उनकी विशेषताओं को लिखिए।
2. बचपन में आकाश को निहारते–निहारते शायद कल्पना ने अपने लक्ष्य को तय कर लिया था। आप भी अपने लक्ष्यों के बारे में लिख कर कक्षा में सुनाइए।
3. कल्पना का मानना था कि जो काम लड़के कर सकते हैं वह मैं भी कर सकती हूँ। आप कक्षा में चर्चा कर लिखिए कि जीवन का ऐसा कौन सा क्षेत्र है जहाँ लडकियाँ कार्य नहीं कर सकतीं।
4. एयरोनाटिक्स इंजीनियरिंग, इंजीनियरिंग का कौन सा क्षेत्र है और इसमें किस विषय की पढ़ाई होती है ? शिक्षक और साथियों से बातचीत कर लिखिए।

भाषा से

68T1H7

1. निम्नलिखित समानोच्चरित शब्दों को इस प्रकार वाक्यों में प्रयोग कीजिए, जिससे उनके अर्थ में अंतर स्पष्ट हो जाए–

   साहस/सहसा, परिणाम/परीमाण, दिन/दीन, अपेक्षा/उपेक्षा, श्वेत/स्वेद, अनु/अणु।

2. पाठ में निम्नांकित मुहावरों का प्रयोग हुआ है। वाक्य में स्वतंत्र रुप से उनका इस तरह प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए–

   आँखें गड़ाना, आँखें आकाश की ओर लगाना, बलिदान देना, साँस ऊपर की ऊपर रह जाना, शोक की लहर दौड़ना, मन माँगी मुराद पूरी होना।

3. पाठ में आतुरता, सफलता, प्रमुखता,असमानता जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ है जिनमें मूल शब्द के साथ 'ता' प्रत्यय का प्रयोग हुआ है। आप 'ता' प्रत्यय को जोड़ते हुए दस शब्दों का निर्माण कीजिए ।

योग्यता विस्तार

692HXU

1. स्त्री शक्ति के रूप में भारत का नाम विभिन्न क्षेत्रों में रौशन करने वाली नारियों की सूची बनाइए और कक्षा में उस पर चर्चा कीजिए।
2. भारत की प्रथम महिला एवरेस्ट विजेता बछेन्द्री पाल की जीवनी खोज कर पढ़िए।

पाठ 11

कोई नहीं पराया

– श्री गोपाल दास 'नीरज'

69BSZH

प्रस्तुत कविता मनुष्य–मनुष्य के बीच के बंटवारे, विभेद, जाति, लिंग, धर्म, रंग, वर्ण जनित विभिन्न तरह की संकीर्णताओं पर मन में सवाल खड़ा करता है। कवि प्रस्तुत कविता के जरिए धर्म और जाति से जुड़ी तमाम नफ़रत की दीवारों को गिराने का आह्वान करते हैं। कवि एकता का संदेश देते हुए कहते हैं कि उसका आराध्य मनुष्य मात्र है और हर इंसान का घर उसके लिए देवालय है। कवि स्पष्ट कहते हैं कि इस संसार में कोई पराया नहीं है सब ईश्वर की संतान हैं।

ईश्वर को लोग अपनी समझ और सन्दर्भ से अल्लाह, गॉड, राम, रहीम कहते हैं। जिस तरह से फूल और बाग की शोभा पहले है, डाल की शोभा बाद में है, वैसे ही विश्व की शोभा पहले है और मनुष्य,जाति, प्रान्त अथवा राष्ट्र की शोभा बाद में है। इस तरह से कवि "वसुधैव कुटुम्बकम" के सहज संदेश को कविता के जरिए सम्प्रेषित करते हैं।

कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।
मैं ना बँधा हूँ, देश–काल की जंग लगी जंजीर में,
मैं ना खड़ा हूँ जात–पाँत की ऊँची–नीची भीड़ में,
मेरा धर्म ना कुछ स्याही–शब्दों का सिर्फ गुलाम है,
मैं बस कहता हूँ कि प्यार है तो घट–घट में राम है,
मुझसे तुम ना कहो मंदिर–मस्जिद पर सर मैं टेक दूँ,
मेरा तो आराध्य आदमी, देवालय हर द्वार है।
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।।

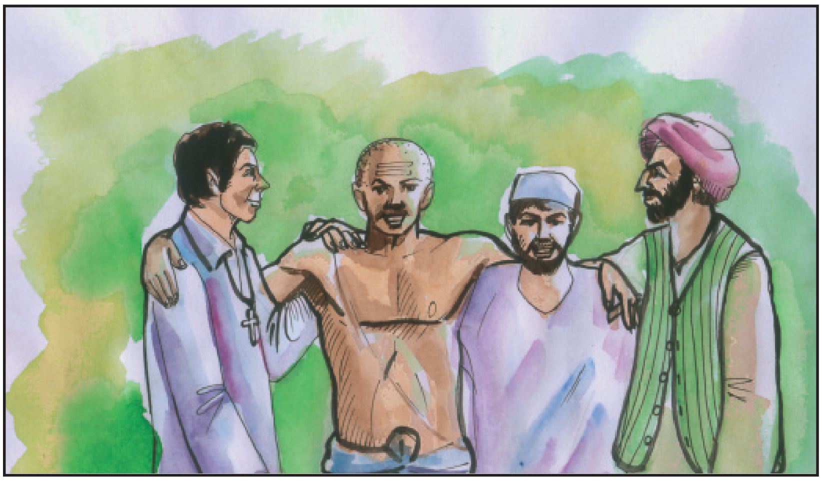

कहीं रहे कैसे भी मुझको प्यारा यह इंसान है,
मुझको अपनी मानवता पर बहुत–बहुत अभिमान है,
अरे नहीं देवत्व, मुझे तो भाता है मनुजत्व ही,
और छोड़कर प्यार नहीं स्वीकार, सकल अमरत्व भी,
मुझे सुनाओ तुम न स्वर्ग–सुख की सुकुमार कहानियाँ,
मेरी धरती सौ–सौ स्वर्गों से ज्यादा सुकुमार है।
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।।
मैं सिखलाता हूँ कि जिओ और जीने दो संसार को,
जितना ज्यादा बाँट सको तुम बाँटो अपने प्यार को,
हँसो इस तरह, हँसे तुम्हारे साथ दलित यह धूल भी,
चलो इस तरह कुचल न जाए पग से कोई फूल भी,
सुख न तुम्हारा सुख, केवल जग का भी इसमें भाग है,
फूल डाल का पीछे, पहले उपवन का श्रृंगार है।
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।।

अभ्यास

पाठ से

1. कवि को मानवता पर क्यों अभिमान है ?
2. जात–पाँत के बंधनों ने मानवता को क्या हानि पहुँचाई है ?
3. स्वर्ग–सुख की सुकुमार कहानियों को कवि क्यों नहीं सुनना चाहता है ?
4. कवि संसार को क्या सिखाना चाहता है ?
5. जंग लगी जंजीर किसे और क्यों कहा गया है ?
6. धर्म को कवि ने कुछ स्याह शब्दों का गुलाम क्यों कहा है ?

पाठ से आगे

1. कवि देवत्व और अमरत्व के स्थान पर मनुजत्व को स्वीकारने की बात क्यों करता है ?
2. कविताएँ सभी जाति और धर्म में प्यार और सद्भाव का संदेश देती हैं, परन्तु हमारे समाज में ऐसा देखने को क्यों नहीं मिलता? साथियों से बात कर अपनी समझ को लिखिए।
3. कवि के मनोभावों को सार्थक करते हुए अगर हर व्यक्ति संसार को अपना घर मानने लगे तो हम जिस समाज में रहते हैं उस समाज की दशा/स्थिति कैसी होगी? चर्चा कर लिखिए।
4. कवि बनावटी दुनिया को छोड़कर वास्तविक जीवन में मिल–जुलकर रहने पर जोर दे रहा है। यहाँ बनावटी दुनिया और वास्तविक जीवन से आप क्या समझते हैं लिखिए।
5. आप विचार कर लिखिए कि मनुष्य–मनुष्य के बीच नफ़रत की दीवारों को कौन खड़ा करता है, और इस संदर्भ में हमारी क्या भूमिका होनी चाहिए?

69KP25

भाषा से

69UK3S

1. पाठ में आए हुए निम्नलिखित शब्दों को ध्यान से देखिए –

   मैं, जंग, बाँट, जंजीर, हँसना, बँधा, ऊँची, मंदिर, संसार, इंसान, कहानियाँ ये शब्द अनुस्वार और चन्द्रबिन्दु के प्रयोग के कारण अनुनासिक कहे जाते हैं। अनुनासिक स्वर की ध्वनि मुख के साथ–साथ नासिका द्वार से निकलती है अतः अनुनासिक को प्रकट करने के लिए शिरोरेखा के ऊपर बिंदु या चंद्र बिंदु का प्रयोग करते हैं। (शब्द या वर्ण के ऊपर लगाई जाने वाली रेखा को शिरोरेखा कहते हैं)।

   बिंदु या चंद्रबिंदु को हिंदी में क्रमशः अनुस्वार और चंद्रबिन्दु कहा जाता है।

   अनुस्वार और अनुनासिक में अंतर–

- अनुनासिक स्वर है जबकि अनुस्वार मूलतः व्यंजन।
- अनुनासिक को परिवर्तित नहीं किया जा सकता जबकि अनुस्वार को वर्ण में बदला जा सकता है।

- वे शब्द जिनकी मात्राएँ शिरोरेखा से ऊपर न लगीं हों. जैसे अ , आ , उ ऊ के ऊपर अनुनासिक के लिए चंद्रबिन्दु का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के रूप में हँस, चाँद, पूँछ।

- शिरोरेखा से ऊपर लगी मात्राओं वाले शब्दों में अनुनासिक के स्थान पर अनुस्वार अर्थात बिंदु का प्रयोग ही होता है. जैसे – गोंद , कोंपल , जबकि अनुस्वार हर तरह की मात्राओं वाले शब्दों पर लगाया जा सकता है.

हम यहाँ जानने का प्रयास करते हैं कि जब अनुस्वार को व्यंजन मानते हैं तो इसे वर्ण में किन नियमों के अंतर्गत परिवर्तित किया जाता है.। जैसे कंबल, झंडा, धंधा को कम्बल, झण्डा, धन्धा के रूप में उस वर्ग के पंचम अक्षर के साथ लिखा जा सकता है, अर्थात् धंधा शब्द का अनुस्वार हटाना है तो अनुस्वार के बाद वाले वर्ण के पंचम अक्षर का प्रयोग करते हैं।

जैसे– कंबल शब्द के अनुस्वार को वर्ण में बदलना है तो अनुस्वार के बाद 'ब' वर्ण के पंचम अक्षर 'म' का प्रयोग कर अनुस्वार को वर्ण में बदला जा सकता है। जैसे– कम्बल।

2. "कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है" यहाँ पर संसार शब्द के पर्याय के रूप में जग, विश्व, जगत, लोक, दुनियाँ, भव, आदि हैं। और हर शब्द की महत्ता वाक्य, विषय और काल के अनुसार विशिष्ट होती है। जैसे–

   - **दुनियाँ** में तरह–तरह के लोग होते हैं।
   - ताजमहल **विश्व** की प्रसिद्ध इमारत है।

   इसी प्रकार से जल, पक्षी, सूर्य, सोना, धरती, शब्द के दो–दो पर्यायवाची खोजकर सटीक वाक्यों में उनका प्रयोग कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. धार्मिक सद्‌भाव से संबंधित स्लोगन साथियों के साथ मिलकर लिखिए।
2. देश–प्रेम, मानवीय मूल्य से ओत–प्रोत कविताएँ खोजकर पढ़िए, चर्चा कीजिए।

6A4G5F

पाठ 12

प्रेरणा स्रोत :- मेरी माँ

– संकलित

6ADC73

'मिसाइलमैन' के नाम से चर्चित पीपल्स प्रेसिडेंट डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम एक ऐसे चमत्कारिक व्यक्तित्व रहे हैं जिन्होंने अपने कार्य और व्यवहार से देश ही नहीं, दुनियाँ के करोड़ों नवयुवाओं को प्रभावित किया है। ऐसे व्यक्तित्व की प्रेरणा स्रोत, उनकी ममतामयी माँ आशियम्मा रहीं, जिन्होंने अभाव से भरे दिनों में कलाम को अपने हिस्से का सबकुछ बचा कर उसे संजोते हुए अतिरिक्त स्नेह, लाड़ प्यार देती रहीं। यही वह स्नेह का मूल भाव था, जो बाद में कलाम के व्यक्तित्व का स्रोत बन कर राष्ट्र के प्रत्येक बच्चों पर न्यौछावर होता रहा और उन्हें एक श्रेष्ठ भारतीय नागरिक बनाने की दिशा में आधार भूमि बन सका।

आज के इस युग में ऐसे लोग कम ही हैं जिन्होंने अपने काम और व्यवहार से करोड़ों युवाओं और सम्पूर्ण देशवासियों को प्रभावित किया हो, उनके दिल में एक खास जगह बनाई हो, 'मिसाइलमैन' नाम से चर्चित, चमत्कारिक प्रतिभा के धनी डॉक्टर ए.पी.जे. अब्दुल कलाम उन चुनिंदा हस्तियों में से एक हैं। इनका व्यक्तित्व इतना सरल और सहज रहा कि हर कोई उन्हें देखकर हैरान हो जाता उन्होंने अपने काम के सिवाय कभी भी अपने पद को अहम नहीं समझा अपनी सीधी सादी बातों और जीवन मूल्यों के कारण डॉ.कलाम ने दुनिया के चर्चित लोगों में एक अलग ही जगह बनाई इसलिए वह आज 'पीपल्स प्रेसिडेंट' के नाम से भी जाने जाते हैं। वे देश के ऐसे तीसरे राष्ट्रपति हैं, जिन्हें राष्ट्रपति बनने से पूर्व देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारतरत्न' से सम्मानित किया गया। ऐसे दो अन्य पूर्व राष्ट्रपति हैं : सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन और डॉ. जाकिर हुसैन।

ऐसे महान व्यक्तित्व की प्रेरणा–स्रोत डॉ. कलाम की माँ आशियम्मा थीं। मन को छूने वाली अनेक घटनाओं में डॉ. कलाम ने अपनी माँ का बार–बार उल्लेख किया है। बचपन के अभाव भरे दिनों में, एक संयुक्त परिवार के सदस्य के रूप में उन्हें माँ का अधिक लाड़–प्यार, स्नेह और प्रोत्साहन मिला। उन्होंने बताया है कि हमारे घरों में बिजली नहीं थी तब मिट्टीतेल की चिमनी जलाया करते थे या घर में लालटेन से रोशनी होती थी, जिनका समय रात्रि 7 से 9 बजे तक नियत था। पर नन्हें कलाम माँ के अतिरिक्त स्नेह के कारण रात्रि 11 बजे तक दीपक का उपयोग करते थे क्योंकि माँ को कलाम की प्रतिभा पर भरोसा था इसलिए वह कलाम की पढ़ाई के लिए एक स्पेशल लैंप देती थीं जो रात तक पढ़ाई करने में कलाम की मदद करता था। रोशनी को दूसरों तक फैलाने की चाह कलाम के नन्हें मन में यहीं से उठने लगी थी जो समय के साथ विश्वव्यापी बनी।

एक अन्य घटना डॉ. कलाम को जीवनभर याद रही वह यह थी–कलाम की लगन और मेहनत के कारण उनकी माँ खाने–पीने के मामले में उनका विशेष ध्यान रखती थीं। दक्षिण में चावल की पैदावार अधिक होने के कारण वहाँ चावल अधिक खाया जाता है। लेकिन कलाम को रोटियों से विशेष लगाव था इसलिए उनकी माँ उन्हें प्रतिदिन खाने में दो रोटियाँ अवश्य दिया करती थीं। एक बार उनके घर में खाने में गिनी चुनीं रोटियाँ ही थीं। यह देखकर माँ ने अपने हिस्से की रोटी कलाम को दे दी। उनके बड़े भाई ने कलाम को धीरे से यह बात बता दी। इससे कलाम अभिभूत हो उठे और दौड़ कर माँ से लिपट गए।

माँ के विश्वास व प्रोत्साहन का ही परिणाम था कि डॉ. कलाम अपने जीवन को बहुत अनुशासन में जीना पसंद करते थे। वे शाकाहार और ब्रह्मचर्य का पालन करने वालों में से थे। कहा जाता है कि वे कुरान और भगवद्गीता दोनों का अध्ययन करते थे और उनकी गूढ़ बातों पर अमल किया करते थे। उनके संदेश व छात्रों से बातचीत में उनके जीवन के इन भावों और माँ की प्रेरणा का बार–बार उल्लेख मिलता है, जो भारत के तमाम बच्चों और बच्चियों तथा युवाओं को कुछ नया सोचने और नया करने को प्रोत्साहित और प्रेरित करते रहे हैं।

जब डॉ. कलाम आगे की पढ़ाई के लिए बाहर गए तो उन्हें घर छोड़ना पड़ा, उस समय माँ आशियम्मा का कलेजा भर आया, वे रो पड़ीं और अपने आपको शांत नहीं कर पाईं। तब नन्हें कलाम ने माँ के पास बैठकर उन्हें समझाया–'माँ मैं तुमसे दूर कहाँ जा रहा हूँ। मैं अपनी माँ के बिना भला रह सकता हूँ! नन्हें कलाम के मुँह से ऐसी समझदारी की बात सुनकर माँ ने अपने आँसू पोंछ लिए। वे मुस्कुराईं और फिर हँसी–खुशी उन्हें विदा करने के लिए, कुछ हिदायतें देती हुईं, कुछ कदम कलाम के साथ चलीं। इसके बाद कलाम के पिता और परिवार के अन्य लोग, मित्र स्टेशन पर उन्हें छोड़ने आए थे। रेलगाड़ी में बैठकर स्कूल की ओर यात्रा करते हुए कलाम के मन में माँ की ममता थी, यादें थीं, माँ की हिदायतें, झिड़कियाँ, और शरारत करने पर की गईं सख्तियाँ थीं। कलाम का मन माँ की ममता से सराबोर था।

कोई भी बच्चा जब पहली बार घर छोड़कर बाहर अकेला रहने के लिए जाता है तो उसे सबसे ज्यादा घर से दूरी और माँ की कमी खलती है। माँ से बच्चे के मन का तार जुड़ा होता है, नन्हें बालक कलाम का माँ के प्रति यही भाव उनके बड़े होने के साथ–साथ और भी गहरा होता गया। यही भाव उनकी "माँ" कविता में दिखता है–

माँ

"समंदर की लहरें,
सुनहरी रेत,
श्रद्धानत तीर्थयात्री,
रामेश्वरम् द्वीप की वह छोटी–पूरी दुनिया।
सब में तू निहित है,
सब तुझमें समाहित।
तेरी बाँहों में पला मैं,
मेरी कायनात रही तू,
जब छिड़ा विश्वयुद्ध, छोटा–सा मैं,
जीवन बना था चुनौती, जिन्दगी अमानत,
मीलों चलते थे हम,
पहुँचते किरणों से पहले"

यह कविता उन्होंने तब लिखी जब उनकी माँ इस दुनियाँ में नहीं रहीं और यह सच जाहिर करती है कि वे कलाम के महान कामों के पीछे प्रेरणा रहीं। कलाम के बचपन को माँ ने कुछ इस तरह सँवारा और प्रोत्साहित किया कि बालमन के सभी सहज भाव डॉ. कलाम की प्रौढ़ अवस्था में छलकते रहते थे। नई चीज़ सीखने के लिए वे हमेशा तत्पर रहते थे। उनके अंदर सीखने की भूख थी और पढ़ाई पर घंटों ध्यान देना उनमें से एक था।

एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने जीवन के सबसे बड़े अफसोस का जिक्र किया था उन्होंने कहा था कि वह अपने माता–पिता को उनके जीवनकाल में 24 घंटे बिजली उपलब्ध नहीं करा सके; उन्होंने कहा था कि मेरे पिता (जैनुलाब्दीन) 103 साल तक जीवित रहे और माँ (आशियाम्मा) 93 साल तक जीवित रहीं। उन्होंने भारतीय छात्रों को अपना संदेश देते हुए कहा था –

"सपने वो नहीं होते जो रात को सोते समय नींद में आएँ, सपने वो होते हैं जो रातों में सोने नहीं देते।"

"इंतजार करने वालों को सिर्फ उतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।"

प्रस्तुत लेख डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम द्वारा लिखित पुस्तक ''विंग्स ऑफ फायर'' के हिंदी रूपान्तरण से संकलित है।

अभ्यास

पाठ से

1. डॉ. कलाम को किन–किन नामों से जाना जाता है?
2. डॉ. कलाम को सर्वाधिक प्रेरणा किससे मिली ?
3. बालक कलाम को पढ़ने के लिए माँ कैसे प्रोत्साहित करती थीं?
4. डॉ. कलाम को कौन सी घटना जीवन भर याद रही ?
5. पढ़ाई के लिए घर से दूर जाते हुए कलाम ने माँ को क्या समझाया ?
6. भारतीय छात्रों को डॉ. कलाम ने क्या संदेश दिया ?
7. डॉ. कलाम के जीवन का सबसे बड़ा अफसोस क्या था ?

पाठ से आगे

1. डॉ. कलाम की प्रेरणा–स्रोत उनकी माँ थीं। हम सब के जीवन में माँ की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण/गौरवपूर्ण है? साथियों से विचार कर लिखिए।
2. डॉ. कलाम के जीवन की सफलता उनके कठोर परिश्रम और लगन का परिणाम रही। क्या आप भी सफलता के लिए कठोर परिश्रम करते हैं ? यदि हाँ तो उदाहरण सहित अपने अनुभव को लिखिए।
3. आप घर से किसी कार्य वश या किसी संबंधी के यहाँ (बाहर) जाते हैं तो आपको किसकी याद ज्यादा आती है और क्यों ? साथियों से बातचीत कर लिखिए।

6AH88Q

4. कल्पना कीजिए आपको आगे की पढ़ाई के लिए दूर कहीं जाना पड़ा तो आपको कैसा लगेगा और आपको क्या–क्या परेशानी होगी ?
5. जीवन की किसी ऐसी घटना का उल्लेख कीजिए जब आपको माँ की बहुत याद आई हो अथवा माँ को आपने महसूस किया हो।

भाषा से

1. पाठ में आए निम्नलिखित विदेशी शब्दों को हिंदी भाषा के शब्दों में बदलिए–

अमानत, अहसास, कायनात, जिक्र, ज्यादा, सख्ती, अफसोस, सराबोर।

2. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए–

   मुझे फल ही चाहिए।

   मुझे फल भी चाहिए।

   वाक्य में 'ही' के स्थान पर 'भी' लगा देने से वाक्य का अर्थ बदल जाता है। इसी प्रकार के पाँच वाक्य बनाइए।

   6AH4AD

3. पाठ में महान काम, सहज भाव, महान व्यक्तित्व, चर्चित लोग, चुनिंदा हस्तियों– जैसे विशेषण युक्त शब्दों का प्रयोग हुआ है। पाठ में आए ऐसे ही अन्य दस विशेषण युक्त शब्दों को ढूँढ़ कर लिखिए।

योग्यता विस्तार

6M1GPA

1. डॉ. कलाम ने राष्ट्र के युवाओं को नई सोच और नए कार्य को करने की प्रेरणा दी। यदि आपको अपने विद्यालय में नया कुछ करने का मौका दिया जाए तो आप क्या कुछ नया करना चाहेंगे? योजना बनाइए।
2. डॉ. कलाम की वैज्ञानिक उपलब्धियों के बारे में शिक्षक से पता कर उससे संबंधित चित्र के साथ कक्षा–कक्ष में प्रदर्शन कीजिए।
3. नेल्सन मंडेला, आंग सांग सू की और मलाला युसुफजाई के बारे में शिक्षक से चर्चा कर 10–10 पंक्तियाँ लिखिए।

पाठ 13

सुभाषचंद्र बोस का पत्र

– संकलित

'नेता जी' के नाम से प्रसिद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के ओजस्वी सेनानी सुभाषचंद्र बोस ने यह पत्र 'केसरी' पत्रिका के संपादक श्री एन. सी केलकर के नाम बर्मा के मांडले जेल से लिखा। बोस को जब बरहमपुर (बंगाल) जेल से मांडले जेल स्थानांतरित किया गया तो उस जेल में पहुँचने के बाद उनकी स्मृति में यह बात कौंधी कि महान क्रांतिकारी और कांग्रेस (गरम दल) के नेता 'लोकमान्य' बाल गंगा धर तिलक ने अपने कारावास के अधिकांश भाग बेहद हतोत्साहित कर देने वाले इसी परिवेश में व्यतीत किए थे। कारावास के छह वर्ष लोकमान्य ने अत्यंत शारीरिक और मानसिक यंत्रणा में बिताए फिर भी उस त्रासद स्थिति में 'गीता भाष्य' जैसी ग्रन्थ की रचना की। मांडले जेल–जीवन के बारे में बोस के शब्द हैं "मैंने भगवान को धन्यवाद दिया कि मांडले में अपनी मातृभूमि और स्वदेश से बलात् अनुपस्थिति के बावजूद मुझे पवित्र स्मृतियाँ राहत और प्रेरणा देंगीं। अन्य जेलों की तरह यह भी एक ऐसा तीर्थस्थल है, जहाँ भारत के एक माहन सपूत लगातार छह वर्ष तक रहे।"

प्रिय श्री केलकर,

मैं पिछले कुछ महीनों से आपको पत्र लिखने की सोच रहा था जिसका कारण केवल यह रहा है कि आप तक ऐसी जानकारी पहुँचा दूँ जिसमें आपको दिलचस्पी होगी। मैं नहीं जानता कि आपको मालूम है या नहीं कि मैं यहाँ गत जनवरी से कारावास में हूँ। जब बरहमपुर जेल (बंगाल) से मुझे माँडले जेल के लिए स्थानांतरण का आदेश मिला था, तब मुझे यह स्मरण नहीं आया था कि लोकमान्य तिलक ने अपने कारावास काल का अधिकांश भाग माँडले जेल में ही गुजारा था। इस चहारदीवारी में, यहाँ के बहुत ही हतोत्साहित कर देनेवाले परिवेश में, स्वर्गीय लोकमान्य ने अपने सुप्रसिद्ध 'गीता भाष्य' ग्रंथ का प्रणयन किया था जिसने मेरी नम्र राय में उन्हें 'शंकर' और 'रामानुज' जैसे प्रकांड भाष्यकारों की श्रेणी में स्थापित कर दिया है।

जेल के जिस वार्ड में लोकमान्य रहते थे वह आज तक सुरक्षित है, यद्यपि उसमें फेरबदल किया गया है और उसे बड़ा बनाया गया है। हमारे अपने जेल के वार्ड की तरह, वह लकड़ी के तख्तों से बना है, जिसमें गर्मी में लू और धूप से, वर्षा में पानी से, शीत ऋतु में सर्दी से तथा सभी ऋतुओं में धूलभरी हवाओं

से बचाव नहीं हो पाता। मेरे यहाँ पहुँचने के कुछ ही क्षण बाद, मुझे उस वार्ड का परिचय दिया गया। मुझे यह बात अच्छी नहीं लग रही थी कि मुझे भारत से निष्कासित कर दिया गया था लेकिन मैंने भगवान को धन्यवाद दिया कि माँडले में अपनी मातृभूमि और स्वदेश से बलात् अनुपस्थिति के बावजूद मुझे पवित्र स्मृतियाँ राहत और प्रेरणा देंगी। अन्य जेलों की तरह यह भी एक ऐसा तीर्थस्थल है, जहाँ भारत का एक महानतम सपूत लगातार छह वर्ष तक रहा था।

हम जानते हैं कि लोकमान्य ने कारावास में छह वर्ष बिताए। लेकिन मुझे विश्वास है कि बहुत कम लोगों को यह पता होगा कि उस अवधि में उन्हें किस हद तक शारीरिक और मानसिक यंत्रणाओं से गुजरना पड़ा था। वे यहाँ एकदम अकेले रहे और उन्हें कोई बौद्धिक स्तर का साथी नहीं मिला। मुझे विश्वास है कि उन्हें किसी अन्य बंदी से मिलने–जुलने नहीं दिया जाता था।

उनको सांत्वना देनेवाली एकमात्र वस्तु किताबें थीं और वे एक कमरे में एकदम एकाकी रहते थे। यहाँ रहते हुए उन्हें दो या तीन भेंटों से अधिक का मौका नहीं दिया गया और ये भेंटें भी पुलिस और जेल अधिकारियों की उपस्थिति में हुई होंगी, जिससे वे कभी भी खुलकर और हार्दिकता से बात नहीं कर पाए होंगे।

उन तक कोई भी अखबार नहीं पहुँचने दिया जाता था। उनकी जैसी प्रतिष्ठा और स्थितिवाले नेता को बाहरी दुनिया के घटनाचक्रों से एकदम अलग कर देना, एक तरह की यंत्रणा ही है और इस यंत्रणा को जिसने भुगता है, वही जान सकता है। इसके अलावा उनके कारावास की अधिकांश अवधि में देश का राजनैतिक जीवन मंद गति से खिसक रहा था और इस विचार ने उन्हें कोई संतोष नहीं दिया होगा कि जिस उद्देश्य को उन्होंने अपनाया था, वह उनकी अनुपस्थिति में किस गति से आगे बढ़ रहा है।

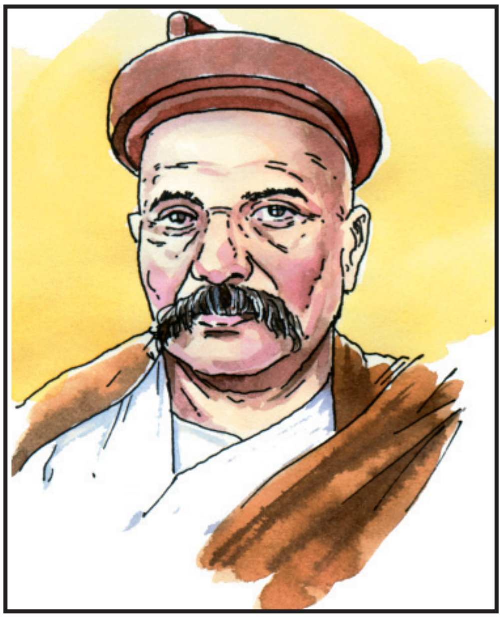

उनकी शारीरिक यंत्रणा के बारे में जितना ही कम कहा जाए, बेहतर होगा। वे दंड–संहिता के अंतर्गत बंदी थे और इस प्रकार आज के राजबंदियों की अपेक्षा कुछ मायनों में उनकी दिनचर्या कहीं अधिक कठोर रही होगी। इसके अलावा उन्हें मधुमेह की बीमारी थी। जब लोकमान्य यहाँ थे, माँडले का मौसम तब भी प्रायः ऐसा रहा होगा जैसा वह आजकल है और अगर आज नौजवानों को शिकायत है कि वहाँ की जलवायु शिथिल कर देनेवाली और मंदाग्नि तथा गठिया को जन्म देनेवाली है और धीरे–धीरे, वह व्यक्ति की जीवन–शक्ति को सोख लेती है, तो लोकमान्य ने, जो वयोवृद्ध थे, कितना कष्ट झेला होगा?

लेकिन इस कारागार की चहारदीवारियों में उन्होंने क्या यातनाएँ सहीं, इसके विषय में लोगों को बहुत कम जानकारी है। कितने लोगों को पता होता है, उन अनेक छोटी–छोटी बातों का, जो किसी बंदी के जीवन में सुइयों की सी चुभन बन जाती हैं और जीवन को दूभर बना देती हैं।

वे गीता की भावना में मग्न रहते थे और शायद इसलिए दुख और यंत्रणाओं से ऊपर रहते थे। यही कारण है कि उन्होंने उन यंत्रणाओं के बारे में किसी से कभी एक शब्द भी नहीं कहा।

समय–समय पर मैं इस सोच में डूबता रहा हूँ कि कैसे लोकमान्य को अपने बहुमूल्य जीवन के छह लंबे वर्ष इन परिस्थितियों में बिताने के लिए विवश होना पड़ा था। हर बार मैंने अपने आपसे पूछा, ''अगर नौजवानों को इतना कष्ट महसूस होता है तो महान लोकमान्य को अपने समय में कितनी पीड़ा सहनी पड़ी होगी, जिसके विषय में उनके देशवासियों को कुछ भी पता नहीं रहा होगा।'' यह विश्व भगवान् की कृति है, लेकिन जेलें मानव के कृतित्व की निशानी हैं। उनकी अपनी एक अलग ही दुनिया है और सभ्य समाज ने जिन विचारों और संस्कारों को प्रतिबद्ध होकर स्वीकार किया है, वे जेलों में लागू नहीं होते। अपनी आत्मा के ह्रास के बिना, बंदी जीवन के प्रति अपने आपको अनुकूल बना पाना आसान नहीं है। इसके लिए हमें पिछली आदतें छोड़नी होती हैं और फिर भी स्वास्थ्य और स्फूर्ति बनाए रखनी होती है। केवल लोकमान्य जैसा दार्शनिक ही उस यंत्रणा और दासता के बीच मानसिक संतुलन बनाए रख सकता था और 'गीता भाष्य' जैसे विशाल एवं युग–निर्माणकारी ग्रंथ का प्रणयन कर सकता था।

मैं जितना ही इस विषय पर चिंतन करता हूँ उतना ही ज्यादा मैं उनके प्रति आदर और श्रद्धा में डूब जाता हूँ। आशा करता हूँ कि मेरे देशवासी लोकमान्य की महत्ता को आँकते हुए इन सभी तथ्यों को भी दृष्टिपथ में रखेंगे। जो महापुरुष मधुमेह से पीड़ित होने के बावजूद इतने सुदीर्घ कारावास को झेलता गया और जिसने उन अंधकारमय दिनों में अपनी मातृभूमि के लिए ऐसी अमूल्य भेंट तैयार की, उसे विश्व के महापुरुषों की श्रेणी में प्रथम पंक्ति में स्थान मिलना चाहिए।

लेकिन लोकमान्य ने प्रकृति के जिन अटल नियमों से अपने बंदी जीवन के दौरान टक्कर ली थी, उनको अपना बदला लेना ही था। अगर मैं कहूँ तो मेरा विश्वास है कि लोकमान्य ने जब माँडले को अंतिम नमस्कार किया था तो उनके जीवन के दिन गिने–चुने ही रह गए थे। निस्संदेह यह एक गंभीर दुख का विषय है कि हम अपने महानतम पुरुषों को इस प्रकार खोते रहे, लेकिन मैं यह भी सोचता हूँ कि क्या वह दुर्भाग्य किसी–न–किसी प्रकार टाला नहीं जा सकता था।

आदरपूर्वक।

आपका स्नेहभाजन,

सुभाषचंद्र बोस

टिप्पणी

एन.सी.केलकर – तत्कालीन विदर्भ के काँग्रेस के वरिष्ठ नेता। बाद में 'स्वराज्य दल' में सम्मिलित हो गए थे। लोकमान्य तिलक के निधन के पश्चात् 'केसरी' पत्रिका का सम्पादन श्री केलकर ने ही सँभाला था।

शंकर व रामानुज – शंकराचार्य और रामानुज भारत के प्रसिद्ध दार्शनिक थे। इन्होंने अपने–अपने ग्रंथों में ब्रह्म, जगत्, जीव आदि दार्शनिक तत्वों पर अपने–अपने विचार प्रकट किए हैं और वेदों का भाष्य लिखा है।

अभ्यास

पाठ से

1. नेता जी ने केलकर को पत्र क्यों लिखा ?
2. लोकमान्य ने अपने जीवन का छह वर्ष कहाँ और क्यों गुजारा ?
3. सुभाषचंद्र बोस ने भगवान को धन्यवाद क्यों दिया ?
4. सुभाषचंद्र बोस ने जेलों को तीर्थस्थल क्यों कहा है ?
5. लोकमान्य को कारावास में सांत्वना देनेवाली वस्तु क्या थी ?
6. लोकमान्य दु:ख और यंत्रणाओं से ऊपर रहते थे, कैसे ?
7. सुभाषचन्द्र बोस ने किस पुस्तक की रचना की और उसका विषय क्या है ?
8. नेता जी के अनुसार आजकल के नौजवान को मॉंडले के जलवायु से क्या शिकायत है ?

पाठ से आगे

6HJ8SK

1. पाठ में लिखा है कि उनको सांत्वना देनेवाली एकमात्र वस्तु किताबें थीं और वे एक कमरे में एकाकी रहते थे। एकाकीपन में पुस्तक कैसे सांत्वना देती हैं और एकाकीपन को कैसे दूर करते हैं। आपस में बातचीत कर पुस्तक के उपयोग पर अपनी समझ लिखिए।
2. कारावास अथवा जेल जीवन हमारे घर के जीवन अथवा आम जन जीवन से कैसे अलग है? साथियों से चर्चा कर लिखिए।
3. कल्पना कर लिखिए कि जब नौजवानों को उस जलवायु से इतनी शिकायत थी तो मधुमेह से ग्रस्त वृद्ध लोकमान्य को कितना कष्ट झेलना पड़ा होगा।
4. लोकमान्य को अपने बहुमूल्य जीवन के छह वर्ष उन कठिन परिस्थितियों में क्यों बिताने पड़े? साथियों और शिक्षकों से चर्चा कर लिखिए।
5. नेता जी का मानना है कि सुदीर्घ कारावास के अंधकारमय दिनों में भी लोकमान्य ने अपनी मातृभूमि के लिए अमूल्य भेंट तैयार की इसलिए उन्हें विश्व के महापुरुषों की श्रेणी में प्रथम स्थान मिलना चाहिए। प्रथम श्रेणी का यहाँ क्या अर्थ है? साथियों से बातचीत कर लिखिए।

भाषा से

1. देशवासी अर्थात देश में रहनेवाले, कारावास–कारा में वास, राजनीति– राजा की नीति पाठ में इस प्रकार के बहुत सारे सामासिक पदों का प्रयोग हुआ है। उनका विग्रह कर समास का नाम लिखिए।

6HT4U8

राजबंदी, तीर्थस्थल, बहुमूल्य, लोकमान्य, महापुरुष, स्थानान्तरण, चहारदीवारी, एकाग्रचित, घटनाचक्र

2. निम्नलिखित अवतरण में कुछ विराम चिह्न छूट गए हैं उनका यथास्थान प्रयोग कीजिए–

लेकिन कारागार की चहारदीवारियों में उन्होंने क्या यातनाएँ सहीं इसके विषय में लोगों को बहुत कम जानकारी है। कितने लोगों को पता है उन अनेक छोटी–छोटी बातों का जो किसी बंदी के जीवन में सुइयों की–सी चुभन बन जाती है और जीवन को दूभर बना देती है। वे गीता की भावना में मग्न रहते थे। और शायद इसलिए दुःख और यंत्रणाओं से ऊपर रहते थे। यही कारण है कि उन्होंने यंत्रणाओं के बारे में किसी से एक शब्द भी नहीं कहा।

3. पाठ में दिए गए इस वाक्य को ध्यान से पढ़िए–

'वहाँ भारत का एक महानतम सपूत लगातार छह वर्षों तक रहा' यहाँ पर 'महानतम' शब्द गुणवाचक विशेषण का तुलनाबोधक रूप है। मूल शब्द महान है उत्तर अवस्था महानतर उत्तमावस्था महानतम है, जैसे अधिक–अधिकतर–अधिकतम , सुंदर–सुंदरतर–सुंदरतम

इसी प्रकार के पाँच विशेषण के शब्दों में तर, तम जोड़कर उनके रूप लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. गीता भाष्य क्या है ? इसके संबंध में अपने शिक्षकों से पूछकर इसके ऊपर अपनी समझ को लिखिए और कक्षा में सुनाइए।

2. जेल जीवन के अनुभव और कठिनाइयों के बारे में अनेक महापुरुषों जैसे गाँधी, नेहरु, जयप्रकाश ने पत्र लिखे हैं। उन्हें खोजकर पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।

6N2ZVV

पाठ 14

भारत बन जाही नंदनवन

–कोदूराम 'दलित'

अपन देश ल नंदनवन जइसन सुघ्घर बनाय म उहाँ के लोगन मन के ज्ञान अऊ मेहनत ह आधार होथे। असली ताकत मेहनत करइया किसान अऊ मजदूर होथे। जब तक आलस ल नई छोड़ही तब तक उहाँ रहइया मन आगू नई बढ़ सकय। जनता के दुःख–पीरा हरे मा खुद के मेहनत अऊ विश्वास होथे। किसान अऊ मजदूर चाहय त खंडहर ह तको रंगमहल के समान बन जाही।

कविता म कवि ह देश के जवान मन ले, मजदूर अऊ किसान मन ले आलस छोड़ के मेहनत के बात कहे हे।

6NBVXI

हे नव भारत के तरुण वीर,
हे भीम, भागीरथ, महावीर ।

झन भुला अपन पुरुसारथ बल,
खँड़हर मा रच अब रंगमहल ।

ये राज तोरे, सरकार तोर,
ये दिल्ली के दरबार तोर ।

हे स्वतंत्र भारत के नरेस,
जन–जन के जल्दी हर कलेस ।

माँगे स्वदेश श्रमदान तोर,
संपदा, ज्ञान–विधान तोर ।

जब तोर पसीना पा जाही,
ये पुरुस–भूमि हरिया जाही।

पाही जब तोर बटोरे धन,
भारत बन जाही नंदनवन।

पाही बन तोर विसुद्ध ज्ञान,
भारत बनही जग मा महान।

तज दे आलस, कर श्रम कठोर,
पिछवा जाबे अब झन अगोर ।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ			अन्य शब्दार्थ		
झन	=	मत,नहीं	नवभारत	=	नया भारत
पुरुसारथ	=	पुरुषार्थ, पराक्रम	तरुण	=	युवा,जवान
कलेस	=	कष्ट	रंगमहल	=	आमोद–प्रमोद के लिए बनाया गया महल
पिछवा जाबे	=	पिछड़ जाओगे	स्वदेश	=	अपना देश
अगोरमा	=	प्रतीक्षा करना	नंदनवन	=	स्वर्ग में देवराज इंद्र की वाटिका
नरेस	=	नरेश या राजा			

अभ्यास

पाठ से

1. कवि ह भीम, भगीरथ, अउ महावीर कोन ल केहे हे ?
2. कवि देश के नवजवान मन ले का माँगत हे ?
3. ''खंडहर मा रच अब रंग महल'' के भाव ल समझावव।
4. कवि ह नवजवान मन ले कड़ा मिहनत करे बर काबर कहत हे ?
5. भारत नंदनवन कब बन जाहि ?
6. खाल्हे लिखाय कविता के पंक्ति मन के अर्थ लिखव–

   क. झन भुला अपन पुरुसारथ बल
   खंडहर मा रच अब रंगमहल।

   ख. हे स्वतंत्र भारत के नरेस
   जन–जन के जल्दी हर कलेस

पाठ से आगे

1. तुमन ल अपन जीवन म कभू भीम. भगीरथ, महावीर के पात्र के किरदार निभाय के मौका मिलही त तीनों में से काकर किरदार निभाना पसंद करहु अउ काबर ? सोचके लिखव।
2. जउन घर के मुखिया आलसी होथे वो घर परिवार के लोगन म ओकर का–का परभाव पड़थे। अपन घर के मन ला पूछ के लिखव।

3. तुमन ल कभू जीवन म एक दिन बर अपन राज्य के मुख्यमंत्री बना दिए जाही त अपन राज्य के विकास वर का–का काम करहू ? अपन साथी मन संग चर्चा करके विकास बर करे काम के सूची बनावव।

6NKRZ6

4. देश के नौजवान मन ले कवि बहुत उम्मीद करत हे। नौजवान मन का–का कर सकत हे ? अपन साथी मन संग चर्चा करके विकास काम के सूची बनावव।

भाषा से

1. ये शब्द मन के हिंदी रूप लिखव –

पुरुसारथ, अगोर, कलेस, झन, पिछवा, पुरुस–भूमि, विसुद्ध।

6NUN1T

2. कविता म नरेस–कलेस, ज्ञान–महान, जइसन तुक–ले तुक मिले शब्द आय है। अइसन शब्द मन ल समानोच्चरित शब्द कहिथे।

खाल्हे लिखाय शब्द मन के दो–दो समानोच्चरित शब्द लिखव–

स्वदेश, वीर, तोर, विशुद्ध, महल

3. खाल्हे लिखाय शब्द मन के उल्टा अर्थ वाला शब्द लिखव –

गुन, आगू, कठोर, खंडहर, नरेस, विशुद्ध।

योग्यता विस्तार

1. भारत ल अउ का–का नाम ले जाने जाथे वोकर सूची बनावव।

6P4J3G

2. पहिली के भारत अउ वर्तमान भारत म कोन–कोन से अंतर मालूम होथे शिक्षक के सहायता से चर्चा करके लिखव।

पाठ 15

शतरंज में मात

–डॉ. श्री प्रसाद

लोक अनुश्रुतियों और इतिहास के पन्नों में बीरबल, गोनू झा, मुल्ला दो प्याजा, गोपाल भांड आदि अनेक ऐसे व्यक्तित्व का उल्लेख मिलता है जो अपनी बुद्धि चातुर्य और वाक्–पटुता या हाजिर जवाबी के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। उन्हीं में एक प्रसिद्ध चरित्र तेनाली राम का है, जो विजय नगर राज के राजा कृष्णदेव राय के दरबारी थे। इनके जीवन–योगदान के प्राय: दो स्वरूप देखने को मिलते हैं। एक तो न्याय व्यवस्था में, कि गुनाहगार को ही सजा मिले और निर्दोष के साथ न्याय हो सके और दूसरे दरबार में उनसे जलन रखने वाले अथवा उनके खिलाफ षड्यंत्र रचने वाले लोगों का पर्दाफाश किया जा सके जिससे राजा को वास्तविकता का एहसास कराया जा सके। कुछ ऐसा ही दृश्य प्रस्तुत एकांकी पढ़ते हुए हम देख और महसूस कर सकते हैं।

6PDF54

पात्र –

राजा कृष्णदेव राय	तेनालीराम
नाई	दरबारी
सेवक	दर्शकगण

पहला दृश्य

(राजा का दरबार। दरबारी अपने–अपने आसन पर बैठे हैं। राजा और तेनालीराम के आसन अभी खाली हैं।)

पहला दरबारी – देखा, अभी तक नहीं आए तेनालीराम।

दूसरा दरबारी – भला क्यों आएँगे? जब स्वयं महाराज उनकी मुट्ठी में हैं तो वे हम जैसों को क्यों पूछेंगे?

तीसरा दरबारी – महाराज ने भी खूब सिर चढ़ाया है तेनाली को!

चौथा दरबारी – (राजा की नकल करता है) "हाँ तेनाली! वाह तेनाली! क्या पते की बात कही तेनाली ने...।" तेनाली, तेनाली, तेनाली! कान पक गए हैं प्रशंसा सुनते–सुनते।

पहला दरबारी – महाराज के सिर से तेनाली का भूत उतारना होगा।

दूसरा दरबारी – कितनी बार प्रयत्न किया। तेनाली की चतुराई के आगे हमारी एक नही चली!

चौथा दरबारी – कुछ युक्ति निकाली जाए!

पहला दरबारी – (चुटकी बजाते हुए) निकाल लिया मैंने उपाय! सुनो! (सब उसे घेर लेते हैं। आपस में खुसुर–फुसुर होती है। सब खुश नज़र आते हैं। तभी नगाड़े बजने लगते हैं।)

एक सेवक – सावधान! महाराजाधिराज कृष्णदेव राय पधार रहे हैं।

(दरबारीगण अपने–अपने आसन की ओर भागते हैं। चेहरों पर गंभीरता का भाव लाकर राजा का स्वागत करते हैं।)

राजा – (बैठते ही) तेनालीराम कहाँ हैं?

पहला दरबारी – (अन्य दरबारियों को देखते हुए) लो आते ही आ गई याद! (राजा से) अभी नहीं आए। लगता है शतरंज का खेल जमा है कहीं।

एक दरबारी – कहीं शतरंज खेल रहे होंगे।

राजा – शतरंज। तेनालीराम क्या शतरंज के शौकीन हैं?

दूसरा दरबारी – हाँ महाराज, वे तो गजब के खिलाड़ी हैं।

तीसरा दरबारी – पर महाराज की बराबरी नहीं कर सकते।

चौथा दरबारी – महाराज, आज्ञा हो तो मुकाबला आयोजित किया जाए। एक ओर आप, दूसरी ओर तेनालीराम। तेनाली जी नहला, तो आप भी तो दहला हैं।

राजा – (खुश होकर) क्या उत्तम सुझाव है! बराबर का खिलाड़ी मिले, तभी खेल का आनंद आता है। यह तेनाली भी बड़ा दुष्ट निकला। मुझे बताया क्यों नहीं?

पहला दरबारी – वह आपकी हार नहीं देखना चाहता, महाराज! इसलिए छिपाए रखा। पर वास्तव में बड़ा घाघ है तेनाली। एक–से–एक खिलाड़ियों को मात दे चुका है।

राजा – घाघ है तो हम भी कम नहीं। हो जाएँ दो–दो हाथ!

सेवक –	श्री तेनालीराम जी आ रहे हैं!
	(तेनालीराम का प्रवेश)
तेनाली –	(झुककर) प्रणाम! महाराजाधिराज की जय हो!
	(राजा मुँह फेरते हैं; तेनाली चौंकता है।)
तेनाली –	इस तुच्छ सेवक का प्रणाम स्वीकार करें, महाराज।
राजा –	(क्रोधित होकर) तेनाली, तुमने बताया नहीं कि तुम शतरंज में माहिर हो।
तेनाली –	(चकित होकर) शतरंज और मैं! शतरंज के विषय में मैं कुछ नहीं जानता महाराज।
राजा –	(क्रोधित होने की मुद्रा में)मुझे सब पता है तेनाली! बात अब छिप नहीं सकती। (दरबारियों से) क्यों?
पहला दरबारी –	हाँ, महाराज, बड़े–बड़ों को मात दी है तेनाली ने।
तीसरा दरबारी –	ज़रा बच के खेलिएगा, महाराज।
सब दरबारी –	(मुँह छिपाकर हँसते हुए) क्या आनंद आ रहा है!
तेनाली –	(घबराकर) पर... पर... मुझे वास्तव में शतरंज का ज्ञान नहीं, महाराज... इस अनाड़ी के संग खेलकर आप पछताएँगे।
राजा –	कोई बहाना नहीं चलेगा। (सेवक से) जाओ, व्यवस्था करो।
तेनाली –	मैं नहीं खेलता शतरंज! (सिर ठोकता है।)
पहला दरबारी –	तेनालीजी, क्यों अस्वीकार करते हैं?
दूसरा दरबारी –	जब महाराज ने स्वयं न्यौता दिया है!
तीसरा दरबरी –	तेनालीजी, दाँव ज़रा सोचकर चलिएगा!
	(सभी हँसकर तेनाली के असमंजस का आनंद लूटते हैं। तेनाली उन्हें देखता हुआ कुछ सोचता है।)
तेनाली –	(दर्शकों से) समझा! चाल चली है सबने। ठीक है! (पर्दा गिरता है।)

दूसरा दृश्य

(दरबार भवन। बीच में चौकी, उस पर गद्दी। एक ओर तकिए से टिके राजा। सामने मुँह लटकाए तेनाली। बीच में शतरंज की चादर बिछी है। चारों ओर दरबारी और अन्य लोग बैठे हैं।)

दरबारीगण –	(दर्शकों से) अब बरसेगा महाराज का क्रोध तेनाली पर!
राजा –	(हुक्का हटाकर) हाँ भई तेनाली, खेल आरंभ हो।
तेनाली –	(मुँह लटकाए, धीरे–से) महाराज आरंभ करें।
राजा –	यह चला मैं पहली चाल। (मोहरा उठाकर रखते हैं।)

चौथा दरबारी –	क्या चाल चली महाराज ने! (ताली बजाता है।)
तेनाली –	(सोच में) ऐं ... क्या चलूँ?
दूसरा दरबारी –	पर हमारे तेनाली भी कुछ कम नहीं।
तेनाली –	(एक मोहरा उठाते हुए अपने आपसे) चलो, इसे बढ़ाता हूँ।
राजा –	(दर्शकों से) ऐं? सबसे पहले वज़ीर? अवश्य कोई गूढ़ चाल है। सोच–समझ कर चलूँ। (चाल चलते हैं।)
तेनाली –	(दर्शकों से) कुछ भी चलें मुझे क्या? (राजा से) लीजिए, यह चला।
राजा –	(धीरे–से) यह क्या? चतुराई है या मूर्खता?खैर मैंने यह चला।
तेनाली –	अब चला यह घोड़ा।
राजा –	अरे, यह तो सरासर मूर्खता है। अवश्य जानबूझकर हार रहा है। (गरजकर) तेनाली! मन से खेलो!
पहला दरबारी –	ठीक से खेल जमाओ, तभी महाराज को आनंद आएगा।
दूसरा दरबारी –	महाराज को अनाड़ी नहीं, बराबरी का खिलाड़ी चाहिए।
चौथा दरबारी –	आप कुशल खिलाड़ी हैं, जानकर मत हारिए।
तेनाली –	(मन में) अच्छा तमाशा बन रहा है मेरा।
राजा –	(समझाते हुए) ठीक से खेलो! यह मत समझो कि मैं आसानी से हार जाऊँगा।
तेनाली –	मैंने सच कहा था महाराज, मुझे खेल का ज्ञान नहीं है।
राजा –	(क्रोधित होकर) तो क्या ये सब असत्य बोल रहे है?
सब दरबारी –	महाराज, हमने अपनी आँखों से इन्हें बाज़ी–पर–बाज़ी जीतते हुए देखा है।
राजा –	सुना? यदि अब भी हारे तो कठोर–से–कठोर दंड दूँगा। (तेनाली चाल चलता है।)
राजा –	(गरजकर) फिर अनाड़ी चाल! अपना सही रंग दिखाओ, खेल जमाओ!
तेनाली –	जैसी आज्ञा! लीजिए, यह चलता हूँ।
राजा –	उड़ गया न तुम्हारा प्यादा! (क्रोधित होकर) फिर जानकर हारे तुम।
पहला दरबारी –	महाराज अति चतुर हैं। उनका अपमान किया तो ठीक नहीं होगा, तेनाली।
दूसरा दरबारी –	(भड़काते हुए) महाराज का क्रोध भयंकर है, तेनाली।
राजा –	अबकी हारे तो भरी सभा में तुम्हारा सिर मुँड़वा दूँगा। (खेल बढ़ाते हुए) यह रही मेरी चाल।

तेनाली – (सिर खुजाते हुए) मैंने इससे दिया उत्तर।

राजा – मारे गए तुम। सँभल जाओ। यह हुई मेरी अगली चाल।

तेनाली – और यह है मेरा दाँव।

राजा – फँसाया न? वज़ीर क्यों चले?

तेनाली – बेगम के बचाव के लिए वज़ीर बढ़ाया।

राजा – और यह कटा तुम्हारा वज़ीर।

तेनाली – अब आए स्वयं राजा।

राजा – गया तुम्हारा राजा। फिर पिट गए।इतनी मूर्खता? मुझे विश्वास नहीं रहा तुम पर तेनाली। (उठ खड़े होते हैं, शतरंज उलट देते हैं, मोहरे उठाकर ज़ोरों से फेंकते हैं।) अच्छा खेल बनाया हमारा। (दरबारियों से) कल दरबार में नाई बुलाना। तेनाली के बाल उतरवाऊँगा; अपमान का बदला लूँगा। (तमतमाया चेहरा लिए पाँव पटकते चल देते हैं।)

पहला दरबारी – (खुशी–खुशी) बन गई न बात।

तेनाली – (मुँह छिपाए) भरी सभा में मुंडन? इससे बढ़कर है कोई अपमान? (पर्दा गिरता है।)

तीसरा दृश्य

(दरबार भवन। बीच में ऊँचा मंच। राजा सिंहासन पर। तेनाली अपने आसन पर। एक सेवक नाई को खींचता हुआ लाता है।)

नाई – (राजा के सामने गिरकर) मैंने कुछ नही किया, महाराज! मैं निर्दोष हूँ।

राजा – उठो, उठो। तुम्हें कोई सज़ा नहीं मिल रही है।

नाई – (खुश होकर) नहीं? फिर...?

राजा – अपना उस्तरा निकालो। मुंडन करना है।

नाई – मुंडन! तब तो इनाम भी अच्छा मिलेगा। फिर मुझे क्या? राज–दरबार में केश उतारूँ या नदी किनारे, सब बराबर। (पेटी खोल तैयारी करता है। तमाशा देखने के उत्सुक दरबारी धीरे–धीरे मंच के निकट आते हैं।)

तेनाली – क्षमा करें, महाराज।

राजा – क्षमा–वमा कुछ नहीं। यह तुम्हें पहले सोचना था, जब मेरा अपमान किया। मंच पर चढ़ो। (तेनाली हॉल के बीच मंच पर चढ़ता है।)

नाई – अरे, इतने महान आदमी का मुंडन!

राजा – डरो मत, नाई! तुम आज्ञा का पालन करो।

नाई – जो आज्ञा, महाराज! (उस्तरा लेकर तेनाली के पास जाता है।)

तेनाली – महाराज, आज्ञा दें तो एक निवेदन करूँ।

दरबारीगण – (आपस में) अवश्य कोई नई चाल है।

राजा – कहो तेनाली!

तेनाली – महाराज! इन बालों पर मैंने पाँच हज़ार अशर्फ़ियाँ उधार ली हैं। जब तक कर्ज़ा न चुका दूँ, केश कटवाने का कोई हक नहीं मुझे।

सब दरबारी– देखी तेनाली की धूर्तता।

राजा– शांत! दंड तो भुगतना पड़ेगा इनको। (सोचकर, एक दरबारी से) जाओ, अभी कोष से पाँच हज़ार अशर्फ़ियाँ निकलवाकर इनके घर भिजवाओ। (नाई से) काम पूरा करो। देखना, एक बाल भी न छूटे।

(दरबारी खुश। नाई फिर उस्तरा उठाता है।)

तेनाली – (रोककर) क्षण भर सधो भैया! (आसन लगाकर मंच पर बैठ जाता है। आँखें मूँद, हाथ जोड़ मंत्रों का उच्चारण करता है।) ओऽम् नमः शिवाय, ओऽम् नमः...

राजा – (बीच में) तेनाली, यह क्या?

दरबारी – (आपस में) एक नया ढोंग। हद है चतुराई की!

तेनाली – (आँखें खोलकर शांति से समझाते हुए) कृपया, बीच में न टोकें। मैं आपकी भलाई के लिए प्रार्थना कर रहा हूँ।

राजा – पहेली मत बुझाओ। नाई, देरी क्यों? उस्तरा उठाओ।

तेनाली – मेरी बात सुनने का कष्ट करें, महाराज!

दरबारी – (अधीर होकर) महाराज, मत सुनिए। नाई, अपना काम करो।

(नाई फिर उस्तरा उठाता है। राजा रोकता है।)

तेनाली – हमारे यहाँ माता–पिता के स्वर्ग सिधारने पर ही मुंडन होता है।

राजा – तुम्हारे माता–पिता स्वर्ग सिधार चुके हैं, फिर क्या आपत्ति?

तेनाली – महाराज, अब आप ही मेरे माता–पिता हैं। आप सामने विराजमान हैं। फिर मुंडन कैसे कराऊँ? इधर मेरा मुंडन हो, उधर आप स्वर्ग सिधारें, तो?

राजा – (घबराकर) अरे, यह कैसे हो सकता है?

तेनाली – आपके स्वर्ग सिधारने से पहले मैं मुंडन कराऊँ तो ज़रूर आप पर विपत्ति आएगी। इसलिए प्रभु को याद कर रहा हूँ।

राजा – (सोचते हुए) मुंडन से पहले सच में मृत्यु आ गई तो? नहीं, नहीं! रोक दो हाथ, नाई! तेनाली, दंड वापिस लिया मैंने!

तेनाली – महाराज! आप दीर्घायु हों, आप महान् हैं।

राजा – (मुस्कराते हुए) और तुम कुछ कम नहीं। तुमसे कौन जीत सकता है? अशर्फ़ियाँ भी लीं, दंड–अपमान से भी बचे। पर मैं तुम्हारी चतुराई से एक बार फिर खुश हो गया। चलो, बाग में चलें। (सिंहासन से उतरकर तेनाली को साथ लिए बाहर निकल जाते हैं।)

पहला दरबारी – (सिर ठोकते हुए) फिर छूट गया तेनाली।

दूसरा दरबारी – (लड़खड़ाकर गिरते हुए) पाँच हज़ार अशर्फ़ियाँ भी मार लीं।

तीसरा दरबारी – (बाल नोचते हुए) हम फिर हार गए।

सब दरबारी – हाय तेनाली! तुम्हारी बुद्धि ने हमें फिर मात दी।

(पर्दा गिरता है।)

अभ्यास

पाठ से

1. ''भरी सभा में मुंडन? इससे बढ़कर है कोई अपमान!'' ये वाक्य किसने, किससे और क्यों कहे?

6PMB6R

2. मुंडन किसका और क्यों हो रहा था?
3. तेनालीराम ने कैसे दंड से मुक्ति पाई और साथ ही पाँच हजार अशर्फ़ियाँ प्राप्त की?
4. दरबारी तेनालीराम से क्यों चिढ़ते थे? कारणों को लिखिए।

भाषा से

1. 'सिर चढ़ना' – प्रस्तुत एकांकी में आपने यह मुहावरा पढ़ा। ऐसे ही सिर से संबंधित चार और मुहावरे लिखिए तथा वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

6PW78E

2. नीचे कुछ संज्ञाएँ दी गईं हैं। आपको इनसे विशेषण बनाने हैं।

   शिक्षा, अपमान, दोष, ढोंग, क्रोध, ज्ञान।

3. विलोमार्थी शब्दों की जोड़ी बनाइए –

प्रशंसा	अव्यवस्था
चतुराई	सज्जन
खुश	पराजय
दुष्ट	निंदा
उत्तम	नाखुश
जय	मूर्खता
व्यवस्था	अधम

योग्यता विस्तार

1. तेनालीराम की चतुराई की कई प्रसिद्ध कथाएँ हैं। ऐसी ही कोई एक–एक कथा कक्षा में अलग–अलग विद्यार्थी सुनाए।

6Q63A2

2. शतरंज का जन्म भारत में हुआ था। ऐसे और खेलों का पता लगाइए जिनकी जन्मभूमि भारत है।
3. सोचिए कि यदि आप तेनालीराम की जगह होते/होतीं तो क्या करते/करतीं ?
4. इस एकांकी को कहानी के रूप में कक्षा में सुनाइए।
5. इस एकांकी को अभिनय द्वारा बालसभा में प्रस्तुत कीजिए।
6. शतरंज का खेल बुद्धि का खेल है। शतरंज की बिसात का चित्र देखिए और समझिए। इसमें प्रत्येक मोहरा निश्चित स्थान पर रखा जाता है,फिर खेल प्रारंभ होता है। प्रत्येक मोहरे की चाल निर्धारित रहती है। इनकी चालों के बारे में जानकारी लीजिए ।

शतरंज की बिसात

dkys ekgjs

gkFkh	?kksM+k	ÅV	othj	jktk	ÅV	?kksM+k	gkFkh
I;knk	I;knk	I;knk	I;knk	I;knk	I;knk	I;knk	I;knk
I;knk	I;knk	I;knk	I;knk	I;knk	I;knk	I;knk	I;knk
gkFkh	?kksM+k	ÅV	othj	jktk	ÅV	?kksM+k	gkFkh

lQsn ekgjs

पाठ 16

काव्य-माधुरी

–संकलित

72JBQL

भक्ति कालीन काव्य धारा में सूर, तुलसी, रसखान, धरमदास का अप्रतिम स्थान है। इन भक्त–संत कवियों की भाव अभिव्यक्ति में भाषा और शैली की अपनी विविधता अवश्य है पर सार एक ही है ईश्वर के साकार रूप अथवा निराकाररूप की भक्ति में अपने को लीन करना। सूर जहाँ ब्रजभाषा में कृष्ण की बाल लीला का गायन करते हैं वहीं तुलसी अवधी में राम के चरित्र का रेखांकन करते हैं। यही स्थिति रसखान की है जो कृष्ण की भक्ति में इतने समर्पित हैं कि हर जन्म में ब्रज में बसने को व्याकुल हैं। धरमदास जी जो बहुश्रुत कबीर के शिष्य हैं अपनी मातृभाषा में सांसारिकता से मुक्ति और सद्गुरु का संदेश सुनाते हैं, जिससे मानव जन्म की प्राप्ति को सार्थक बनाया जा सके।

मैया मोरी, मैं नहिं माखन खायो।
भोर भयो गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो।।
चार पहर बंसीबट भटक्यो, साँझ परे घर आयो।
मैं बालक बहियन कौ छोटौ, छींकौ केहि विधि पायो।।
ग्वाल–बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो।
तू जननी मन की अति भोरी, इनके कहे पतियायो।।
जिय तेरे कछु भेद उपजि है, जानि परायो जायो।
यह लै अपनी लकुटि कमरिया, बहुतहिं नाच नचायो।।
सूरदास, तब बिहँसि जसोदा, लै उर कंठ लगायो।।

– सूरदास

बैठी सगुन मनावत माता।
कब अइहैं मेरे लाल कुसल घर, कहहु काग फुरि बाता।।
दूध भात की दोनी दैहौं, सोने चोंच मढ़ैहौं।
जब सिय सहित बिलोकि नयन भरि, राम–लखन उर लैहों।।
अवधि समीप जानि जननी जिय, अति आतुर अकुलानी।

गनक बुलाइ पाँय परि पूछति, प्रेम मगन मृदु बानी।।
तेहि अवसर कोउ भरत निकट ते, समाचार लै आयो।
प्रभु आगमन सुनत तुलसी मनो, मीन मरत जल पायो।।

– तुलसी

मानुष हौं तो वही रसखानि, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जौ पशु हौं तो कहा बस मेरौ, चरौं नित नंद की धेनु मझारन।।
पाहन हौं तो वही गिरि कौ, जो धर्‌यौ कर छत्र पुरंदर कारन।
जो खग हौं तो बसेरौ करौं, नित कालिंदी कूल कदंब की डारन।।

– रसखान

हमार का करै हाँसी लोग।
मन मोर लागे है सतगुरु से, भला होय के खोट।।
जब से सतगुरु ज्ञान दए हैं, चले न केहू के जोर।
मात रिसाई, पिता रिसाई, रिसाय बटोहिया लोग।।
ज्ञान खड़ग तिरगुन कौ मारौ, पाँच पचीसो चोर।
अब तौ मोहि ऐसन बन आए, सतगुरु रचे संजोग।।
आवत साथ बहुत सुख लागै, जात बियापे रोग।
धरमदास बिनबै कर जोरों, सुनौ हो बंदी छोर।।
जाके पद त्रय लोक से न्यारा, सो साहब कस होय।।

– धरमदास

टिप्पणी–

जो धर्‌यो कर छत्र पुरंदर कारन = कृष्ण ने गोकुलवासियों को इंद्र की पूजा न करके गोवर्धन पर्वत की पूजा करने के लिए प्रोत्साहित किया था। इससे इंद्र ने नाराज होकर गोकुल पर बड़े वेग से वर्षा कराई। कृष्ण ने तब गोवर्धन पर्वत के नीचे सारे गोकुलवासियों को बुलाकर उनकी रक्षा की थी।

दूध–भात की .... मढ़ैहों = आज भी लोगों में ऐसी मान्यता है कि घर में अगर कोई प्रिय व्यक्ति विदेश से आ रहा हो तो कौआ प्रातः ही मुंडेर पर बैठकर 'काँव–काँव' करता है। ऐसा ही दृश्य राम के वनवास से लौटने के पूर्व कौशल्या माता के सम्मुख उपस्थित हुआ था।

अभ्यास

पाठ से

1. माखन न खाने की सफाई कृष्ण किस प्रकार देते हैं?
2. बाल कृष्ण की किन बातों को सुनकर माता यशोदा को हँसी आ गई?
3. 'काग चोंच को सोने से मढ़वा दूँगी', कौशल्या कौए को सम्बोधित करती हुई यह क्यों कहती हैं?
4. रसखान के ब्रजभूमि से प्रेम के दो उदाहरण लिखिए।
5. 'ज्ञान खड्ग तिरगुन को मारे' से धरमदास जी का क्या आशय है?
6. धर्मदास ने 'बंदी छोर' किसे कहा है और क्यों?
7. माँ अपने बच्चों के कुशल–मंगल के लिए क्या–क्या करती है?

पाठ से आगे

72T7S9

1. क्या कारण है कि रसखान पुनर्जन्म में किसी भी रूप में ब्रज में जन्म लेने के लिए विधाता से याचना करते हैं? उनकी इस याचना के बारे में विचार कर लिखिए।
2. भावार्थ लिखिए–

   (क) पाहन हौं तो वही गिरि कौ, जो धर्‌यो कर छत्र पुरंदर कारन।

   जो खग हों तो बसेरौ करौं, मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन।।

   (ख) जब से सद्‌गुरु ज्ञान दए हैं, चले न केहू के जोर।

   मात रिसाई, पिता रिसाई, रिसाय बटोहिया लोग।।
3. 'मेरा प्रिय कवि' विषय पर एक पृष्ठ का निबंध लिखिए।
4. आप भी अपने बचपन में अपनी माँ से अवश्य रूठे होंगे। तब आपने कैसे–कैसे रूप धारण किए होंगे, यादकर लिखिए।
5. सूरदास, तुलसीदास, रसखान, धरमदास की कविताओं में क्या समानता दिखाई पड़ती है लिखिए।

भाषा से

1. 'ज्ञान' शब्द के 'न' में 'ई' प्रत्यय लगाने से शब्द बना है 'ज्ञानी'। ऐसे ही 'दान', 'मान', 'ध्यान' शब्दों में 'ई' प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
2. इन शब्दों को छत्तीसगढ़ी बोली में लिखिए।

   दूसरा, पायो, गाय, निकट, कछु, बहियन, परायो, सिर, लगन।
3. इस पाठ में अनेक तद्भव शब्दों का प्रयोग हुआ है। निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए।

   सोना, नाच, साँझ, दूध, पाँय, चोंच, छुद्र।

   'जानि जननी जिम' में 'ज' की आवृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार है।
4. इस पाठ में से अनुप्रास अलंकार के कोई दो उदाहरण चुनकर लिखिए।

7333TH

5. नीचे लिखी काव्य–पंक्तियों को छत्तीसगढ़ी में स्पष्ट कीजिए –

   क. यह लै अपनी लकुटि कमरिया, बहुतहिं नाच नचायो।

   ख. कब अइहैं मेरे लाल कुसल घर, कहहु काग फुरि बाता।

योग्यता विस्तार

1. संत धरमदास हिन्दी के प्रसिद्ध कवि और समाज–सुधारक कबीरदास जी के शिष्य थे। इनके अन्य पद खोजिए और उन्हें कक्षा में सुनाइए।
2. रसखान के कुछ सवैए खोजिए और उन्हें कक्षा में सुनाइए।
3. कक्षा में अंत्याक्षरी प्रतियोगिता आयोजित कीजिए जिसमें छंदों का ही प्रयोग हो।
4. सूरदास, तुलसीदास, रसखान व धरमदास जी के जीवन वृत्त पर शिक्षक से चर्चा कीजिए।

73BYVJ

पाठ 17	वर्षा-बहार

पाठ 17

वर्षा-बहार

– श्री मुकुटधर पांडेय

73KUX7

छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध और प्रकृति के चितेरे कवि श्री मुकुटधर पाण्डेय जी की प्रस्तुत कविता वर्षा बहार, वर्षा ऋतु के मनोरम दृश्यों और भावों को सहज रूपों में अभिव्यक्त करती है। वर्षा के कारण संपूर्ण प्राकृतिक परिवेश में जिस तरह के मोहक और आकर्षक परिवर्तन को कवि देखते और महसूस करते हैं उसे सरल भाव–लय में कविता में व्यक्त करते चलते हैं। कवि की दृष्टि मेघमय आसमान से लेकर हवा, पानी बादल, बिजली, जीव, जलचर, सौरभ, सुगीत, हंस, किसान सभी पर पडती चलती है। अंत में कवि का आतुर मन गा उठता है–"इस भाँति है अनोखी, वर्षा बहार भू पर, सारे जगत की शोभा है, निर्भर है इसके ऊपर"।

वर्षा बहार सबके, मन को लुभा रही है
नभ में छटा अनूठी, घनघोर छा रही है।
बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं
पानी बरस रहा है, झरने भी बह रहे हैं।
चलती हवा है ठंडी, हिलती हैं डालियाँ सब,
बागों में गीत सुंदर, गाती हैं मालिनें अब।
तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते,
फिरते लाखो पपीहे, हैं ग्रीष्म ताप खोते।
करते हैं नृत्य वन में, देखो ये मोर सारे,
मेंढक लुभा रहे हैं, गाकर सुगीत प्यारे।
खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है,
बागों में खूब सुख से, आमोद छा रहा है।
चलते कतार बाँधे, देखो ये हंस सुंदर,
गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान मनहर।
इस भाँति है अनोखी, वर्षा बहार भू पर,
सारे जगत की शोभा, निर्भर है इसके ऊपर।

अभ्यास

पाठ से

1. वर्षा सबके मन को कैसे लुभा रही है ?
2. वर्षा ऋतु में हवा और बादल के विषय में क्या कहा गया है?
3. सौरभ के उड़ने से क्या हो रहा है ?
4. कवि किसानों के गीतों को मनहर क्यों कह रहा है ?
5. जीव–जलचर पर वर्षा का क्या प्रभाव पड़ रहा है ?
6. पपीहे द्वारा ग्रीष्म ताप खोने का अर्थ क्या है ?
7. 'सारे जगत की शोभा निर्भर इसके ऊपर' कहने से कवि का क्या आशय है ?

पाठ से आगे

1. वर्षा का मोहक रूप आप भी देखते होंगे वर्षा के कारण हमारे आस–पास की प्रकृति में क्या परिवर्तन होता है ?
2. वर्षा ऋतु जीवन और जगत को सरस बना देती है कैसे ? आपस में चर्चा कर लिखिए।

73UQYU

3. वर्षा ऋतु की अपनी चुनौतियाँ भी हैं जैसे रास्ते में कीचड़ का होना, वस्त्रों और बस्ते का भीगना, रास्ते में जल का जमाव होना आदि। आप अपने आस–पास वर्षा के कारण किस तरह की कठिनाइयों को देखते हैं, चर्चा कर उनका लेखन कीजिए।
4. वर्षा ऋतु का किसानों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है ? सहपाठियों से बातचीत कर उसे निबन्ध के रूप में लिखिए।
5. वर्षा का प्रभाव पेड़, पौधों वनस्पतियों पर किस प्रकार पड़ता है ? इस विषय पर चर्चा कर अपने विचारों को व्यक्त कीजिए।

भाषा से

1. इस चौखट में चार शब्दों के दो–दो पर्यायवाची शब्द दिए गए हैं। शब्द लिखकर उनके सामने पर्यायवाची शब्द लिखिए।

आकाश, पानी, बादल, मेघ, हवा, वायु, नभ, तोय, गगन, नीर, जलद, पवन।

2. इनके विलोम शब्द लिखिए–

744H1H

ठंडी, सुख, सुन्दर, प्रसन्न।

3. 'मोद' शब्द में 'आ' उपसर्ग के योग से शब्द बना है – 'आमोद।' इसी प्रकार निम्नांकित उपसर्गों के योग से नए शब्द बनाइए–

अ, अनु, प्र, परि

4. **(क)** "तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते।"
इस पंक्ति में **'जीव जलचर'** को ध्यान से पढ़िए। इसमें 'ज' शब्द की आवृत्ति दो बार हुई है। इसलिए यहाँ अनुप्रास अलंकार है। इस कविता में से अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण लिखिए।
(ख) "दामिनी दमक रही घन माहीं – खल की प्रीति यथा थिर नाहीं", इस पंक्ति में दामिनी (बिजली) की चमक को खल (दुष्ट) की प्रीति के समान अस्थिर बताया गया है। जब दो वस्तुओं में समान गुण के कारण समता बताई जाती है तब उपमा अलंकार होता है। उपमा अलंकार के लिए चार बातें आवश्यक हैं– **1.** जिसकी तुलना की जाय या जिसकी उपमा दी जाए। **2.** जिससे तुलना की जाए या जिससे उपमा दी जाए। **3.** जिन गुणों के कारण तुलना की जाय या उपमा दी जाय। **4.** जिन शब्दों से उपमा प्रगट होती है। जिसकी तुलना की जाय उसे **उपमेय** कहते हैं। जिससे तुलना की जाए उसे **उपमान** कहते हैं। समान गुणों को **साधारण धर्म** कहते हैं और जैसे– जिमि, ज्यों, सम, सा, तुल्य आदि शब्द **वाचक शब्द** कहलाते हैं।
ऊपर के उदाहरण में 'दामिनी की दमक' उपमेय है, 'खल की प्रीति' उपमान है; 'स्थिर न होना' साधारण धर्म है और 'यथा' वाचक शब्द। इसलिए यह उपमा अलंकार है।
5. अपनी पढ़ी हुई कविता से उपमा अलंकार का कोई उदाहरण चुनकर लिखिए।
6. इस कविता में प्रयुक्त तत्सम और तद्‌भव शब्दों की सूची बनाइए।

योग्यता विस्तार

74DI35

1. वर्षा ऋतु से संबंधित बहुत सारी कविताएँ आपने पूर्व की कक्षाओं में पढ़ी होंगी उन्हें लिखकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।
2. वर्षा ऋतु में हमारे जीवन में क्या चुनौतियाँ आती हैं इसका आपस में मिलकर चित्रांकन कर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।
3. यहाँ कविता की प्रथम पंक्ति दी गई है। इसके आधार पर अन्य तीन पंक्तियों की रचना कीजिए।
बादल बरसें, नाचें मोर
_______________ _______________ _______________
4. तुलसीदास जी ने रामचरितमानस के किष्किंधाकांड में वर्षा ऋतु का वर्णन किया है। उसकी कुछ पंक्तियाँ पढ़िए।
घन घमंड नभ गरजत घोरा – प्रियाहीन डरपत मन मोरा।
दामिनि दमक रही घन माहीं – खल की प्रीति यथा थिर नाहीं।
बरसहिं जलद भूमि नियराए – यथा नवहिं बुध विद्या पाए।
अर्क जवास पात बिनु भयऊ – जिमि सुराज खल उद्यम गयऊ।
बूँद अघात सहहिं गिरि कैसे – खल के बचन संत सह जैसे।

पाठ 18

मितानी

-लोककथा

हमर देश के संस्कृति म मितानी के अब्बड़ महत्तम हे। राम–सुग्रीव अउ कृष्ण–सुदामा के मितानी के बारे म तुमन जानत होहू। वइसे तो मिलइया–जुलइया मनखे मन के बीच म मितानी होइ जाथे,पर छत्तीसगढ़ म मितानी के एक नवा रीत हवय। ओ आय मितानी बदे के परंपरा। मितानी के नता ह कई पीढ़ी के नता आय। मितान बदइया के लइका अउ नाती–नतुरा मन घलो ये नता ल बड़ मान देथें। मितान के विपत्ति म सहायता करना सबले बड़का धर्म आय। आवव, अइसने एक ठन लोककथा पढ़न,जेमा केछवा और मँजूर के मितानी के बारे म बताय गय हे।

तरिया के निरमल पानी म खोखमा के सुग्घर–सुग्घर फूल – फूले रहँय। फूल म तितली अउ भौंरा मन लुर–लुर के गीत गावत रहँय। तरिया के तीर बर,पीपर,आमा,अमली के घन पेड़ रहँय। ओ तरिया म एक ठन केछवा रहय। ओही तरिया पार के पीपर पेड़ म एक ठन मँजूर घलो रहय। एहर तीर–तखार के खेत–खार म जा के चारा चरय अउ पीपर पेड़ म बसेरा करय। जब करिया–करिया बादर उमडे–घुमड़े त मँजूर हर अपन पाँख ल छितराके झूम–झूमके नाचय। एती हवा ले पीपर पान झूम–झूमके गीत गावय अउ ताली बजावय। केछवा हर तरिया ले निकल के मँजूर के नाचा ल देख के मगन हो जाय।

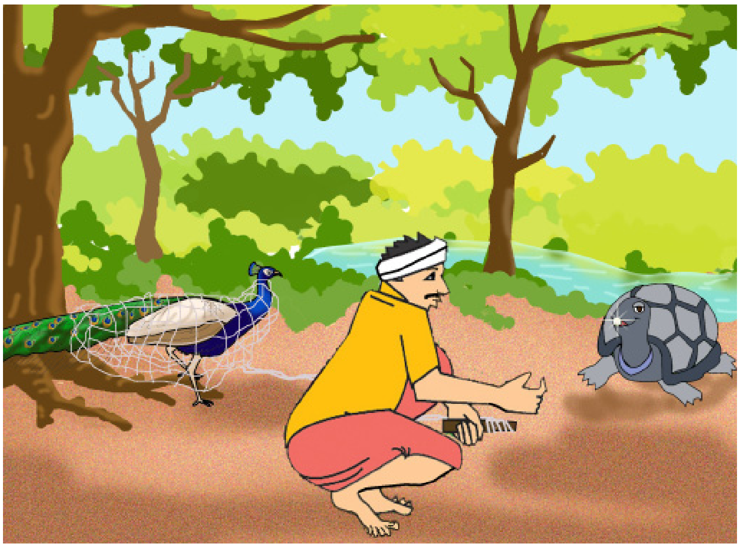

केछवा हर मँजूर ल कथे–'वा भाई मँजूर, तँय तो बढ़िया नाचथस अउ तोर पाँख हर बहुत सुग्घर सजे हे। लगथे अगास के चंदा–चँदैनी हर पाँख म उतरे हें।' सुन के मँजूर हर मनेमन मुचमुचाइस। मँजूर हर रोज पीपर के रूख ले उतर के तरिया के पार म नाचय। केछवा हर ओला मन भर के देखय। मँजूर हर तरिया के पानी पी के पीपर पेड़ म बइठ के अराम करय अइसन तरह ले मँजूर अउ केछवा म दूनों के पोठ मितानी होगे।

एक दिन मँजूर हर मगन होके नाचत रहिस त केछवा हर किहिस–''मितान ! लकठा म आके नाचव न! काबर के तुँहर नचाई हर मोला नीक लागथे। मन के अघात ले देखे चाहत हँव।'' मँजूर ह केछवा के मया के गोठ ल टारे नइ सकिस अउ तीर म आके नाचे लगिस। अब अइसन रोज होवय. ... मँजूर नाचे अउ केछवा हर देखे। मितानी म मया के धार बोहाय लागिस।

एक दिन संझा सिकारी आके उहाँ अपन फाँदा ल फैला दिस। एला केछवा अउ मँजूर नइ जानिन। बिहनिया ओमा मँजूर ह फँदगे। अब तो मँजूर के करलाई होगे। अपन मितान ल कथे–"मितान!मोला बचावव,सिकारी आही, तहाँ मोला मार डारही। तोर मितानी अउ मया म परान गँवा डारहूँ, तइसे लागथे। उबारे के कुछु उदिम करव।" केछवा बड़ चतुरा रहिस। ओहर हड़बड़ाइस नहीं। फाँदा म परे मितान ल कथे–"काहीं फिकर झन करव। धीरज बाँधे रहव,तुँहला फाँदा ले छोड़ाहूँ। संकट के बेरा मितान हर मितान के काम नइ आइस त ओहर मितान नोहय।"

एती दूनो मितान के गोठ होते हे अउ ओती सिकारी आगे। फाँदा म फँदे मँजूर ल धरके फाँदा ले निकाले लगिस त केछवा हर सिकारी ल कथे –"तँय तो मोर मितान ल फाँदा म फोकट फँसाए हस। एला मार के का करबे ?" अतका म सिकारी हर हाँसत कथे–"फसातेंव नहीं त का करतेंव। एहर मोर धंधा आय। एला मारँव नहीं, बजार म बेंच के रुपिया पाहूँ अउ दार–चाँउर बिसाहूँ ....।"

केछवा कथे–"बस अतकेच। छोड़ दे, मोर मितान ल। जंगल के कोनो जीव ल मारे ले हत्या लगथे। एला छोड़बे त एकर बदला म तोला एक ठन बढ़िया चीज देहूँ, जेन ल बेंच के तोर परिवार बर दार–चाउँर बिसा लेबे।" सिकारी कहिस–"तोर का बिंसवास।" केछवा हर पानी भीतर बुड़िस अउ छिन भर म एक ठन मोती लान के कथे–"ले ! एहर मोती आय,बेचबे त खूब पइसा मिलही।"

सिकारी हर मोती ल लेके खुश होगे। मँजूर ल छोड़ दिस अउ कुलकत घर आइस। सिकारी के दू झन बेटा रहँय–कोंदा अउ मंसा। सिकारी हर अपन दूनो बेटा ल मोती ल देखाइस त ओला ले बर दुनो झन झगरा होय लगिन। ऊँकर मनके झगरा ल देख के सिकारी ह सोंचिस–'मोती ह बड़ कीमती हे, एला छोड़त नइ बने,अउ छोड़त हँव त घर म झगरा हे।' सिकारी हर असमंजस म परगे।

एक दिन ओही मेर फाँदा ल फेर फैलाइस।.... मँजूर फँदगे। एक पइँत परान बचे रहिस। अब का होही ? केछवा अउ मँजूर ल गुने ल परगे। मँजूर कथे–"मितान! एक पइँत परान ल फेर बचावव।" केछवा ल कुछू उपाय सुझत नइ रहय। कथे–"हाँ,मितान! तोला बचाए बर गुनत हँव, ये पइँत जान बचगे त तोला ये ठउर ल छोड़के जंगल म जाए ल परही,जिंहा ये सिकारी झन जा सकय। ओहर बड़ लालची हे। मोती के लालच म घेरी–बेरी फाँदा ल खेलही।" केछवा के गोठ ल सुन के मँजूर ल थोकिन दु:ख लगिस फेर सोंचिस, परान बचाय बर मितान के मया ल छोड़ के जंगल बीच जाएच ल परही। अतका म सिकारी आ गे। मँजूर ल फाँदा म फँदे देख के कुलक गे। एती केछवा हर सिकारी ल कथे– "ये सिकारी भाई! मोर मितान ल काबर फँसाए हस? तोला तो महीना भर के खरचा के पुरता मोती दे रहेंव। अइसन लालच झन कर,एहर अनियाव आय।"

सिकारी कथे–"तैं तो बात बड़ नियाँव के कहत हस। एमा मोर कोती ले कोनो लालच नइये। मोती ल देखके मोर दूनो बेटा मन मोती ल ले बर झगरे लगिन,मारा–पीटा करे लगिन।ओ मन ल झगरा ले बचाय खातिर मोला फाँदा डारे बर परिस हे। अब ओइसनेच मोती लान के अउ दे देवव त मैं ह ये मँजूर ल ढील देहूँ। मोती ह ओइसनेच होना चाही–न घट,न बढ़।"

केछवा ल उपाय सूझगे। ओ ह सिकारी ल कथे–"सिकारी भइया !ओइसनेच मोती लाने खातिर पहिली वाले मोती के नाप–जोख करे बर परही,तउले बर परही। मैं तोला ओइसनेच मोती दे बर

तियार हँव। फेर पहिली वाले मोती ल लान के तैं मोला दे दे।'' केछवा के बात ल सुन के सिकारी के मन कुलक गे। मन म थोरिक लालच अमागे। ओहा केछवा के बात ल मान गे। फाँदा ले मँजूर ल ढील दिस, सिकारी मंजूर उड़िया गे अउ मोती ल लाय बर घर कोती दउँड़गे।

सिकारी ह मोती लान के केछवा ल दे दिस। केछवा ह मोती ल पानी म फेंक दिस अउ सिकारी ल किहिस–''तँय एक मोती लेवस नहीं अउ मँय ह दू मोती देवँव नहीं।आज तँय बेटा मन के खातिर फाँदा डारे हस। काली अपन घर–गोसइन के कहे म फाँदा डारबे। परनदिन अपन परोसी मन खातिर इही बूता करबे। तोर लालच ह बाढ़तेच जाही। तैं लालची भर नइ हस,बिंसवासघाती घलो हस।'' अइसे कहिके केछवा ह पानी भीतर डुबकी मार दिस। सिकारी ह हाथ रमजत रहिगे।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

लुर–लुर करना	=	मँडराना	पोठ	=	समृद्ध
लकठा	=	समीप,नजदीक	नीक	=	अच्छा,सुंदर
अघात	=	तृप्त होना	गोठ	=	बात या बातचीत
फाँदा	=	जाल	करलइ	=	दुःख,व्यथा,विलाप
उदिम	=	उपाय	कुलक भरिस	=	खुश हुआ,
ढिलना	=	मुक्त या स्वतंत्र करना			प्रफुल्लित हुआ
रमजत	=	मलता हुआ, रगड़ता हुआ	ठऊर	=	स्थान

अभ्यास

पाठ से

1. मंजूर हर अपन पाँख ल काबर छितराय हे ?
2. केछवा ह मंजूर ल पहिली बार देखके का कहिथे ?
3. मंजूर ह सिकारी के फाँदा मा कइसे फँदगे?
4. अपन मितान के छोड़े के खातिर केछुवा ह सिकारी ल का कहिथे?
5. सिकारी ह मंजूर ल काबर छोड़ देथे ?
6. सिकारी के लालच बाढ़े के का कारण रहिस ?
7. आखिर म केछवा ल का उपाय सूझिस अउ ओ हर का करिस ?
8. सिकारी ह काबर पछतावत रहिगे ?

पाठ से आगे

1. मंजूर सहीं कहूँ तुम्हर मितान कोनो मुसीबत में फस जाही त तुमन ओला उबारे बर का उदिम करहू ? सोच के लिखव।

2. मंजूर के जगह म केछ्वा ल सिकारी फँसा लेतिस त केछ्वा ल बचाय बर मंजूर का सोचतिस? साथी मन संग चर्चा करके लिखव।
3. मंजूर ल फाँदा म फँसे देखके केछवा कहूँ भाग जातिस त दूनो के मितानी मा का परभाव पड़तीस सोच के लिखव।
4. सिकारी ह मोती के लालच म पहिली मोती ल घलो गवाँदिस अउ लालच नई करतिस त ओकर जीवन म का सुधार होतिस ? साथी मन संग सोच के लिखव।

74WA6F

भाषा से

756683

1. खाल्हे लिखाय मुहावरा मन के अर्थ लिखव अउ वाक्य म परयोग करव–
पोटा–काँपना, करलइ होना, असमंजस म परना, लालच म परना।
2. पाठ म आय 'मितानी' व 'सिकारी' शब्द भाववाचक संज्ञा आय जौन ह मितान, सिकार शब्द म 'ई' प्रत्यय लगके बने हवय। अइसने 'ता' प्रत्यय लगा के 'महान' के महानता 'शत्रु' के शत्रुता शब्द बनाय जाथे। अइसने खाल्हे लिखाय शब्द मन ल **ई** अउ **ता** प्रत्यय लगाके बनावव–
बीमार, सच्चा, बुरा, प्रबल, विमुख, कांत, शिष्य।
3. खाल्हे लिखाय शब्द मन ल पढ़व–
रहय–रहना, गावय–गाना, करय–करना, छितरावय–छितराना, मुचमुचावय–मुचमुचाना, लागय–लगना ये सब शब्द मन ह कोनों काम के होय के बोध कराथे इही ल क्रिया कहे जाथे। अइसने पाठ में आय क्रिया शब्द ल खोज के हिंदी में अर्थ लिखव।
4. खाल्हे लिखाय शब्द मन के हिंदी में अर्थ लिखव अउ ओकर उल्टा शब्द लिखव–
मितानी, खुश, चतुरा, बिसाना, तीर।
5. उचित संबंध जोड़व–

क	ख
खोखमा	फाँदा
मंजूर	निरमल
पानी	सुघ्घर
भौंरा	पाँख
सिकारी	गीत

योग्यता विस्तार

1. अपन आसपास म मितानी के कोनों किस्सा सुने होहू ओला लिखव।
2. राम अउ सुग्रीव के मितानी के बारे में पता करके अपन भाषा म लिखव।

75F29Q

75NXBD

पाठ 19

शहीद बकरी

–श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय

बहुधा यह बात रेखांकित की जाती है कि संगठन में शक्ति है। अगर कोई भी समूह संगठित है तो वह अत्याचार, अन्याय और उत्पीड़न का डट कर मुकाबला करते हुए उसे परास्त कर सकता है। लेकिन यह भी सच है कि पहल कोई एकाकी ही करता है। ऐसा ही एक पहल इस कहानी में एक युवा बकरी भेड़िये से डट कर मुकाबला करते हुए करती है। युवा बकरी मरने के भय से बाड़े में कैद होना स्वीकार नहीं करती बल्कि वह हत्यारे और निरीह बकरियों का खून करने वाले भेड़िये को घायल, पीड़ा और दर्द से छटपटाते हुए देखना चाहती है। बकरी अपने आक्रमण से भेड़िये को लहूलुहान और घायल कर देती है, यह अवश्य होता है कि इसमें वह अपने साथियों की अकर्मण्यता के कारण ढेर हो जाती है, पर एक उदाहरण अवश्य रख जाती है कि साहस से भरी सिर्फ एक बकरी भी भेड़िये को घायल और घावों के सड़न से मरने को बाध्य कर सकती है।

हरे–भरे पहाड़ पर बकरियाँ चरने जातीं तो दूसरे–तीसरे रोज एक–न–एक बकरी कम हो जाती। भेड़िए की इस धूर्तता से तंग आकर चरवाहे ने, वहाँ बकरियाँ चराना बंद कर दिया और बकरियों ने भी मौत से बचने के लिए बाड़े में कैद रहकर जुगाली करते रहना ही श्रेष्ठ समझा। लेकिन न जाने क्यों एक युवा नई बकरी को यह बंधन पसंद नहीं आया। अत्याचारी से यों कब तक प्राणों की रक्षा की जा सकेगी ? वह पहाड़ से उतरकर किसी रोज बाड़े में भी कूद सकता है। शिकारी के भय से मूर्ख शुतुरमुर्ग रेत में गर्दन छुपा लेता है। तब क्या शिकारी उसे बख़्श देता है ? इन्हीं विचारों से ओत–प्रोत वह हसरत भरी नजरों से पर्वत की ओर देखती रहती। साथिनों ने उसे आँखों–आँखों में समझाने का प्रयत्न किया कि वह ऐसे मूर्खतापूर्ण विचारों को मन में न लाए। भोग्य सदैव से भोगने के लिए ही उत्पन्न होते रहे हैं। भेड़िए के मुँह हमारा खून लग चुका है, वह अपनी आदत से कभी बाज़ नहीं आएगा।

लेकिन नई युवा बकरी तो भेड़िए के मुँह में लगे खून को ही देखना चाहती थी। वह किस तरह छटपटाता है, यह करतब देखने की उसकी लालसा बलवती होती गई। आखिर एक रोज़ मौका पाकर बाड़े से वह निकल भागी और पर्वत पर चढ़कर स्वच्छंद विचरती, कूदती– फाँदती दिन भर पहाड़ पर चरती रही; मनमानी कुलेलें करती रही। भेड़िए को देखने की उसे उत्सुकता भी बनी रही, परन्तु उसके दर्शन न हुए। झुटपुटा होने पर लाचार, जब वह नीचे उतरने को बाध्य हुई तो रास्ते में दबे पाँव भेड़िया आता हुआ दिखाई दिया। उसकी रक्तरंजित आँखें, लपलपाती जीभ और आक्रमणकारी चाल से वह सब कुछ समझ गई। भेड़िया मुस्कराकर बोला, "तुम बहुत सुंदर और प्यारी मालूम होती हो। मुझे तुम्हारी जैसी साथिन की आवश्यकता थी। मैं कई रोज से अकेलापन महसूस कर रहा था। आओ, तनिक साथ–साथ पर्वतराज की सैर करें।"

बकरी को भेड़िए की बकवास सुनने का अवसर न था। उसने तनिक पीछे हटकर इतने जोर से टक्कर मारी कि असावधान भेड़िया सँभल न सका। यदि बीच का भारी पत्थर उसे सहारा न देता तो औंधे मुँह नीचे गिर गया होता।

भेड़िए की जिंदगी में यह पहला अवसर था। वह किंकर्तव्यविमूढ़–सा हो गया। टक्कर खाकर अभी वह सँभल भी न पाया था कि बकरी के पैने सींग उसके सीने में इतने जोर से लगे कि वह चीख उठा। क्षत–विक्षत सीने से लहू की बहती धार देख, भेड़िए के पाँव उखड़ गए। मगर एक निरीह बकरी के आगे भाग खड़ा होना उसे कुछ जँचा नहीं। वह भी साहस बटोरकर पूरे वेग से झपटा। बकरी तो पहले से ही सावधान थी; वह कतराकर एक ओर हट गई और भेड़िए का सिर दरख्त से टकराकर लहूलुहान हो गया।

लहू को देखकर अब भेड़िए के लहू में भी उबाल आ गया। वह जी–जान से बकरी के ऊपर टूट पड़ा। अकेली बकरी उसका कब तक मुकाबला करती ? वह उसके दाँव–पेंच देखने की लालसा और अपने अरमान पूरे कर चुकी थी। साथियों की अकर्मण्यता पर तरस खाती हुई बेचारी ढेर हो गई।

पेड़ पर बैठे हुए तोते ने मुस्कराकर मैना से पूछा, "भेड़िए से भिड़कर भला बकरी को क्या मिला?"

मैना ने सगर्व उत्तर दिया, "वही जो अत्याचारी का सामना करने पर पीड़ितों को मिलता है। बकरी मर जरूर गई, परन्तु भेड़िए को घायल करके मरी है। वह भी अब दूसरों पर अत्याचार करने के लिए जीवित नहीं रह सकेगा। सीने और मस्तक के घाव उसे सड़–सड़कर मरने को बाध्य करेंगे। काश, बकरी की अन्य साथिनों ने उसकी भावनाओं को समझा होता। छिपने के बजाय एक साथ वार किया होता तो वे आज बाड़े में कैदी जीवन व्यतीत करने के बजाय पहाड़ पर निःशंक और स्वच्छंद विचरती होतीं।"

तोता अपना–सा मुँह लेकर चुपचाप शहीद बकरी की ओर देखने लगा।

अभ्यास

पाठ से

1. बकरियों ने कैद में ही रहकर जुगाली करना क्यों उचित समझा ?
2. युवा नई बकरी को बाड़े का बंधन पसंद क्यों नहीं आया ?
3. युवा बकरी ने भेड़िए पर किस तरह वार किया ?
4. भेड़िए ने बकरी को अपने जाल में फँसाने के लिए क्या प्रलोभन दिया ?
5. तोते ने मुस्कुराते हुए मैना से क्या सवाल पूछा और क्यों ?
6. "भोग्य सदैव से भोगने के लिए ही उत्पन्न होते रहे हैं" से क्या तात्पर्य है ?

पाठ से आगे

1. युवा बकरी द्वारा भेड़िए पर पहले ही आक्रमण करने के पीछे क्या कारण रहे होंगे ? आप विचार कर लिखिए?
2. आपकी समझ में भेड़िए से भिड़कर बहादुरी से अपनी जान गँवाने वाली युवा बकरी को क्या मिला ?

7H36RX

3. यदि अन्य बकरियाँ उस युवा बकरी का साथ देतीं तो आपके अनुसार भेड़िए और बकरी के बीच के संघर्ष का परिणाम क्या होता ?
4. "तोता अपना सा मुँह लेकर शहीद बकरी की ओर देखने लगा" पंक्ति के द्वारा कहानीकार क्या कहना चाहता है? अपने साथियों से बात–चीत कर उत्तर दीजिए।

भाषा से

1. पाठ में निम्नलिखित मुहावरे आए हैं। आप इन मुहावरों का वाक्य में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि इनका अर्थ स्पष्ट हो जाए –

   औंधे मुँह गिरना, अपना सा मुँह लेकर रह जाना, टूट पड़ना, लहू में उबाल आना, तरस खाना, ढेर हो जाना, पाँव उखड़ना, मुँह में खून लगना, आँखों ही आँखों में समझना।

2. विशेषण के इन उदाहरणों की रचना देखिए। दूर + ई = दूरी, चतुर + आई = चतुराई, महान + ता = महानता। इन में **ई, आई** अथवा **ता** प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञा बनाई गई है। इसी प्रकार से निम्नलिखित विशेषणों में उपयुक्त प्रत्यय का प्रयोग कर भाववाचक संज्ञा बनाइए–

   सफल, बेईमान, कटु, मित्र, अकर्मण्य, नादान, सावधान, अत्याचार, स्वच्छंद, श्रेष्ठ।

3. निम्नलिखित शब्दों का हिंदी रूप लिखिए—

   नज़र, ख़ून, दरख़्त, अरमान, हसरत, करतब, मुकाबला, बेचारा।

7HC2TK

4. पाठ में आए निम्नांकित शब्दों का विलोम लिखिए—

   सावधान, धूर्त, स्वच्छंद, भारी, सहारा, अपने, हरे—भरे।

5. क. अत्याचारी से **कब तक** प्राणों की रक्षा की जा सकेगी ?

   ख. तब **क्या**, शिकारी उसे बख्श देता है ?

   ऊपर के दोनों वाक्य प्रश्नवाचक वाक्य हैं और इनके अंत में प्रश्नसूचक चिह्न (?) का प्रयोग हुआ है। जब वाक्यों में प्रश्नवाचक शब्द जैसे— **कब, कहाँ, क्यों, कैसे, कौन, क्या** आदि का प्रयोग करते हुए प्रश्न पूछा जाता है तो वहाँ इस चिह्न (?) का प्रयोग होता है। आप भी इसी प्रकार के दस वाक्यों की रचना कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. "संगठन में शक्ति है" इस विषय पर कक्षा में संभाषण प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए और मुख्य बिन्दुओं को लिखिए।

7HKXV8

2. सोचिए कि यदि जंगल से गुजरते समय भालू से आपका सामना हो जाए तो आप क्या करेंगे ? साथियों के साथ विचार कर लिखिए और कक्षा में सुनाइए।

पाठ 20

लक्ष्य-बेध

–श्री रामनाथ 'सुमन'

किसी भी मनुष्य की सफलता और उसके जीवन की सार्थकता उसके लक्ष्य निर्धारण और उस लक्ष्य प्राप्ति के लिए नियमित कठिन परिश्रम पर निर्भर करता है। यह पाठ दो छोटे दृष्टांत के जरिये जीवन के इन्हीं यथार्थ को, समझ के साथ प्रस्तुत करता है। अर्जुन का जवाब ही उसकी लक्ष्य के प्रति तन्मयता को सिद्ध करता है। वैसा ही उदाहरण मराठों का है जो विचलित मनः स्थिति से उबर कर एक निर्णायक युद्ध करते हुए हारती हुई बाजी जीत लेते हैं। यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि हम किसी भी कार्य को कैसे करते हैं ? सार्थकता और पहचान उस कार्य को मिलती है जिसे प्रतिबद्ध होकर एकनिष्ठ भाव से किया जाए।

जिस व्यक्ति ने अपना लक्ष्य निश्चित कर लिया है, उसने अपने जीवन की एक बड़ी कठिनाई दूर कर दी है। वह अनिश्चय, भ्रम, भेद और संदेह के ऊपर उठ जाता है। तब उसके सामने एक प्रश्न होता है, लक्ष्य–बेध कैसे होगा; जीवन के उद्देश्य की सिद्धि कैसे होगी ?

संसार के मनीषियों और कर्मठ पुरुषों ने लक्ष्य–बेध के अनेक उपाय बताए हैं, पर जीवन में सफलता का, लक्ष्य–बेध का, एक मंत्र है जो कभी निरर्थक नहीं हुआ। हमारे कोश में एक छोटा–सा शब्द है–'तन्मयता'। यह छोटा–सा शब्द ही जीवन में लक्ष्य–बेध या कार्य–सिद्धि का मूलमंत्र है।

'तन्मयता' का अर्थ है कि जो लक्ष्य है, उसी से आप भर जाएँ, उसी में लीन हो जाएँ। वह फैलकर आपके संपूर्ण जीवन और कार्य की प्रत्येक दिशा को ढँक ले। सोते–जागते, उठते–बैठते, चलते–फिरते, प्रत्येक क्रिया में, केवल वह लक्ष्य आपको दिखे, चारों ओर वही वह हो। आपका समस्त ध्यान उसी में केंद्रित हो, उससे अलग आपका जीवन असंभव हो जाए।

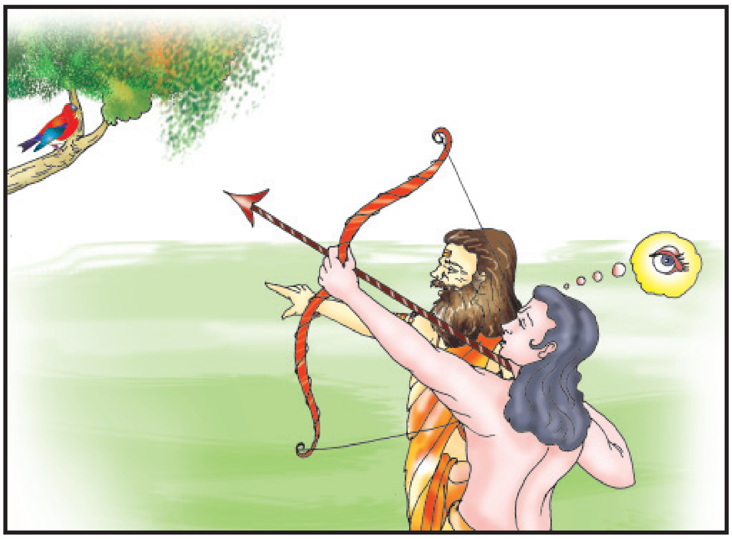

इस तन्मयता की बात करते हुए इतिहास की दो घटनाएँ याद आ रही हैं। पहली घटना महाभारत काल की है। आचार्य द्रोण राजकुमारों को बाणविद्या सिखा रहे थे। समय पर शिक्षा समाप्त हुई और राजकुमार आचार्य के समीप परीक्षा के लिए एकत्र हुए। आचार्य उन्हें एक वनस्थली में ले गए। एक वृक्ष के ऊपर बैठी चिड़िया की आँखों की पुतली

के लक्ष्य–बेध का निश्चय हुआ। आचार्य ने सबको निशाना ठीक करने को कहा और तब एक छोटा–सा प्रश्न किया, "तुम्हें क्या दिखाई देता है ?"

किसी ने कहा, "वह वृक्ष की पतली टहनी है। उस पर लाल रंग की चिड़िया बैठी है। उसकी आँख दिखाई दे रही है।''

किसी ने कहा, "मुझे चिड़िया दिखाई देती है, उसकी आँख में निशाना लगा रहा हूँ।" मतलब किसी ने कुछ उत्तर दिया, किसी ने कुछ; पर सबको अनेक पदार्थ दिखते रहे और उनके बीच लक्ष्य–बेध की तत्परता भी दिखाई पड़ी। जब अर्जुन की बारी आई और आचार्य ने उससे वही प्रश्न दोहराया तो उसने कहा–

"गुरुदेव, मुझे सिवाय चिड़िया की आँख की पुतली के और कुछ दिखलाई नहीं देता।"

आचार्य ने शिष्य की पीठ ठोकी और आशीर्वाद दिया। अर्जुन परीक्षा में सफल हुए।

दूसरी घटना मराठा इतिहास की है। सिंहगढ़ की विजय का दृढ़ संकल्प करके मराठों ने उस पर आक्रमण किया। सारे मराठा सैनिक एक गोह की सहायता से सिंहगढ़ पर चढ़ गए। घोर युद्ध हुआ। युद्ध में उनका नेता तानाजी मारा गया। उसके मारे जाते ही मराठों की सेना हिम्मत हारकर भागने लगी और जिस रस्से के बल चढ़कर ऊपर किले पर आई थी, उसी के सहारे नीचे उतरने का इरादा करने लगी। तानाजी के छोटे भाई सूर्याजी ने जब यह देखा तो आकर चुपके से रस्से का किले की ओरवाला हिस्सा काट दिया और जब मराठे उधर भागे तो चिल्लाकर कहा–"मराठो, भागते कहाँ हो ? वह रस्सा तो मैंने पहले ही काट दिया।" जब मराठों ने देखा कि निकल भागने का कोई उपाय नहीं है, तब सब कुछ भूलकर ऐसे लड़े कि सिंहगढ़ विजय कर लिया।

दोनों घटनाएँ स्वयं अपनी बात कहती हैं। अर्जुन की उस परीक्षा के बाद हजारों वर्ष बीत गए हैं, पर आज भी जीवन की परीक्षा में कोटि–कोटि मनुष्यों के सामने आचार्य द्रोण का वह प्रश्न उपस्थित है, "तुम्हें क्या दिखाई देता है ?"

इस प्रश्न के उचित उत्तर पर ही जीवन की सिद्धि निर्भर है। मानवजीवन की सफलता–असफलता की यह एक चिरन्तन कथा है। यह उत्तर लक्ष्य–बेध का एक ही उपाय बताता है–'लक्ष्य में तन्मयता'। जहाँ साधक लक्ष्य में तन्मय है, जहाँ उसे और कुछ दिखाई नहीं देता, जहाँ वह सब कुछ भूल गया है, अपने चारों ओर के ध्यान बँटानेवाले पदार्थों को भूल गया है, लक्ष्य है, लक्ष्य है और कुछ नहीं, वहाँ लक्ष्य– बेध निश्चित है।

दूसरी घटना भी यही कहती है कि जब तक रस्सा काटकर पीछे लौटने की संपूर्ण संभावनाओं का अंत आपने नहीं कर दिया, जब तक लक्ष्य से मन को इधर–उधर हटानेवाला एक भी साधन आपने बचा रखा है, तब तक लक्ष्य–बेध नहीं होगा।

इन दोनों में एक ही बात दोहराई गई है कि लक्ष्य में चित्त को केंद्रित करके लक्ष्य–बेध करो।

धनुष से छूटनेवाला बाण वायुमंडल में यहाँ–वहाँ नहीं घूमता। वह अपने चारों ओर के पदार्थों से नहीं उलझता। वह दाएँ–बाएँ, ऊपर–नीचे नहीं देखता। वह जिस क्षण छूटता है, उसी क्षण से अपने लक्ष्य में केंद्रित होता है। उसका लक्ष्य एक है, उसकी दिशा एक है। वह सीधा जाकर अपने लक्ष्य में मिल जाता है।

कुतुबनुमा की सुई की भाँति एक दिशा और एक लक्ष्य में केंद्रित होना उद्देश्य–सिद्धि का उपाय है। इससे हमारे जीवन के मार्ग में, दूसरे सैकड़ों प्रकाश हमें अपने मार्ग से बहका देने के लिए चमकेंगे और प्रयत्न करेंगे कि हमें अपने कर्त्तव्य और सत्य से डिगा दें पर हमें चाहिए कि अपने उद्देश्य की सुई को ध्रुव तारे की ओर से कभी न हटने दें।

मन की संपूर्ण चेतना को, इच्छाशक्ति को, किसी एक कार्य, दिशा या लक्ष्य में केंद्रित कर देना ही तन्मयता है। जब सूर्य की किरणों को किसी आतिशी शीशे के सहारे एक कागज के टुकड़े पर केंद्रित करते हैं तो कागज जल उठता है। जल में प्रच्छन्न विद्युत को कुछ साधनों से केंद्रित करके बड़े–बड़े कारखाने चलाए जाते हैं। शक्ति पहले भी वहीं रहती है, पर बिखरी होने से वह बेकार है। एकाग्र करके उससे संसार को हिलाया जा सकता है। वैज्ञानिकों का कथन है कि एक एकड़ भूमि की घास में इतनी शक्ति बिखरी हुई होती है कि उसके द्वारा संसार की सारी मोटरों और चक्कियों का संचालन किया जा सकता है।

संसार में काम करनेवाले बहुत हैं, काम को बोझ समझकर करनेवाले और भी अधिक हैं, पर लक्ष्य के प्रति समर्पित होकर, उसमें एकनिष्ठ होकर काम करनेवाले बहुत थोड़े हैं। पर ये थोड़े से मनुष्य ही हैं जो संसार को हिला देते हैं, जो अपनी एकाग्रता से जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। आप अपने लिए जो भी लक्ष्य चुनिए, उसमें अपने मन और शरीर, अपनी संपूर्ण शक्तियों को केंद्रित कर लीजिए। वह और आप एक हो जाइए। दुनिया को भूल जाइए, अपने को भूल जाइए, केवल लक्ष्य के दर्शन कीजिए और तब उसे बेध लीजिए। संसार आपका है, जीवन आपका है, सफलता आपकी है।

अभ्यास

पाठ से

1. लेखक के अनुसार लक्ष्य भेद का मूल मंत्र क्या है और क्यों?
2. किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति में तन्मयता की क्या भूमिका है?
3. पाठ में तन्मयता के उदाहरण कौन–कौन से हैं ?
4. प्रसिद्ध धनुर्धर अर्जुन के लक्ष्य भेद से संबंधित में कौन सी कथा है ?
5. सिंहगढ़ के किले को मराठे कैसे जीत पाए ?

6. कुतुबनुमा की सुई हमें क्या सीख देती है ?
7. संसार में काम करनेवाले कैसे–कैसे लोग हैं?
8. लेखक के अनुसार लक्ष्य भेद के लिए क्या आवश्यक है?

पाठ से आगे

7I4PYI

1. आप सभी अपने–अपने लक्ष्य की कल्पना कीजिए तथा सोचिए कि अपने लक्ष्य की प्राप्ति कैसे करेंगे। आपस में चर्चा कर लिखिए।
2. अर्जुन की जगह आप होते तो अपने गुरु के प्रश्नों का आप क्या–क्या उत्तर देते? कल्पना कर अपने उत्तर लिखिए।
3. लक्ष्य से सफलता और असफलता जुड़ी हुई है। परीक्षा में सफल होना आपका लक्ष्य होता है तो इसमें अपनी सफलता के लिए क्या–क्या करना चाहेंगे? आपस में चर्चा कर लिखिए।
4. आचार्य द्रोणाचार्य द्वारा ली गई परीक्षा में अर्जुन के अतिरिक्त सभी राजकुमार क्यों असफल हो गए? साथियों से बातचीत कर इस प्रश्न का उत्तर लिखिए।
5. मराठा सेनापति सूर्याजी द्वारा सिंहगढ़ किले पर जीत के लिए किले की ओर वाली रस्सी का हिस्सा काटा जाना क्या उचित प्रतीत होता है ? शिक्षक और साथियों से बातचीत कर इसका उत्तर लिखिए।

भाषा से

7IDL16

1. पाठ में इस प्रकार के प्रयोग आपको देखने को मिलेंगे, जैसे–**उस** परीक्षा, **इस** प्रश्न, **जिस** क्षण, **उनका** नेता, **जब** मराठे। शब्दों का इस प्रकार का प्रयोग सार्वनामिक विशेषण के उदाहरण है। अर्थात् जब कोई सर्वनाम शब्द का संज्ञा शब्द से पहले आना तथा वह विशेषण शब्द की तरह संज्ञा की विशेषता बताना। पाठ से सार्वनामिक विशेषण के उदाहरणों को खोज कर लिखिए।
2. पाठ में समानोच्चरित शब्द या समोच्चरित शब्द का प्रयोग हुआ है। ये शब्द सुनने और उच्चारण करने में समान प्रतीत होते हैं, किन्तु उनके अर्थ भिन्न–भिन्न होते हैं। जैसे–

   और (तथा), ओर (तरफ)।

   चौक (चौराहा), चौंक (चौंक जाना, आश्चर्य में पड़ना)।

   ऐसे ही समान उच्चारण वाले शब्दों को पाठ से ढूँढ़ कर लिखिए।

   - निम्नलिखित शब्दों के जोड़े दिए गए हैं। इनका अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए जिससे उनके अर्थ स्पष्ट हो सके–

     अवधि–अवधी, गाड़ी–गाढ़ी, उतर–उत्तर, प्रमाण–प्रणाम, दिन–दीन, देव–दैव, धन–धान, पक्का–पका।

3. 'संसार' और 'परिवार' जैसे शब्दों में इक प्रत्यय लगाकर सांसारिक और पारिवारिक शब्द बनते हैं। इसी प्रकार से निम्नलिखित शब्दों में इक प्रत्यय का प्रयोग कर शब्द बनाइए–
   स्वभाव, तर्क, अलंकार, न्याय, वेद, व्यापार, लोक, विज्ञान, व्यवहार, समर।
4. पाठ में प्रयुक्त हुए निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्दों को लिखिए–
   असफलता, एकाग्र, केन्द्रित, एकनिष्ठ, प्रच्छन्न. इच्छा, निश्चित, मतलब, विजय, संचालक।

योग्यता विस्तार

1. दृढ़ इच्छा शक्ति और लगन के सबसे निकट उदाहरण के रूप में एकलव्य उल्लेखनीय पात्र है। एकलव्य के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त कर कक्षा में सुनाइए।
2. ध्रुवतारा को हम अन्य किन नामों से जानते हैं ? ध्रुवतारे के संबंध में प्रसिद्ध कहानी को अपने बड़े बुजुर्गों से जानकर कक्षा में सुनाइए।
3. लक्ष्य भेद की कई अन्य कहानियाँ आपके परिवेश और समाज में प्रचलित होंगी उन्हें पता कर लिखिए और कक्षा में सुनाइए। इसके अलावा आप अपने साथियों के साथ मिलकर कहानी बनाइए और सुनाइए।

7IMH2T

पाठ 21

सुवागीत

-लेखक-मंडल

7IHD4G

हमर छत्तीसगढ़ के संस्कृति ह बड़ जुन्ना संस्कृति आय। ये ह मुँहअँखरा–साहित्य के कोठी आय। ये कोठी म आने–आने किसम के गीत घलो भरे हे। इही गीत मन म सुवागीत के महक ह कारी–कमोद धान कस होथे–महर–महर। गाँव के नारी–परानी मन ये गीत ल अपन हिरदे ले गाथें, जइसे ये गीत ह उँकर मन के हिरदे के भाषा होय।

छत्तीसगढ़ ह लोकगीत के फुलवारी आय। जेमा रकम – रकम के लोकगीत के फूल फुले हे। लोकगीत ओला कहिथे जेन ह तइहा जुग ले मुँहअँखरा लोक–जीवन म रचे – बसे हे अउ आज ले एहा मुँहअँखरा चले आवत हे। न एखर लिखइया के नाँव–पता हे,न एकर गवइया के नाँव–पता ।

हमर छत्तीसगढ़ म करमा,ददरिया,भोजली,गउरा,जँवारा,पंथी,डंडागीत गाये जाथे। अइसने एक ठन सुवागीत घलो आय। सुवा मायने मिट्ठू। तइहा जुग म मिट्ठू ले संदेसा पठोय जात रहिस। सुवागीत म नारी–परानी मन अपन अंतस के मया–पीरा ल गीत रूप म उद्गारथें। अउ सुवा ल संबोधित करके गाथें। एकरे सेती ये गीत ल सुवागीत कहिथें।

सुवागीत कातिक महिना म देवारी तिहार के दू–चार दिन आगू ले शुरू होथे। सुवागीत, गीत भर नोहय,एमा नृत्य घलो होथे। सुवागीत अउ नृत्य ह टोली म होथे, जेमा नारी – परानी मन दस–बारा झन रहिथें। माटी के सुवा बना के ओला टुकनी म राखथें। टुकनी के सुवा ल मँझोत म मढ़ा के नारी–परानी मन गोल घेरा बना के थपोली बजाथें अउ सुवागीत गाके नाचथें। सुवागीत म कोनो बाजा के प्रयोग नइ होय। हाथ के थपोली ह ताल के काम करथे। एमा लइका मन,मोटियारी अउ सियानिन मन के अलग–अलग दल रहिथे। दल वाले मिलके गाथें त बड़ नीक लागथे। निहर–निहर के, झूम–झूम के अउ घूम–घूम के, ताली बजा के नाचथें त सुवागीत अउ नृत्य के सोभा देखतेच बनथे।

सुवा नचइया जम्मो दाई–दीदी मन गाँव भर गिंजर–गिंजरके घरो–घर सुवानृत्य करथें। सुवागीत–नृत्य कब ले शुरू होय हे,एकर कोनो लिखित रूप नइ मिलय। फेर सियान मन कहिथें के ये गजब जुन्ना परंपरा आय। सुवानृत्य काबर नाचे जाथे ? ये सवाल के उत्तर म सियान मन बताथें के सुवानृत्य ले सकलाय धान–चाँउर अउ रुपिया–पइसा ले गउरा बिहाव के खरचा पूरा होथे।

सुवागीत ल नारी–परानी के पीरा के गीत कहे गे हे। काबर के सुवागीत म ओकर अंतस के पीरा अउ ओखर जिनगी के दुख–दरद जादा सुने बर मिलथे। सुवागीत के ये विशेषता हे के एहा 'तरी–हरी नाना,नाना सुवा हो',के बोल ले शुरू होथे। जइसे –

तरी–हरी नाना मोर नाह नारी ना ना रे सुवा मोर
के तिरिया जनम झनि देय,
तिरिया जनम मोर गउ के बरोबर रे सुवना
जहाँ रे पठोय तिंहा जाय,ना रे सुवना ....

सुवा गीत म नारी के दुख–पीरा भर ह नइये, एमा घर–दुवार, खेत–खार,बारी–बखरी, जंगल–पहार,मया–दुलार,साज–सिंगार,धरम–करम,जीवन के मरम, देश अउ समाज के विषय घलो समाय हे, जइसे चिरइ–चुरगुन के बोली उपर ये गीत –

तरी हरी नाहना मोर नाना सुवा रे मोर
तरी हरी ना मोर ना

कोन चिरइया मोर चितर काबर रे सुवना
के कोन चिरइया के उज्जर पाँख–ना रे सुवना
भरही चिरइया मोर चितर काबर
बकुला चिरइया के उज्जर पाँख–ना रे सुवना

कोन चिरइया मोर सुख सोवय निंदिया
कोन चिरइया जागय रात–ना रे सुवना
भरही चिरइया सुख सोवय निंदिया रे सुवना
बकुला जागय सरी रात–ना रे सुवना

नान्हे नोनी ल सुवा नाचे के साध हे त ओ ह अपन दाई करा गोहरावत हे अउ ओकर गहना–गुरिया ल पहिरे बर माँगत हे। एखर सुग्घर बरनन ये गीत म हवय –

दे तो दाई गोड़ के पइरी ल
कहाँ जाबे
सुवा नाचे बर
दे तो दाई तोर बहूँटा ल
कहाँ जाबे
सुवा नाचे बर
दे तो दाई तोर सुतिया ल
कहाँ जाबे
सुवा नाचे बर

घर–परिवार ले आगू देश अउ समाज के हाल–चाल घलो सुवागीत के विषय आय। अजादी के पहिली देश–परेम के भावना जगाय बर सुवागीत ह सबल माध्यम रहिस–

सुवना हो ......
दीदी के घर ह सुतंत्र होगे
जोर मारिस भाँटो ह, सुवना हो......
होगे सुराजी भाँटो ह सुवना
महूँ होहूँ सुराजी ......
कोने डहर के बबा आइस
कोने डहर के बाती बारिस
कान फुँकाहूँ ओ सुवना.......

कान फुँकाहूँ ओ सुवना.......
संत के बानी ये, जागौ रे सुवना...
सुराजी गीत ल, गावौ ओ सुवना...
रेलवाही म सुतगे बबा ह सुवना....
चलो जाबो रेलवाही सुवना......

सुवागीत म कथागीत गायन के घलो परंपरा मिलथे। जइसे हरिसचंद,राम बनवास,सीता हरन, कालिया दहन, मोरध्वज, सुरजा रानी अउ अइसने कतको प्रसंग सामिल हे–

तरी–हरी नाना मोर ना ना नाना
मय का जानँव, मय का करँव
मोर राम नइ हे ओ
अब सीता ल लेगथे लंका के रावन
मय का करँव
जोगी के रूप धरे निसाचर,
दे भिक्छा मोहि माई,
लेकर भिक्छा अँगन बीच ठाढ़े
रथ में लिए बैठाई
मय का करँव

सुवा नाचे के बाद घर मालकिन ह सुवा नचइया मन के मान–गउन करथे,उँकर टुकनी म धान–चाँउर दे के बिदा करथे त सुवा नचइया मन गीत गाके असीस दे बर नइ भुलाँय। सुवागीत छत्तीसगढ़ के नारी मन के जिनगी के दरपन आय,उँकर हिरदे के उद्‌गार आय,जेन ह मोंगरा फूल कस ममहावत हे। हमर लोकगीत के फुलवारी ह अइसने ममहावत रहय, इही साध हे।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

किसम	=	प्रकार	ओला	=	उसे
तइहा जुग	=	अतीत	मुँहअँखरा	=	मुखाग्र
अइसने	=	इसी प्रकार	एखरे सेती	=	इसी कारण
कातिक	=	कार्तिक	थपोली	=	ताली
नीक	=	अच्छा,ठीक	गिंजर–गिंजर	=	घूम–घूमके
निहर–निहर	=	झुक–झुककर	जुन्ना	=	पुराना
सकलाना	=	इकट्ठा होना	तिरिया	=	नारी
नोनी	=	बेटी,लड़की	गोड़	=	पैर

अभ्यास

पाठ से

1. कइसने गीत ल लोकगीत कहिथें ?
2. हमर छत्तीसगढ़ में गाए जाने वाला लोकगीत मन के नाव लिखव।
3. सुवागीत ल सुवागीत काबर कहिथें ?
4. सुवानाच कब नाचे जाथे अउ कोन तरह ले नाचे जाथे ?
5. सुवागीत म ढोलकी ले ताल दे जाथे ।
6. सुवा नाच–गीत ह नारी–परानी के गीत काबर माने गेहे।
7. सुवा नाच म माटी के सुवा काबर बनाय जाथे।
8. सुवा नचइया मन घर–मालकिन ल का असीस देथें।

पाठ से आगे

1. कोन–कोन विषय ऊपर सुवागीत गाए जाथे, बने ओरिया के लिखव अउ अपन कक्षा में उही एकोठिन गीत ल गा के देखव।
2. सुवागीत के चार पंक्ति लिखव जेमा नारी–परानी के हिरदे के पीरा परगट होथे।
3. सुवागीत म कथा–गीत के उदाहरण लिखव।

4. सुवा नचइया मन घरो–घर जाथें। ओमनला देखके आप मनके मन में का–का भाव उठते, लिखव।

5. सुवा नचइया मन के मान–गउन म जउन धान–चाँउर अउ पइसा–कउड़ी मिलथे, तेला सुवा नचइया मन कामे खरचा करत होही, पूछ के लिखव ?

7J6964

भाषा से

1. 'दुख–दरद' अउ 'मान–गउन' शब्द मन ऊपर धियान देवव। ये मन जोड़ी वाला (शब्द–युग्म) शब्द आयँ। पाँच ठन जोड़ी वाला (शब्द–युग्म) शब्द सोंच के लिखव अउ अपन वाक्य म प्रयोग करव।

7JF57R

2. 'गिंजर–गिंजर' शब्द ऊपर धियान देवव। इहाँ 'गिंजर' शब्द ह दू बेर आय हे। यहू मन जोड़ी वाला शब्द आयँ। फेर अइसन जोड़ी वाला शब्द मन ल 'पुनरुक्त शब्द' केहे जाथे। अइसन शब्द के परयोग अपन भाव ऊपर जोर दे खातिर अउ ओकर अर्थ ल पोठ बनाय बर करे जाथे।

   पाँच ठन पुनरुक्त शब्द सोंच के लिखव अउ अपन वाक्य म परयोग करव।

3. ये पाठ म 'नोहे' शब्द के प्रयोग करे गे हे। ये शब्द ह 'नइ' अउ 'हवय' के मेल ले बने हे। अइसने अउ शब्द हें– नइये (नइ + हे),थोकिन (थोर + किन)। अइसन शब्द मन मुँह ला सुख दे खातिर अउ समय ल बचाय बर अपने–अपन बनत रहिथें।

   ऊपर के उदाहरण असन पाँच शब्द खोज के लिखव अउ वाक्य बनावव।

योग्यता विस्तार

1. सुवागीत के जइसे छत्तीसगढ़ के अउ दूसर लोकगीत मन ल घलो सकेलव।

2. डंडा–नृत्य–गीत कब नाचे–गाये जाथे ? एकर बारे म अपन गाँव के सियान मन ले पूछव।

7JP19E

3. घर के सियान मन ले पूछ के अउ सुवागीत अपन कापी म लिखव अउ सकेलव।

4. सुवागीत के तर्ज म एक ठन गीत बनावव अउ गावव।

7JXHB2

पाठ 22 सुब्रह्मण्य भारती

– लेखकमंडल

देश के स्वाधीनता संग्राम में जहाँ कुछ देशभक्तों ने अपने तेजस्वी भाषणों, नारों से विदेशी सत्ता का दिल दहलाया, वहीं कुछ ऐसे साहित्यकार भी थे जिन्होंने अपने काव्य–बाणों से विपक्षी को आहत किया। हिंदी में यदि 'मैथिलीशरण गुप्त', 'सोहनलाल द्विवेदी', 'सुभद्राकुमारी चौहान', 'रामधारी सिंह 'दिनकर' आदि ने अपनी काव्य–रचनाओं से भारतीय नवयुवकों के मन में देश–प्रेम के भाव भरे तो देश की अन्य भाषाओं में भी ऐसे देशभक्त कवि, साहित्यकार हुए जिनकी रचनाओं ने अँग्रेजी राज्य की जड़ें हिला दीं। तमिल भाषा के ऐसे ही कवि थे 'सुब्रह्मण्य भारती'। उनके संबंध में विस्तृत जानकारी इस पाठ में पढ़िए।

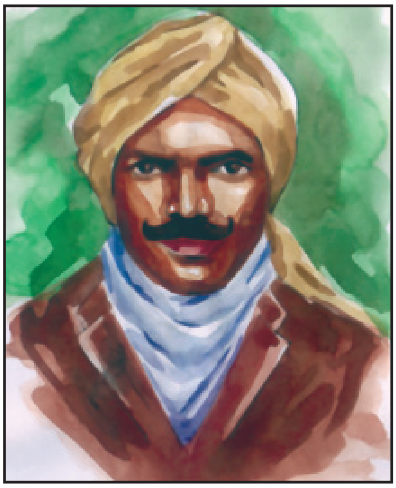

सुब्रह्मण्य भारती बीसवीं सदी के महान तमिल कवि थे। उनका नाम भारत के आधुनिक इतिहास में एक उत्कट देशभक्त के रूप में लिया जाता है। देश के स्वतंत्रता–संग्राम के लिए उन्होंने जिस शस्त्र का प्रयोग किया, वह था उनका लेखन, विशेषतया कविता। उनकी कविताओं ने तमिलवासियों को जाग्रत कर स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

सुब्रह्मण्य भारती का जन्म तमिलनाडु में एक मध्यवर्गीय परिवार में 11 दिसंबर, सन् 1882 को हुआ था। उनके पिता का नाम चिन्नास्वामी अय्यर और माँ का नाम लक्ष्मी अम्माल था। बचपन में भारती को सुब्बैया कहकर पुकारा जाता था। बचपन से ही वे कविताएँ लिखने और उनका पाठ करने के बहुत शौकीन थे। एट्टयपुरम् के राजा ने ग्यारह वर्षीय सुब्बैया को दरबार में कविता पाठ करने के लिए आमंत्रित किया। राजा के दरबार में एकत्र हुए विख्यात कवि उनका कविता पाठ सुनकर दंग रह गए। उन्होंने उन्हें 'भारती' की उपाधि से सुशोभित किया। इस तरह वे 'सुब्रह्मण्य भारती' के नाम से प्रसिद्ध हो गए।

जब सुब्बैया चौदह वर्ष के थे तभी उनका विवाह हो गया था। उनकी पत्नी चेल्लम्माल उस समय सात वर्ष की थीं। कुछ दिनों बाद सुब्बैया के माता–पिता का स्वर्गवास हो गया। सन् 1898 में भारती आगे पढ़ने के लिए वाराणसी (बनारस), अपनी काकी के पास, चले गए। बनारस में उन्होंने हिंदी, अँग्रेजी और संस्कृत भाषाएँ सीखीं।

बनारस में रहते हुए भारती के व्यक्तित्व में बहुत परिवर्तन आया। उन्होंने बड़ी–बड़ी पैनी मूँछें रख लीं। वे सिर पर पगड़ी पहनने लगे। उनकी विचारधारा में भी महान परिवर्तन आया। उनके हृदय में उग्र राष्ट्रीयता के बीज के कारण, उन्हें ब्रिटिश राज के बंधन में बँधे भारतीयों का दुःख व उनकी पीड़ा महसूस होने लगी।

अपने साथ देश–प्रेम की भावना सुलगाए, देशभक्त कवि भारती चार वर्ष बाद बनारस से घर लौटे। जीविका के लिए वे चेन्नई (तत्कालीन मद्रास) में प्रसिद्ध तमिल दैनिक 'स्वदेशमित्रन्' में सहायक संपादक की हैसियत से नौकरी करने लगे, जिसके संस्थापक थे महान नेता जी.सुब्रह्मण्य अय्यर। अपने गीतों के माध्यम से भारतीय लोगों के हृदयों में राष्ट्रीयता की भावना जगाने लगे। जंगल की आग की तरह फैलते–फैलते ये गीत, शीघ्र ही राज्य के अधिकतम व्यक्तियों के हृदय तक पहुँच गए।

सन् 1907 में भारती ने सूरत में काँग्रेस के अधिवेशन में भाग लिया। उग्रवादी विचारों से प्रभावित होने के कारण, उन्हें यह विश्वास हो गया था कि नरमपंथी दृष्टिकोण से देश कभी भी स्वतंत्र नहीं हो सकता। उनके मन में बाल गंगाधर तिलक और विपिन चन्द्र पाल के प्रति बहुत सम्मान उत्पन्न हो गया। वे लोग क्रांतिकारियों की तरह भारत की स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने को तत्पर थे। उन्हें लगा कि स्थिति क्रांतिकारी मोड़ लेना चाहती है।

भारती का देशभक्तिपूर्ण लेखन बहुत शक्तिशाली होता जा रहा था, फिर भी कोई उसे छापने को तैयार नहीं था। लोग सरकार के क्रोध से डरते थे। यहाँ तक कि 'स्वदेशमित्रन्' के संपादक ने भी उनके दृढ़, उग्रवादी विचारों को छापने से इंकार कर दिया। इसलिए भारती ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया और सन् 1907 में वे अपना ही 'इंडिया' नामक एक साप्ताहिक निकालने लगे। इसमें वे अपने विचारों को स्वतंत्रता से छापते और जनता उत्सुकता से उन्हें पढ़ती।

ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आंदोलन भड़कता जा रहा था। शासकों ने इसे दबाने के लिए नेताओं और आंदोलनकर्त्ताओं को पकड़ना और जेल में बंद करना शुरू कर दिया। भारती किसी भी दिन अपनी गिरफ्तारी के वारंट का इंतजार कर रहे थे। उनके दोस्त और अनुयायी नहीं चाहते थे कि वे सींखचों के पीछे बंद हों इसलिए गिरफ्तारी से बचने के लिए, भारती सन् 1908 में पाण्डिचेरी चले गए। वहाँ भी ब्रिटिश सरकार के गुप्तचर, उनकी गतिविधियों पर कड़ी नजर रखे हुए थे। भारती को उन गुप्तचरों का पता लग गया था।

अपने दुखपूर्ण क्षणों में भी भारती का ईश्वरीय शक्ति पर से विश्वास नहीं हटा। इससे उन्हें पाण्डिचेरी में सबसे कठिन समय बिताने में सहायता मिली। जब उनके पास धन नहीं था, उनके प्रशंसकों ने आर्थिक रूप से और अन्य तरीकों से उनकी मदद की। यहाँ तक कि मकान का किराया न देने पर भी उनके मकान–मालिक ने उन्हें कुछ नहीं कहा।

भारती स्वयं किसी से सहायता नहीं माँगते थे। सहायता माँगने से उनके स्वाभिमान को ठेस लगती थी, किंतु गरीबी उनकी उदारता को कम नहीं कर पाई थी। एक बार उन्होंने अपना बहुमूल्य जरी के बॉर्डरवाला अंगवस्त्र तक, जिसे किसी अमीर प्रशंसक ने उन्हें दिया था, एक गरीब को दे दिया था। जब चेल्लम्माल ने इस बात के लिए उन्हें डाँटा तो वे हँस दिए और बोले कि उस गरीब आदमी पर वह अच्छा लग रहा था।

दूसरों की खुशी उनकी अपनी खुशी थी। वे अपने लेखन में अक्सर यह बात व्यक्त करते थे कि समस्त जीवित प्राणी उस सर्वोच्च शक्ति की अनुपम रचना हैं और उसकी नजर में हम सब बराबर हैं।

ऐसा लगता था कि जंगली जानवर भी भारती के सच्चे प्यार को पहचानते थे। एक बार, जब भारती और चेल्लम्माल चिड़ियाघर में घूम रहे थे, वे शेर के पिंजरे के बहुत करीब चले गए और जंगल के राजा को बुलाकर उससे बोले कि कविता का राजा तुमसे मिलने आया है। जवाब में शेर दहाड़ा और उसने भारती को अपना स्पर्श करने दिया। इस आश्चर्यजनक दृश्य को देखकर अन्य दर्शक भौंचक्के रह गए।

भारती को बच्चों से बहुत प्यार था। उन्होंने बच्चों के लिए 'द चाइल्ड सॉंग' (बच्चे का गीत) लिखा, उसे धुन दी और गाया भी।

भागो और खेलो, भागो और खेलो,
आलसी मत बनो, मेरे प्यारे बच्चो,
मिलजुलकर खेलो, मिलजुलकर खेलो,
कभी भी घबराओ नहीं, मेरे प्यारे बच्चो।
यही जीवन का ढंग है, मेरे प्यारे बच्चो।

भारती ने स्वतंत्र भारत के ऐसे लोगों की कल्पना की थी जो उच्च विचारों को आत्मसात कर उन्हें बढ़ावा दें। वे सहज ही पिछड़ी जाति के हिंदुओं और मुसलमानों से हिलमिल जाते थे।

अब तक गांधी–जी का सार्वभौमिक प्रेम व भाईचारे का संदेश देशभर में चारों ओर फैलने लगा था। उससे प्रभावित होकर भारती ने लिखा –

"रे मेरे मन ! मधुर
दया दिखा शत्रु पर"

उनका विजयनाद का गीत, जिस पर नृत्य भी किया जाता है, कहता है......

"मानव–मानव एक समान
एक जाति की हम संतान
यही दृष्टि है खुशी आज की
बजा नगाड़ा, करो घोषणा प्रेम–राज्य की।"

भारती ने गांधी–जी की प्रशंसा में कविता लिखी,'बहुत वर्षों तक जीओ, गांधी महात्मा...'

भारती गांधी–जी से चेन्नई (मद्रास) में सन् 1919 में केवल एक बार मिले थे और वह भी कुछ क्षणों के लिए। गांधी–जी ने राजा–जी और अन्य काँग्रेसी नेताओं और देशभक्तों से कहा था, "भारती देश का एक ऐसा रत्न है जिसकी सुरक्षा और संरक्षण करना चाहिए।"

लेकिन बहुत जल्दी ही उनका अन्त आ गया। भारती नियमित रूप से मंदिर जाते थे। वहाँ मंदिर के हाथी को नारियल देने में उन्होंने कभी भी चूक नहीं की। एक दिन हाथी मस्ती में था। इस बात से अनभिज्ञ भारती हमेशा की तरह नारियल खिलाने उसके करीब गए। हाथी ने उनके अपनी विशाल सूँड़ मारी और वे एक उखड़े हुए पेड़ की तरह गिर गए। वे बुरी तरह घायल हो गए। भीड़ जमा हो गई और उन्हें देखने लगी, पर कोई भी पास जाकर उन्हें बचाने की हिम्मत न जुटा पाया। यह खबर जंगल की आग की तरह फैल गई। जैसे ही यह खबर भारती के घनिष्ठ मित्र कानन के कानों तक पहुँची, वे भागे हुए आए और उन्होंने भारती को बचाया।

अच्छी चिकित्सा होने के कारण भारती की हालत कुछ हद तक सुधर गई। वे मन से अपने आपको स्वस्थ मानते थे और इसलिए यह विश्वास करने से इंकार करते थे कि उनकी सेहत गिर रही है। वे तब तक अपने क्षीण स्वर में गाते रहे, जब तक कि 12 सितंबर, सन् 1921 को उनकी आवाज़ सदा के लिए शांत न हो गई।

जब भारत स्वतंत्र हुआ तब भारती की रचनाएँ विस्तृत रूप से प्रकाशित होने लगीं। आज विश्व के पुस्तकालयों में उनकी किताबें संगृहीत हैं। अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद होने के साथ–साथ अँग्रेजी, रूसी और फ्रेंच भाषा में भी उनकी पुस्तकों का अनुवाद हुआ है।

सुब्रह्मण्य भारती की याद में एट्टयपुरम् में 'भारती मंडप' स्थापित किया गया है। यहाँ, तमिल में महात्मा गांधी द्वारा लिखे शब्दों को पढ़ा जा सकता है, "जिन्होंने भारती को अमर बनाया, उन प्रयासों को मेरा आशीर्वाद।"

चेन्नई के समुद्रतट पर भारती की एक प्रतिमा है। ऐसा प्रतीत होता है कि अनंत लहरों का लयबद्ध नाद, उनकी कविताओं को गुनगुना रहा है।

भारती द्वारा रचित उनका आखिरी गीत, जो उन्होंने चेन्नई (मद्रास) के समुद्रतट पर हुई सभा में अपनी मृत्यु से कुछ सप्ताह पहले गाया था, उनके बहुत लोकप्रिय गीतों में से एक है–

"भारतीय समुदाय अमर हो
जय हो भारत–जन की जय हो।
भारत–जनता की जय–जय हो।
जय हो, जय हो, जय हो।"

टिप्पणी

तमिलनाडु 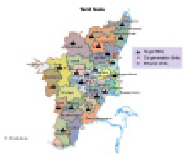 = दक्षिण भारत का एक राज्य। इसकी राजधानी चेन्नई है। यहाँ की राजभाषा 'तमिल' है।

बाल गंगाधर तिलक = काँग्रेस में उग्र पंथ के नेता। इन्होंने ही यह नारा दिया था –"स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे।''

विपिनचन्द्र पाल = लोकमान्य तिलक के सहयोगी, बंगाल में काँग्रेस के सर्वमान्य नेता।

पाण्डिचेरी = भारत के पूर्वी तट पर फ्रांस का उपनिवेश था। अब केन्द्र शासित राज्य है। यहाँ पोरोविल पर्वत पर महर्षि अरविन्द का आश्रम विश्वविख्यात है।

राजा जी = चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य। स्वतंत्र भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल।

अभ्यास

पाठ से

1. सुब्बैया का नाम भारती कब और क्यों पड़ा ?
2. बनारस में रहते हुए सुब्बैया के व्यक्तित्व में क्या परिवर्तन आया ?
3. भारती स्वयं का साप्ताहिक अखबार क्यों निकालने लगे ?
4. भारती अपने लेखन में अक्सर किस बात को व्यक्त करने पर जोर दिया करते थे ?
5. महात्मा गाँधी ने भारती जी के बारे में क्या कहा था ?
6. भारती ने स्वतंत्र भारत में कैसे लोगों की कल्पना की थी ?
7. हाथी के हमले के समय भारती को क्यों कोई बचा नहीं पाया ?

पाठ से आगे

1. तमिलनाडु के रहनेवाले भारती जी जब बनारस में पढ़ने के लिए आए तो उन्होंने तमिल के साथ–साथ हिंदी और अंग्रेजी भाषाएँ भी सीखीं। आप सोचकर लिखिए कि इन भाषाओं के सीखने से भारती जी को कौन–कौन से लाभ हुए होंगे।
2. आप पाठ में देखते हैं कि भारती जी दूसरों तक अपने विचारों को पहुँचाने के लिए कविता, साप्ताहिक पत्र आदि का सहारा लेते हैं। आप अपनी बातों को दूसरे तक पहुँचने के लिए किन–किन साधनों का उपयोग करना चाहेंगे ?

7K7SCP

3. पाठ में बार–बार समाचार पत्रों का उल्लेख हुआ है। आप किन–किन समाचार पत्रों के बारे में जानते हैं और उनके पढने से आप को क्या लाभ होता है ? साथियों से चर्चा कर लिखिए।
4. भारती ने बच्चों के लिए गीत "चाइल्ड साँग लिखा और गाया। जिसमें भागो और खेलो आलसी मत बनो, मिल–जुलकर खेलो कभी घबराओ नहीं यही जीवन का ढंग है ! इन पंक्तियों में से देखें तो बच्चे क्या–क्या करते हैं और क्यों ?

भाषा से

1. पाठ में इन शब्दों का प्रयोग हुआ है– माता–पिता, समुद्रतट, पुस्तकालय, बहुमूल्य, स्वर्गवास आदि जो सामासिक शब्द कहे जाते हैं, अर्थात दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए एक नवीन एवं सार्थक शब्द को समास कहते हैं। जैसे– 'पुस्तकालय' अर्थात् 'पुस्तक का आलय या घर' दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि 'समास' वह क्रिया है, जिसके द्वारा कम–से–कम शब्दों में अधिक–से–अधिक अर्थ प्रकट किया जाता है।

प्रायः समास के छः रूप देखने को मिलते हैं –

1. तत्पुरुष समास 2. कर्मधारय समास 3. अव्ययीभाव समास

4. द्वंद्व समास 5. बहुव्रीहि समास 6. द्विगु समास।

तत्पुरुष समास :– पुस्तकालय– पुस्तक का आलय, समुद्रतट–समुद्र का तट तत्पुरुष समास के उदाहरण हैं। इस समास का दूसरा पद (उत्तर पद) प्रधान होता है अर्थात् विभक्ति का लिंग, वचन दूसरे पद के अनुसार होता है इसका विग्रह करने पर कर्ता व सम्बोधन की विभक्तियों(ने,हे,ओ,अरे) के अतिरिक्त किसी भी कारक की विभक्त प्रयुक्त होती है। जैसे– सेनापति –सेना **का** स्वामी, शरणागत शरण **में** आया हुआ, सत्याग्रह –सत्य **के लिए** आग्रह, जलज – जल **में** जन्मा हुआ।

कर्मधारय समास– बहुमूल्य, स्वर्गवास, सज्जन, दहीबड़ा कर्मधारय समास के उदाहरण हैं। जिस समास का उत्तरपद प्रधान हो और पूर्वपद तथा उत्तरपद में विशेषण–विशेष्य अथवा उपमान–उपमेय का संबंध हो वह कर्मधारय समास कहलाता है। जैसे– कमलचरण– कमल **जैसा** चरण, महाराजा – महान **है जो** राजा, महादेव–महान **है जो** देव, विद्याधन– विद्या **रूपी** धन।

द्वंद्व समास–दोनों पद प्रधान होते हैं। दोनों पद प्रायः एक दूसरे के विलोम होते है, पर सदैव नहीं। इसका विग्रह करने पर और, अथवा, या का प्रयोग होता है। जैसे माता पिता– (माता **और** पिता) लोटा–डोरी – (लोटा **और** डोरी)

अपनी पुस्तक से इन प्रकार के समास के उदाहरण को खोज कर लिखिए।

2. नीचे लिखे शब्दों में से जो अव्यय शब्द न हों उन्हें चिह्नित कर लिखिए–

- अरे, वाह, जूता, और, तथा, शेर, शायरी
- किन्तु, लड़का, परन्तु, कार्य, बल्कि, धीरे–धीर
- कन्या, इसलिए, अतः एवं, पत्र, शब्द, अतएव
- सीख, सोना, अवश्य, यदि, वाह, अर्थात, व, आदि

3. एक ही अर्थ को प्रकट करनेवाले शब्द को समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहते हैं। बॉक्स में कुछ शब्द और उनके समानार्थी दिए गए हैं, उनकी सही जोड़ी बनाइए–

स्वतंत्र, समुद्र, निलय, मनुष्य, भारती, वाराणसी, सरस्वती, जगत, वसुधा, निर्बल, आजाद, सागर, क्षीण, धरती, भव, बनारस, मानव, गृह।

योग्यता विस्तार

1. 'वन्दे मातरम्' और 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' भारत के प्रसिद्ध देश–भक्ति के गीत हैं। इन गीतों को खोजकर याद कीजिए और इनके रचनाकारों के सम्बन्ध में जानकारी हासिल कीजिए।

7WL1T9

2. भारती जी ने साहित्य–रचना के माध्यम से स्वतंत्रता–आन्दोलन में सक्रिय सहयोग दिया। हिन्दी साहित्यकारों ने भी अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से यही कार्य किया। उन साहित्यकारों के नाम लिखिए और उनकी देश–प्रेम की कुछ रचनाएँ पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।

पाठ 23

राजीव गाँधी

(भारत में दूरसंचार क्रांति के अग्रदूत)

– डॉ विद्यावती चन्द्राकर

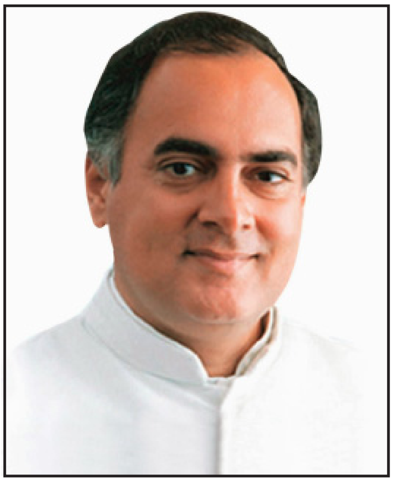

आज लाखों भारतीय स्व. राजीव गाँधी जी को एक देशभक्त, शहीद और देश का एक कर्त्तव्यनिष्ठ बेटा मानते हैं, जिन्होंने अपने केवल 5 वर्षों के प्रधानमंत्रित्व काल में समय की लहरों से कभी न मिटने वाले अमिट उपलब्धियों से गढ़ी गौरवशाली तकनीक संपन्न आधुनिक भारत का स्वप्न देखा और इस ओर देश को अग्रसर किया।

नाना पं. जवाहरलाल नेहरू, माता श्रीमती इंदिरा गाँधी (पूर्व प्रधानमंत्री) तथा पिता श्री फिरोज गाँधी (पूर्व सांसद) के घर में जन्म लेने के बावजूद भी राजीव जी की राजनीति में कोई विशेष रूचि नहीं थी। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा देहरादून से प्राप्त कर उच्च शिक्षा इंग्लैंड में पूरी की। राजीव जी का विवाह सन् 1968 में एंटोनियो माइनो से हुआ जो उस समय इटली की नागरिक थीं। विवाह उपरांत एंटोनियो माइनो ने अपना नाम बदलकर सोनिया गाँधी कर लिया। राजीव जी के दो बच्चे हैं–राहुल एवं प्रियंका।

राजीव गाँधी जी एक एयरलाइन्स में पायलट की नौकरी करते थे। सन् 1980 में अपने छोटे भाई संजय गाँधी जी की एक हवाई दुर्घटना में असामयिक मृत्यु के बाद माता इंदिरा जी को सहयोग देने के लिए उन्होंने सन् 1981 में राजनीति में प्रवेश किया था। राजीव जी ने अमेठी से लोकसभा का चुनाव जीतकर अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत की। 31 अक्टूबर 1984 को अपने ही अंगरक्षकों द्वारा माता श्रीमती इंदिरा गाँधी जी (तत्कालीन प्रधानमंत्री) की हत्या किए जाने के बाद राजीव जी को उसी दिन प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाई गई और उन्हें कुछ दिन बाद कांग्रेस (इं) पार्टी का नेता चुन लिया गया। राजीव गाँधी पूर्व से ही लोकसभा के निर्वाचित सदस्य थे, फिर भी राजनीतिक शुचिता का परिचय देते हुए, उन्होंने पुनः लोकसभा का चुनाव समय पूर्व करवाए ताकि कोई यह ऊँगली न उठा सके कि जनता ने इंदिरा जी को देखकर कांग्रेस को बहुमत दिया था, राजीव को नहीं। राजीव गाँधी के नेतृत्व में भारत के लोकतंत्र के इतिहास में कांग्रेस ने 542 में से 411 सीटें जीतकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया।

श्री राजीव गाँधी गंभीर स्वभाव वाले व्यक्ति थे। उनकी रूचि छात्र जीवन से ही विज्ञान एवं इंजीनियरिंग में थी। उनकी सोच आधुनिक थी। उनका मानना था कि विज्ञान और तकनीक के सहयोग से ही उद्योगों का समुचित विकास हो सकता है। अपनी इसी दूरदर्शिता का परिचय देते हुए उन्होंने कंप्यूटर को आमजन तक पहुँचाने के लिए विशेष पहल कर इक्कीसवीं सदी के भारत को प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सुदृढ़ किया। आज पूरे देश में जो कंम्प्यूटरीकृत व्यवस्था देखने को मिल रही है, इसमें राजीव गाँधी जी का महत्वपूर्ण व उल्लेखनीय योगदान रहा है।

भारत में दूरसंचार क्रांति के अग्रदूत राजीव गांधी ने सन 1984 में Centre for Development of Telematics (C-DOT) की स्थापना कर भारतीय दूरसंचार नेटवर्क की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया। फलस्वरूप शहर से लेकर गाँव तक दूरसंचार का जाल (1986) बिछना प्रारंभ हो गया और गाँव–शहर, देश–दुनिया सब आपस में जुड़ने लगे।

शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता को संबल प्रदान करने हेतु राजीव गाँधी जी ने सन् 1986 में शिक्षा विभाग के लिए नई शिक्षा नीति (NEP) का प्रारूप तैयार कर उसे क्रियान्वित किया।

राजीव गांधी ने अपने प्रधानमंत्रित्व काल में सन् 1989 में संविधान में 61वाँ संशोधन कर मताधिकार की उम्र सीमा 21 वर्ष को कम करके 18 वर्ष कराया। इससे करोड़ों युवा जो 18 वर्ष के थे, उन्हें चुनावों में मत देने का अधिकार प्राप्त हो गया और वे विभिन्न चुनावों में अपने–अपने मतानुसार जनप्रतिनिधियों को चुनने के लिए समर्थ हो गए। स्थानीय स्वराज्य संस्थाओं में महिलाओं को 33 आरक्षण दिलवाने का काम राजीव गाँधी जी द्वारा किया गया।

उनका मानना था कि सत्ता के विकेंद्रीकरण के लिए पंचायती राज की व्यवस्था को सबल व समर्थ बनाकर ही निचले स्तर तक लोकतंत्र को पहुँचाया जा सकता है, अतएव पंचायती राज की मजबूती के लिए सन् 1991–92 में संविधान में 73वाँ संशोधन कर पंचायती राज व्यवस्था को सशक्त किया। फलस्वरूप 24 अप्रैल 1993 को (उनके मरणोपरांत) पूरे भारत में त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था लागू हुई।

21 मई 1991 में राजीव गाँधी जी की हत्या हो गई परंतु आज भी राजीव गाँधी जी को भारत में दूरसंचार क्रांति के अग्रदूत के रूप में आदरपूर्वक स्मरण किया जाता है।

अभ्यास

पाठ से

एक वाक्य में उत्तर दीजिए–

1. राजीव जी प्रधानमंत्री बनने से पूर्व कहाँ नौकरी करते थे?
2. राजीव जी की हत्या कब हुई?
3. देश राजीव जी को किस रूप में स्मरण करता है?
4. एंटोनियो माइनो कौन थी तथा एंटोनियो माइनो का परिवर्तित नाम क्या है?
5. महिलाओं के हित में श्री राजीव गाँधी ने क्या कार्य किए?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

1. किन परिस्थितियों में श्री राजीव गाँधी को प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलायी गई?
2. प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में श्री राजीव जी के योगदान का वर्णन कीजिए।
3. 61वाँ संविधान संशोधन एवं 73वाँ संविधान संशोधन किस बारे में था?
4. राजनीतिक शुचिता का परिचय देने के लिए राजीव गाँधी जी ने क्या किया?
5. राजीव गाँधी जी ने पंचायती राज व्यवस्था के सशक्तिकरण के लिए क्या किया?
6. विज्ञान और तकनीक के सहयोग से ही उद्योगों का समुचित विकास हो सकता है? इस बात से आप कहाँ तक सहमत हैं? लिखिए।
7. स्व. राजीव गाँधी जी का पारिवारिक परिचय लिखिए।

पाठ 24

सड़क चिह्न एवं सड़क संकेत

सड़क चिह्न (ROAD SIGNS) – सड़क पर अंकित सभी लाईने एवं नमूने व रंग जिनका प्रयोग सड़क पर या सड़क के किनारों पर किया जाता है वे सड़क चिह्न कहलाते हैं। ये यातायात को नियंत्रित व नियोजित करने तथा सड़क उपयोगकर्ता को सतर्क व सावधान करने के उद्देश्य से बनाए जाते हैं। ये चिह्न सड़क की भाषा को प्रदर्शित करते हैं। जैसे:

मध्य रेखा (CENTER LINE) – अविभाजित सड़क पर मध्य रेखा आने–जाने वाली यातायात को अलग करती है एवं आवागमन को आसान बनाती है। यदि रेखा लगातार है तो ओव्हर टेक करने से बचना चाहिए। मध्य रेखा खण्डित हो तथा सामने से किसी प्रकार की गाड़ी नहीं आ रही हो, तो ध्यानपूर्वक ओव्हरटेक करना चाहिए।

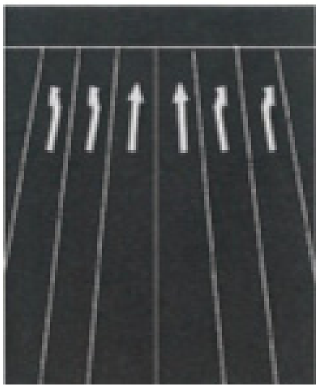

छोटी खण्डित सफेद रेखाएँ (LANE MARKING LINE) – सड़क को लेन में विभाजित करने के लिए इनका प्रयोग किया जाता है। वाहनों को इन लेन में ही चलना चाहिए। बाँयी ओर की अंतिम लेन भारी वाहन एवं धीमी गति के वाहनों के लिए होती है तथा तेज गति के वाहनों के लिए दाँयी ओर की लेन होती है।

दिशा सूचक मार्किंग (DIRECTION INDICATOR MARKING)– रोड पर जंक्शन/इंटर सेक्शन में लेन मार्किंग किया गया होता है। दाँयी ओर जाने वाली यातायात के लिए दाँयी लेन, सीधे जाने वाली यातायात के लिए मध्य लेन एवं बाँयी ओर जाने वाली यातायात के लिए बाँयी लेन बनाया जाता है।

उत्तर दो

प्रश्न– 01 मध्य रेखा (CENTER LINE) – क्या महत्व है ?

प्रश्न– 02 मध्य में छोटी खण्डित सफेद रेखाएँ का क्या महत्व है ?

प्रश्न– 03 बाँयी दिशा में जाने के लिए कौन–से लेन का उपयोग करना चाहिए ?

प्रश्न– 04 ओव्हरटेक कब नही करना चाहिए ?

●●●

शब्दकोश

शब्दकोश में शब्दों का संयोजन तथा उनके अर्थ समझिए। रिक्त स्थानों पर, बॉक्स में दिए गए, पूर्व में पढ़े शब्द और उनके अर्थ, शब्द कोश के क्रम में लिखिए।

अ

अइहैं – आएँगे
अकर्मण्यता – निकम्मापन
अकिंचन – तुच्छ, छोटा
.... – ....
अक्षुण्य – बिना टूटे, अखण्डित
अगोचर – जो दिखाई न दे
.... – ....
अजैविक – जिनका सम्बन्ध जीवों से न हो
अट्टालिका – अटारी
अटूट – न टूटनेवाला, दृढ़, मजबूत
अंतिम घड़ियाँ – मृत्यु का आखिरी क्षण
अनश्वर – जो कभी नष्ट न हो, जिसका नाश न हो ।
अनर्गल – व्यर्थ, बेकार
अनभिज्ञ – जिसकी जानकारी न हो
.... – ....
अनिश्चय – निश्चय नहीं
अनुकरणीय – अपनाने योग्य
अनुराग – प्रेम
अनुपम – जिसको उपमा न दी जा सके, जिसकी समानता न हो
.... – ....
अपरिमित – जिसकी सीमा न हो
.... – ....
अभिमान – घमंड
.... – ....
अमराई – आम का बगीचा
अवधि – समय–सीमा
अवस्था – हालत
.... – ....
.... – ....
अश्रु – आँसू
असहनीय – जो सहन न किया जा सके
असामान्य – जो मामूली न हो, विशेष

अखिल, अजीव, अनाथ, अचल, अनूठी, अपूर्ण, अभाव, अभियान, अमिय, अविकल, अशिव

आ

.... – ....
आँखें भर आना – आँखों में आँसू आ जाना
आँजना – लगाना (काजल आदि)
आकर्षण – मन को अपनी ओर खींचनेवाला
आक्रमण – हमला
.... – ....
आगत – आया हुआ
आगमन – आना
.... – ....
.... – ....
आच्छादित – ढँकी हुई
आतंक – भय, उपद्रव
.... – ....
आतुरता – व्याकुलता, अकुलाहट
आदि – आरंभ, पहले
आदी – अभ्यस्त होना
आधीन – किसी के वश में होना
आध्यात्मिक – आत्मा– परमात्मा संबंधी
आभार – कृतज्ञता
आमंत्रित – बुलाया गया
आमोद – प्रसन्नता
आराध्य – पूज्य
आलिंगन – गले लगना, बाहों में भर लेना
आवेश – जोश
आयाम – फैलाव, विस्तार
आरोप – इलजाम, दोष लगाना
आर्थिक – धन से संबंधित
आशय – इच्छा रखना
आशीष – आशीर्वाद
आस्तीन – कमीज या कुर्ते की बाँह

आधार, अजीब, आतंकवाद, आग्रह, आघात, आँखें दिखाना, आकांक्षा

इ

इंदु – चंद्रमा
इंद्रप्रस्थ – महाभारत काल का एक प्रसिद्ध नगर जो दिल्ली के निकट था

इज्जत – सम्मान
इति – अंत
इत्यादि – वगैरह

ई

ईख – गन्ना
ईश – ईश्वर
ईर्ष्या – जलन
ईर्ष्यालु – जलन रखनेवाला

उ

उच्च – ऊँचा
उड़ा देना – खत्म कर देना
उत्सव – त्यौहार
.... – ....
.... – ....
उपरान्त – बाद में
उपलब्धियाँ – प्राप्तियाँ
उपासना – आराधना, पूजा–सेवा करना
.... – ....
उलाहना – अटकाव, झंझट
उलूक – उल्लू

उत्सुक, उन्नत, उभय

ऊ

ऊँघ – नींद का झोका
ऊटपटाँग – उल्टा–सीधा काम

ए,ऐ

एकत्रित – इकट्ठे
.... – ....
.... – ....
.... – ....
.... – ....

एकलव्य, एकमत, ऐश्वर्य, ऐक्य

ओ

ओत–प्रोत – भरा हुआ
.... – ....
.... – ....

ओष्ठ, ओसारा,

औ

.... – ....
.... – ....
औषधि – दवा

औषधालय, औद्योगिक

क

कंचन – सोना
.... – ....
कटि – कमर
कतार – पंक्ति
कदाचित – शायद
.... – ....
कमरिया – कम्बल
कर – हाथ, टैक्स
.... – ....
काक – कौआ
.... – ....
कान पकना – कोई बात सुनते–सुनते ऊब जाना
काफिला – यात्रियों का समूह
कारावास – जेल, कैदखाना, बंदीगृह
कालिंदी – जमुना/यमुना (नदी का नाम)
कालिमा – अँधेरे का कालापन
किंकर्त्तव्यविमूढ़ होना – क्या करें, क्या न करें, निश्चय न कर पाना
.... – ....
.... – ....
कुलीन – अच्छे परिवार का
कृति – रचना
केंद्रित करना – किसी एक बिंदु पर ध्यान एकाग्र करना
कोप – क्रोध
क्षत–विक्षत – बुरी तरह घायल,

किश्ती, कलरव, काजी, कीट, कगार, कदापि,

ख

.... – ....
.... – ....
खड्ग – तलवार

खतरे की घंटी – चेतावनी देना
खपत – उपयोग
.... – ....
खरामा–खरामा – धीरे–धीरे
खिताब – उपाधि
.... – ....
खिसक जाना – चुपके से चले जाना
.... – ....
खुसुर–फुसुर – बिना आवाज किए बातें करना
.... – ....
खेल बनाना – मजाक बनाना
.... – ....

खलल, खुदा, खग, खैर, खंजर, खर, खिन्न

ग

....
गतिरोध – बाधा
गला भर आना – भावुक हो जाना
ग्लानि – पछतावा, पश्चाताप
गिरि – पर्वत, पहाड़
....
गुप्तचर – जासूस
.... – ....
गूढ़ – रहस्यपूर्ण

ग्वारन – ग्वाले, गाय चरानेवाले

गंजा, गुंजाइश, गुबारा, गंध

घ

....
घटक – अंग
घट–घट – प्रत्येक हृदय में
घन – बादल
घनघोर – बहुत अधिक
घनेरी – बहुत अधिक
....
घाघ – भारी चालाक व्यक्ति
घाटी – दो पर्वतों के बीच का गहरा भू–भाग
.... – ....
.... – ....

घपला, घालमेल, घात, घंटिका

च

.... – ....
चक्का बँधा होना – स्थिर न रहना
चना–चबेना – सूखे, भुने खाद्य पदार्थ
....
चमन – उद्यान, बगीचा
चलायमान – गतिमान
....
चातुरी – चतुराई
....
चिरन्तन – पुराना, पुरातन
चीत्कार – दुखभरी, ऊँची आवाज
....
चुभन – चुभने का दर्द
....
चेष्टा – प्रयास
चैन – संतुष्टि, आराम
चैन आना – मन शान्त होना,

चपत, चहल–पहल, चुनौती, चेतना, चिर, चंद

छ

.... – ....
.... – ....
छटा – दृश्य, चमक
.... – ....
छिन्न–भिन्न होना – बिखर जाना
छींकौ – सींका
.... – ....
छुद्र – छोटी

छूँछी, छुआछूत, छग, छत्र, छंद

ज

.... – ....
जंजीर – बेड़ी
जगत – संसार, दुनियाँ
जन साधारण – साधारण जनता
जनानी – औरत, औरतों की
.... – ....

जमात – एक तरह के लोगों का समूह
.... – ....
जलचर – जल के जीव–जन्तु
जलवृष्टि – पानी गिरना, वर्षा होना,
जागरूक – सजग
जायो – पैदा किया
जिय – मन
.... – ....
जैविक – जीवों, प्राणियों से सम्बन्धित
.... – ....
जोर – दबाव, जबर्दस्ती
जोरो – जोड़कर
जोशांदा – सर्दी, जुखाम दूर करने की दवा
ज्वर – बुखार
.... – ....

जंजाल, जमघट, जयंती, जंग, जोखिम, जिहाद, ज्योतिष,

झ

.... – ....
.... – ....
.... – ....
.... – ....
झिड़की – डाँट, डपटना
झुटपुटा – सुबह जब कुछ उजाला, कुछ अँधेरा हो

झंकार, झिझक, झंझट, झाड़

ट

.... – ....
.... – ....
टहल – सेवा, चाकरी
.... – ....
.... – ....
टोटा – कभी
.... – ....

टालमटोल, टोह, टैक्सी, टंकण, टक्कर

ठ

.... – ....
.... – ....
.... – ....
.... – ....
ठिठक जाना – संकोचपूर्वक रुक जाना

ठिकाना, ठट्ठा, ठग, ठसक

ड

.... – ....
.... – ....
.... – ....
.... – ....
डोम – एक अनुसूचित जाति जो श्मशान में चिता जलाने का काम करती थी।

डंके की चोट कहना, डगर, डील–डौल, डंठल,

त

.... – ....
.... – ....
तत्काल – उसी समय, तुरंत
तृण – तिनका, घास
तंदुरुस्त – स्वस्थ
तृप्ति – संतुष्टि
तथाकथित – ऐसा कहा हुआ`
तत्परता – शीघ्रतापूर्वक
तन्मय – लीन
तन्मयता – लीन होना
तपस्या – कठिन साधना
तमाशा बनाना – हँसी का पात्र बनाना
तसल्ली देना – धैर्य बँधाना
ताप – गर्मी
तापित – तपा हुआ
.... – ....
ताल – तालाब
.... – ....
.... – ....
.... – ....

ताम्र, तिमिर, तंत्र, तुरंग, तीक्ष्ण, तंत्र–मंत्र

थ

थका–हारा – थकावट से चूर
.... – ....
.... – ....

थल, थर्राना

द

दंडसंहिता – सजा देनेवाले नियम
.... – ....
दरख्त – वृक्ष
दर–दर – द्वार–द्वार
दर्प – घमंड
.... – ....
दशक – दस वर्ष की अवधि
.... – ....
दामन – आँचल
दिलचस्पी – रुचि
दिलीप – रघुकुल के एक सम्राट
दीर्घ – लंबा समय
दीर्घजीवी – लंबे समय तक जीनेवाले
दीर्घायु – लंबी आयु
दुखद – दुख देनेवाला, कष्टप्रद
.... – ....
दुर्गन्ध – बदबू
दुर्गम – जहाँ जाना बहुत कठिन हो
.... – ....
दृष्टिपात – देखना
देशद्रोही – देश से द्रोह करनेवाला
.... – ....
.... – ....

दंत, दसमुख, दुर्गति, दृष्टि, द्युति, दबंग, दैत्य,

ध

.... – ....
.... – ....
धरातल – जमीन पर
.... – ....
धूर्त – कुटिल
धूर्तता – कुटिलता
.... – ....
धेनु – गाय
.... – ....

धीर, धंधा, धूमकेतु, धरा, ध्येय

न

नभ – आकाश
नभ–चुम्बी – बहुत ऊँचे, आकाश को चूमने वाला
नत होना – झुकना
.... – ....
नाती – लड़की का लड़का, लड़के का लड़का
नादान – नासमझ
.... – ....
निखार आना – अधिक सुंदर लगना
निरन्तर – लगातार
निराधार – आधारहीन
निर्जन – सुनसान
निर्बुद्धि – मूर्ख, बुद्धिहीन
निर्भर – आश्रित, अवलंबित
निर्वासन – निकालना (देश निकाला)
निश्चेष्ट – निष्क्रिय
निश्छल – छलरहित, बिना कपट के
निश्शंक – बिना किसी शंका के, निस्संदेह
.... – ....
निष्काम – बिना कामना के
निष्ठा – लगन
नीड़ – घोंसला
.... – ....
नीरोग – रोग रहित , बिना रोग के
नूपुर – घुँघरू (महिलाओं के पाँव का गहना)
.... – ....

नीरव, नृप, नर, नाभि, निष्कलंक

प

.... – ....
.... – ....
पखेरू – पक्षी
पतियायो – विश्वास कर लिया
परकाज – दूसरों के काम
परकोटा – मकान/बाड़ी/भूमि के चारों तरफ घिरा हुआ क्षेत्र, घेरा
परास्त – हार
परिवर्तित – बदला हुआ
पर्यटन – भ्रमण, घूमना

पाछे — पीछे
पाटलीपुत्र — वर्तमान पटना नगर
पाद–प्रक्षालन — चरण धोना
पाहन — पत्थर
.... — ....
पीड़ा — कष्ट, दुःख
पुरंदर — इंद्र
पुरातत्वविभाग — प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों, की देखरेख करनेवाला विभाग
पेशगी — अग्रिम राशि
पैशाचिक — राक्षस जैसा, क्रूर
.... — ....
पोता — पुत्र का पुत्र
प्रकांड — बहुत बड़ा, उत्तम
प्रखर — तेज
प्रच्छन्न — छुपा हुआ
प्रणयन — रचना, ग्रन्थ लिखना
प्रतिज्ञा — संकल्प, शपथ
प्रतिध्वनि — आवाज का वापस आना/लौटकर गूंजना
प्रतिबद्ध — बँधा हुआ
प्रतिशोध — बदला
प्रतिष्ठा — सम्मान, इज्जत
प्रदूषित — जो दूषित हो गई हो
प्रफुल्लता — अति प्रसन्नता
प्रयत्न — कोशिश, प्रयास, उपाय
प्रवाहित — बहता हुआ
प्रशासनिक — शासकीय
प्राण पखेरू उड़ना — मृत्यु होना, मरना
प्रावधान — व्यवस्था
प्रेरणा — उकसाने की क्रिया
.... — ....

पंथ, पंकज, पिशाच, पोत, प्रोत्साहन

फ

.... — ....
.... — ....
फरार — लापता या, भागा हुआ व्यक्ति
.... — ....
फुरि — सांच, सच, सत्य
.... — ....

फक्कड़, फरियाद, फौज, फंदा

ब

.... — ....
बंदी छोर — बंधन खोलनेवाला
बख्श देना — क्षमा कर देना
बछल — वत्सल, गाय का बछड़े के प्रति जैसा प्रेम
बटोहिया — राहगीर
बतियाना — बातचीत करना
बरबस — जबर्दस्ती
बलवती — अधिक प्रबल
बलात — बलपूर्वक
बलिदान — कुर्बानी
बहियाँ — बाँह, भुजाएँ
बात की सँभार — वचन की रक्षा, बात को सँभाल के
बाध्य — विवश
बाला — युवती, बालिका
बावजूद — इसके होते हुए भी
बिनवै — विनती करता है
बियापे — अनुभव होता है
बुजुर्ग — वृद्ध, बूढ़े
.... — ....
.... — ....
बैन — वचन
बैजन्तीमाल — एक प्रकार की माला, जिसमें पाँच रंग के फूल होते हैं, विजयमाल
.... — ....

बुध, बैरागी, बुनियादी, बंदी

भ

.... — ....
भय — डर
भरमाकर — बहकाकर
.... — ....
भाँड़ा फूट जाना — रहस्य प्रगट हो जाना
भाँज दो — तेज कर दो
.... — ....

भाल – मस्तक

भाष्यकार – मूल ग्रंथ की व्याख्या लिखने वाला

.... – ....

भूत उतारना होगा – घमंड चूर करना होगा

भूमिगत – भूमि के अन्दर, जमीन के भीतर

.... – ....

भृकुटी – भौंह

भोटदेशी – भोट प्रदेश के रहने वाले,

भोर – सुबह

.... – ....

भव, भार, भंजक, भुजंग, भूलभुलैया, भौतिक

म

.... – ....

मंद – धीमा

मंदाग्नि – पाचन शक्ति का बिगड़ जाना,

मंदित – मढ़ा हुआ

मझारन – मध्य

मधुमेह – डायबिटीज नामक रोग, जिसमें पेशाब के साथ शक्कर भी आती है।

मधुवन – गोकुल के आसपास की भूमि, कृष्ण का रासलीला–स्थल

मनहर – मन को हरन करनेवाला, लुभाने वाला

मनीषी – ज्ञानी, पंडित

मनुजत्व – मानवता, आदमीयत

मनोकामना – मन की इच्छा

मनोरथ – मन की इच्छा

मनोरम – मन को अच्छा लगनेवाला, मन को रमानेवाला

मात देना – परास्त करना

मानुस – मनुष्य

मारक – मारनेवाला

माहिर – कुशल

मुकाबला – प्रतियोगिता, भिड़ंत

मुक्त – स्वतंत्र

मुखबिर – पुलिस को अपराधियों की सूचना देनेवाला

मुखर – अधिक बोलनेवाला

मुख्यत: – मुख्य रूप से

मुग्ध – मोहित होना

मुट्ठी में होना – वश में होना

मुठभेड़ – टक्कर

.... – ....

मेहतर – सफाई करनेवाला

मोर – मेरा, मयूर

मोहक – मन को मोह लेनेवाला

.... – ....

.... – ....

मोहताज, मूर्छा, मौन, मंजु

य

.... – ....

यंत्रणा – पीड़ा, क्लेश

.... – ....

याचक – भिखारी, माँगनेवाला

.... – ....

यातना – अतिकष्ट, पीड़ा

.... – ....

युक्ति – उपाय

योगाभ्यासी – योग का अभ्यास करनेवाला

.... – ....

न्यारा – अलग, भिन्न

यम, योग्य, यंत्र, यान, याचना

र

.... – ....

.... – ....

रकम – धन, पैसा

रघुवंश – महाकवि कालिदास द्वारा रचित महाकाव्य, महाराज रघु की कथा

रफ्तार – गति

रसाल – आम

.... – ....

राजति – शोभायमान होते हैं

राष्ट्रीयता – राष्ट्र प्रेम की भावना

.... – ....

.... – ....

रिसाई – नाराज होना

रुँआँसी – रोने जैसे

राष्ट्र, रिक्त, राह, रंज, रंक

ल

लकुटि	–	लाठी, छड़ी
लखो	–	देखो
....	–	....
लामा	–	तिब्बत के बौद्ध भिक्षु, तिब्बती साधु
....	–	....
....	–	....
लिबास	–	वेश–भूषा
....	–	....
लेक	–	दर्रा
लैहों	–	लूँगी, पाऊँगी
....	–	....
....	–	....

लिखित, लीन, लोक, लवण, लायक, लोचन

व

वंदन	–	वंदना, वंदनवार
....	–	....
वाष्प इंजन	–	भाप से चलने वाला इंजन
विकल	–	व्याकुल
विकल्प	–	इसके बदले में
विख्यात	–	प्रसिद्ध, जाहिर
....	–	....
....	–	....
विद्यमान	–	उपस्थित, मोजूद
विधि	–	प्रकार, तरीके
....	–	....
विराटता	–	विशालता
विवश	–	लाचार, मजबूर
विस्मित	–	आश्चर्यचकित
विशेषज्ञ	–	विषय का जानकार
वैकल्पिक	–	इसके बदले में
वैदिक युग	–	जिस युग में वेदों की रचना की गई
वैजंतीमाल	–	एक प्रकार की माला जिसमें पाँच रंगो के फूल होते हैं। विजय माला
....	–	....
व्यर्थ	–	बेकार, फालतू
व्यस्त	–	किसी काम में लगा हुआ
व्यापक	–	जो सब जगह हैं
व्याप्त	–	फैली हुई, फैला हुआ, समाया हुआ

व्यंग्य, वियोग, विजयनाद, वाष्प, विगत

श

....	–	....
शंख	–	माप की इकाई, गणना की इकाई, एक समुद्री जीव का शरीर, जिसके मर जाने पर उसे पूजा आदि कार्य में बजाने के काम में लेते हैं
....	–	....
शतरंज	–	एक प्रकार का खेल
....	–	....
शरीरान्त	–	शरीर का अंत, मृत्यु, देहावसान
शारीरिक	–	शरीर संबंधी
....	–	....
शोभा	–	सौंदर्य
....	–	....
शौकीन	–	शौक करने वाला, किसी भी काम में अधिक रुचि रखने वाला।
श्मशान	–	मुर्दा जलाने का स्थान
....	–	....
श्रृंगार	–	साज, सज्जा
....	–	....
श्रेष्ठ	–	अच्छा

शौक, शैल, शंका, शत, शपथ, श्वेत, श्रेय,श्रोत

स

सँकरी	–	तंग, पतली
संकल्प	–	प्रण, प्रतिज्ञा
संकेत	–	इशारा
संग्रहीत	–	एकत्र की गई
संग्राम	–	युद्ध
....	–	....
संचालन	–	कार्यक्रम की प्रस्तुति

संजोग – सुअवसर
संसर्ग – साथ
संयंत्र – कारखाना
सकल – पूरा, सम्पूर्ण
सखी – सहेली
सचेत करना – चेतावनी देना
सतत् – हमेशा, लगातार
सत्कार – स्वागत
.... – ....
सदी – सौ वर्ष का समय
सदृश – के समान, उसके जैसे
सन्नाटा – खामोशी
सफर – यात्रा
समग्र – पूर्ण, पूरी
समर्पित – अर्पित करना, न्यौछावर करना
समाधि – शव को मिट्टी में गाड़ना
सम्मान – आदर
समुचित – सही तरीके से,
सरवर – तालाब, सरोवर
सर्वत्र – सब जगह
सर्वव्यापी – सब जगह रहनेवाला
सर्वाधिक – सबसे अधिक
सर्वोच्च – सबसे ऊँचा
सहचर – साथ चलनेवाला
सहभागिता – सहयोग, भागीदारी
सहमत होना – रजामंदी
सहृदयता – हृदय में दया करुणा का भाव
साँझ – सायंकाल
साँझ ढले – सूर्यास्त के बाद
सांत्वना – तसल्ली
.... – ....
साहब – स्वामी, प्रभु
साहस – हिम्मत
साहस छूट जाना – हिम्मत हारना
सिंह–पौर – सिंह की आकृतिवाला दरवाजा, महल का प्रवेश द्वार
सिर फुटव्वल – सिर फोड़ने जैसी भारी मारपीट
.... – ....
.... – ....
सुकुमार – कोमल
सुगीत – सुंदर गीत
.... – ....
सुर्रभ – सुगंधित वायु
सूक्ष्म – बहुत छोटा, कठिनाई से समझ में आने योग्य
सेहत – स्वास्थ्य
सैलानी – यात्री, घुमक्कड़, सैर करनेवाले
सौंदर्य – सुंदरता
सौर–ऊर्जा – सूर्य से प्राप्त होनेवाली शक्ति
स्निग्ध – चिकनाई युक्त
स्वर्गवास – मृत्यु, देहांत, स्वर्ग में रहना
स्वच्छंद – स्वतंत्र
स्वाँग रचना – भिन्न–भिन्न प्रकार के रूप बनाकर अभिनय करना।
स्मरण – याद
स्मरणशक्ति – याददास्त, याद रखने की शक्ति
स्नेह – प्रेम
स्नेहभाजन – प्रेमपात्र, प्रेम के हकदार

सिरहाने, सिर्फ, संघर्ष, सुभट, सार्थक, सदा

ह

.... – ....
हमार – हमारा
हरगिज – कभी भी
हल्ला मचना – शोर–शराबा होना
हाड़ी – बटलोही के आकार का मिट्टी का बर्तन
हाँसी – हँसी, ठिठोली
हाथ फैलाना – भीख माँगना, याचना करना
.... – ....
ह्रास – कम होना
हित – भलाई
हिम – बर्फ
हिमवृष्टि – बर्फ की वर्षा
.... – ....
.... – ....
हृदयग्राहिणी – हृदय में रखने योग्य
.... – ....
होणी – भविष्य में जो होना है
.... – ....

हुंकार, हास, होड़, हड़कंप, हेतु